

|  |        |
|--|--------|
| बालबोध व्याकरण पुस्तक १ ( रा. रा. मि. जोशीकृत )      | ०—२—६  |
| " पुस्तक २   | ०—६—०  |
| प्रौढबोध व्याकरण                                     | १—८—०  |
| बालबोध मराठी व्याकरण                                 | ०—५—०  |
| * शिक्षणोपयोगी मानसशास्त्र                           | ०—२—६  |
| इंग्लिश कंप्यानियन ( मराठी व्याकरण )                 | ०—१२—० |
| * कांप्रेहेन्सिव्ह मराठी व्याकरण ( इंग्रजीत )        | १—१२—० |
| * पद्यसमुच्चय  | ०—६—०  |
| केकावली सुलभ   | ०—४—०  |
| अलंकारविवेक  | ०—६—०  |
| मराठी शब्दसिद्धि                                     | ०—८—०  |
| * व्याकरणावरील निबंध ( कै. चिपळूणकरकृत )             | ०—१२—० |
| * व्यवहारोपयोगी रसायनशास्त्र ( श्री. वा. मिरजकरकृत ) | ०—१२—० |
| <b>शालोपयोगी पुस्तकें ( डेपोचीं. )</b>               |        |
| * इन्फंट प्रायमर                                     | ०—२—६  |
| * बालबोध पहिलें पुस्तक                               | ०—२—६  |
| * बालबोध दुसरें "                                    | ०—३—६  |
| * " तिसरें "   | ०—३—६  |
| * " चौथें "  | ०—७—०  |
| * " पांचवें "  | ०—८—०  |
| * " सहावें "   | ०—१०—० |
| * " सातवें "   | ०—१४—० |
| * मार्सेडेनकृत हिंदुस्तानचा इतिहास                   | १—०—०  |
| * हिंदुस्तानचा रहिवासी                               | ०—१२—० |

|  |        |
|--|--------|
| * लांगमन कॉपी बूक ( नं. १ ते ४ प्रत्येकी किंमत )                               | ०—२    |
| लांगमन कित्याप्रमाणें ४ नंबरचीं आखलेलीं कोरीं बुकें<br>( प्रत्येकीं पानें १६ ) | ०—०—   |
| * तोंडचे हिशेब भा. १   | ०—१—   |
| * तोंडचे हिशेब भाग २   | ०—२—   |
| * युक्लिडकृत भूमिती पहिलें बूक   | ०—४—   |
| * महत्त्वमापन  | ०—४—   |
| * देशी जमाखर्चपद्धति   | ०—२—६  |
| दीक्षितकृत सृष्टचमत्कार  | ०—२—०  |
| * वृत्तदर्पण   | ०—२—०  |
| * व्युत्पत्तिप्रदीप  | ०—३—०  |
| * आरोग्यमार्ग  | ०—१—६  |
| * शेतकी वाचनपाठ भाग १  | ०—०—९  |
| * सदर भाग २  | ०—१—०  |
| * सदर भाग ३  | ०—१—६  |
| * नवनीत  | ०—१३—० |

लहान मुलांकरितां फारच उपयोगी  
पुस्तकें.

सुलभाक्षरज्ञान—मुलांना थोडक्यांत अक्षरओळख होण्याजोगें मनोरंजक साचित्र पुस्तक. ( सहा प्रतीस ट. ख. १११- ) किं. प्र. ०-०-६  
मुळाक्षरांचे चित्रयुक्त रंगीवेरंगी पत्ते:—या प्रत्येक पत्त्यावरील वस्तूंचीं वगैरे सुरेख चित्रें काढिलीं आहेत; त्यापासून मुलांस जोडाक्षरांसुद्धां सर्व अक्ष-

५१ १७०

|   |        |
|---|--------|
| रांची व आंकड्यांची माहिती सुलभ रीतीने व लौकर होईल. व पत्याप्रमाणें व्यवस्था केल्यामुळें खेळांत खेळ व शिक्षणांत शिक्षण अशी सोय केली आहे. प्रत्येक जोड सुंदर कागदी पेट्यांत घातला आहे. किं. | ०—४—०  |
| सचित्र अक्षरबोध   | ०—६—०  |
| सचित्र अक्षरलिपि  | ०—२—०  |
| कानडी सचित्र अक्षरलिपि  | ०—२—०  |
| हिंदुस्थानी सचित्र अक्षरलिपि  | ०—२—०  |
| सचित्र मुंबई इलाख्याचें वर्णन   | ०—१—०  |
| चिमुकल्या गोष्टी भाग १ ला   | ०—४—०  |
| वस्तुपाठमाला भाग १ ला (गोखलेकृत)  | ०—५—०  |
| वस्तुपाठमाला भाग २ रा "   | ०—८—०  |
| वस्तुपाठमाला भाग ३ रा "   | ०—८—०  |
| वस्तुपाठ कसे शिकवावे ( रा० भि० जोशीकृत )  | ०—४—०  |
| शालोपयोगी कवाईत पुस्तक १ ले.  | ०—१—०  |
| किंडरगार्टनचे देणग्यांसंबंधी सोपीं गाणीं  | ०—२—०  |
| शारदीय वाचनपाठमाला ( पंडिता रमाबाईकृत भाग १ )   | ०—१—६  |
| पशुपक्षिवर्णनांचीं रंगविरंगी चित्रयुक्त बुकें एकंदर १०  |        |
| ( १ आण्यांत १० पुस्तकें पोष्टांतून जातात ) प्रत्येकास किं०  | ०—१—०  |
| भातकुली ( लहान मुलींस फारच उपयोगी )   | ०—४—०  |
| शिक्षणसार ( ह० कृ० दामलेकृत )   | ०—२—०  |
| बालोद्यानशिक्षणमार्गदर्शिका ( २० देणग्यांची माहिती सांगितली आहे. ) बोरवणकरकृत   | ०—१०—० |

|   |                         |        |
|---|-------------------------|--------|
| तेरा देणग्यांचें स्पष्टीकरण                             |                         | ०—४—०  |
| एकभाषा ( हिंदुस्थानांत एक भाषा होईल किंवा नाही, झाल्यास |                         |        |
| कोणती, याविषयीं विचार. कै० शं० रा० हतवळणेकृत            |                         | ०—४—०  |
| —   |                         |        |
| वालशिक्षण भाग १   | रा. आपटे कृत )          | ०—६—०  |
| " भाग २   | "                       | ०—७—०  |
| पदार्थपाठमाला भाग १ ला.                                 | "                       | ०—८—०  |
| " भाग २ रा.   | "                       | ०—८—०  |
| ड्राईगर्चा कोरीं बुकें                                  | ( १२ पानांचे बुकास )    | ०—१—०  |
| इतर शालोपयोगी पुस्तकें.                                 |                         |        |
| मुंबई इलाख्याचें भूगोलपत्रक                             |                         | ०—०—९  |
| चित्रलेखन-मूलतत्त्व ( ड्राईंग शिकणारास फारच उपयोगी )    |                         | ०—२—६  |
| संस्कृत-इंग्लिश-व्याकरण ( कृष्णाजी गो० ओककृत )          |                         | १—२—०  |
| सांकेतिसाचें चरित्र ( कै. कृ. शा. चिपळूणकरकृत. )        |                         | ०—४—०  |
| वाङ्मयाविषय निबंध ( कै. वि. कृ. चिपळूणकरकृत )           |                         | ०—१२—० |
| हिंदुस्थानच्या इतिहासाचा सनसमूह                         |                         | ०—४—०  |
| वाक्यमीमांसा अथवा वाक्यांचें पृथक्करण (कै. आगरकरकृत)    |                         | ०—९—०  |
| रासेलस्र  | ( कै. कृ. चिपळूणकरकृत ) | ०—९—०  |
| बाचनपाठमाला भाग १                                       |                         | १—०—०  |
| " भाग २   |                         | १—०—०  |
| काव्यदोहन   | ( कृ. पां. लिमयेकृत. )  | १—४—०  |
| भारतीय युद्ध सचित्र ( एकंदर १२ चित्रें दिलीं आहेत. )    |                         | १—०—०  |
| मुक्तमाला काव्य   | ( मोरोपंतचें )          | ०—४—०  |
| अनेकविधा-मूलतत्त्वसंग्रह                                | ( कै. कृ. चिपळूणकरकृत ) | १—८—०  |

|   |                                |          |
|---|--------------------------------|----------|
| मेघदूत  | ( के. वी. फाटक वी. ए. कृत. )   | ०--१२--० |
| पद्यरत्नावली  | ( कृ. शा. चिपळूणकरकृत. )       | ०--८--०  |
| व्यायामशास्त्र  | ( रा. ज. गोखले वी. ए. कृत )    | ०--८--०  |
| डंबेल्स पुस्तक  | ( हात कसे करावे याची माहिती )  | ०--२--०  |
| मुलांचे शिक्षणाची अहवाल (शाळेंतील अभ्यासाचा रिपोर्ट ) |                                | ०--०--६  |
| षि इंग्लिश टीचर भाग २                                 |                                | १--४--०  |
| मोडी किते शेंकडा                                      | ( नंबर १ पासून ५ नंबर पर्यंत ) | १--४--०  |

### शालोपयोगी नकाशाचीं बुकें व सुटे नकाशे.

|   |  |          |
|---|--|----------|
| पूर्वगोलार्ध व पश्चिमगोलार्ध आशिया, युरोप,<br>आफ्रिका, मध्यप्रांत, हिंदुस्थान, युनायटेड स्टेट्स्,<br>साऊथ अमेरिका, नार्थ अमेरिका, इंग्लंड<br>व वेल्स, स्काटलंड, आयर्लंड ( या देशांचे नकाशे १०।।×१४<br>लांबीरुंदीचे असून विलायतीवरहुकूम रंगांत छापलेले आहेत. |  |          |
| प्रत्येकास ८१. १३ नकाशांचे बुकास. ८१३ )   |  | ०--१३--० |
| हिंदुस्थानचा ऐतिहासिक नकाशा ( रुळपट्टीसह )  |  | २--०--०  |
| हवेली तालुक्याचा नकाशा ( साधा ८२ ) रुळपट्टीचा )   |  | ०--६--०  |
| पुणे जिल्ह्याचा नकाशा ( साधा ८२ ) ( रुळपट्टीचा )  |  | ०--६--०  |
| पृथ्वीचा मोठा नकाशा ( ६०×३० रुळपट्टीचा व वार्निसासह )   |  | ४--०--०  |

### ऐतिहासिक पुस्तकें.

|  |   |         |
|--|---|---------|
| ऐतिहासिक गोष्टी ( कै. विष्णुशास्त्री चिपळूणकरकृत.            |   |         |
| " भाग १ ला.  | " | ०--२--६ |
| " भाग २ रा.  | " | ०--३--० |
| विजापूरवर्णन ( विजापुरांतील इमारतींचे देखाव्यासह ट. ह. सह. ) |   | १--२--० |
| लेखरत्नमाला ( महादर्जा शिंदे व नाना फडनवीस यांचीं पत्रें )   |   | ०--६--० |

|  |        |
|--|--------|
| ग्रांड डफच्या इतिहासावरील टीका. ( चिपळूणकरकृत. )         | ०—८--० |
| रायगड किल्ल्याचे वर्णन                                   | ०—८--० |
| इतिहासावरील निबंध ( एकंदर सर्व निबंधामध्ये अतिशय उत्तम ) | ०—८--० |
| शिवजन्मोत्सव.  | ०—४--० |
| मराठ्यांच्या इतिहासाची साधने. भाग ४ था.                  |        |
| ( वि. का. राजवाडे वी. ए. कृत )                           | १—०--० |
| ” ” ” ” भाग १० वा  | २—०--० |

### मनोरंजक पुस्तके.

|   |             |
|---|-------------|
| मरोपंताचा प्रभुद्रोह (अन्योक्तिपर कविता कृ. पां. लिमयेकृत)        | ०--२--०     |
| घासीराम कोतवाल  | १—०--०      |
| सद्वर्तन  | ०—४--०      |
| करमणूक ( यांत मनास आल्हाद देणाऱ्या लहान लहान गोष्टी आहेत. )       | ०—७--०      |
| विनोदमहदाख्यायिका ( निबंधमालेंतील )                               | ०—१२--०     |
| सुभाषित ( निबंधमालेंतील अति उत्तम वेंचे )                         | ०—१२--०     |
| रूपनगरची राजकन्या ( रा. ह. ना. आपटेकृत ऐतिहासिक सचित्र कादंबरी. ) | १—१२--०     |
| सात्र बाण कादंबरी ( पारखी शास्त्रीकृत )                           | १—८--०      |
| कांचनगडची मोहना नाटक—( रा. खाडिलकर वी. ए. कृत. )                  | ०—१२--०     |
| कीचक-वध   | ” ” ०—१२--० |
| बायकांचें बंड   | ” ” ०—१२--० |
| भाऊबंदकी  | ” ” ०—१२--० |
| सवाईमाधवराव यांचा मृत्यु  | ” ” ०—१२--० |

०१/१७०

## व्यायामशास्त्र या पुस्तकावर अभिप्राय.

व्यायामशास्त्राचें ज्ञान केव्हांही फार उपयोगाचें आहे. नवीन पिढीस तर तें अगदीं अवश्य आहे. रा. गोखले यांनीं नवीन लिहिलेलें व्यायामशास्त्रावरचें पुस्तक फार चांगलें उतरलें आहे. यांत त्या शास्त्राचा सर्वांगानें विचार केला आहे, व जरूर तितकीं सर्व शास्त्रीय माहिती सोप्या भाषेंत दिलेली आहे. ब्रह्मचर्याचा भाग सर्व तरुणांनीं अवश्य वाचून लक्षांत ठेवण्याजोगा आहे. व्यायामांच्या पद्धतीचें यांत चांगलें विवेचन केलेलें आहे. त्याजकडे लक्ष देऊन व्यायाम करणाऱ्या तरुणांनीं व्यायाम केला असतां थोड्या वेळांत चांगला फायदा होईल. व्यायाम, आहार व ब्रह्मचर्य हीं शरीरसामर्थ्याचीं तीन मुख्य अंगें आहेत; ह्या तिहींचा या पुस्तकांत चांगला विचार केला आहे. याकरितां हें पुस्तक चांगलें उपयोगी व अवश्य संग्राह्य झालेलें आहे.

मो. गो. देशमुख. एम. डी.

रा. रा. रामचंद्र जनार्दन गोखले, बी. ए. यांनीं लिहिलेलें 'व्यायामशास्त्र' नांवाचें पुस्तक माझ्या पाहण्यांत आलें आहे. हल्लींच्या काळांत व्यायामासारख्या महत्त्वाच्या विषयाची मीमांसा शास्त्रीय व व्यावहारिक दृष्टीनें होण्याची फार आवश्यकता होती. ती या पुस्तकानें बऱ्याच अंशीं कमी झाली आहे, असें म्हणण्यास हरकत नाही. सदरहू विषयाचें शास्त्रीयरीत्या विवेचन करण्यासाठीं जरूर लागणारी वैयशास्त्रांतलि माहिती रा. गोखले यांनीं, मोठ्या श्रमानें मिळवून तिची मांडणी फार सरळ व सोप्या रीतीनें केली आहे, हें त्यांस भूषणावह आहे. सदरहू पुस्तकांतिल तत्त्वांची माहिती असणें, हें सर्वासच फायदेशीर होणार आहे; परंतु त्यांतलें त्यांत या माहितीचा उपयोग तरुणपिढीस विशेष होणार आहे. आरोग्यरक्षणरूपी वित्ताचा संचय लक्षान वयांत जितका करावा, तितक्याचा फायदा प्रौढ व उतार वयांत मिळाल्याशिवाय राहणार नाही.

एकंदरीत रा. गोखले यांनीं लिहिलेलें पुस्तक सर्वास संग्रहणीय आहे, यांत शका नाही.

पुणें.

ता. ८ आगष्ट १९०९.

{ पं. वा. शिखरे.  
एल्. एम्. अँड एस्. असिस्टंट सर्जन.

# व्यायामशास्त्र

रा. रा. रामचंद्र जनार्दन गोखले यांनी केलेले " व्यायामशास्त्र " हे पुस्तक मी समग्र वाचून पाहिले. यांत व्यायामशास्त्रासंबंधी प्राचीन व अर्वाचीन ग्रंथांच्या आधारानें व सॅडो वगैरे तालीमबाज प्रोफेसरांच्या स्वानुभवाच्या आधारानें दिलेली व्यायामसंबंधी माहिती फार उपयुक्त आहे. व्यायामाला आवश्यक अशा आहार-विहारासंबंधानेंही यांत चांगली चर्चा केली असून भाषा व लेखनसरणीही चांगली आहे. एकंदरीत यांत मराठी वाचक-वर्गास बरीच उपयुक्त व महत्त्वाची माहिती मिळेल, यांत संशय नाही.

पुणे, २६/१०/०९

गणेश कृष्ण गर्दे,

रजिष्टर नंबर २४ अ  
१९०६/१०

Mens sana in corpore sano.  
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं ।

# व्यायामशास्त्र.

:\*:\*:

है

पुस्तक



३१०  
६६१७६

रामचंद्र जनार्दन गोखले बी. ए.

यांनी लिहिलें.

The possession of health should be a matter of hearty honest pride. I would have one hold ashamed of himself who has not a man's share of manly vitality. If Providence denies it, it must be patiently endured. If one has inherited feebleness, let him blush for his ancestors. If one lacks it through personal fault, he must confess him-self not only a guilty sinner, but guilty of a shameful sin.

On the Threshold of Life.

मुद्रक—म्यानेजर 'चित्रशाळा' प्रेस, पुणे.

हें पुस्तक सन १८६७ च्या २५ व्या आवृत्त्याप्रमाणें नोंदवून सर्व हक्क ग्रंथकर्त्यानें आपले स्वाधीन ठेविले आहेत.

किंमत आठ आणे.



## प्रस्तावना.

--:~:--

To-day victory is to the nation with intelligence & physique enough to keep that intelligence in healthy activity.

Is the stamina of the nation being not only maintained but strengthened? This is a question to which statesmen ought to be able to give at once a satisfactory answer.

Karl Pearson.

To be a nation of good animals is the first condition of national prosperity

Herbert Spencer.

The health of the people is the prosperity of the nation.

E. Miles.

Give a man a good, deep chest, and a stomach of which he never knew the existence, and he must succeed in any practical career.

Huxley.

Health is a thing to be attended to continually. You are to regard that as the highest of all temporal things for you.

Carlyle.

Health laughs where weakness weeps and delights in a heritage of work and endeavour. Yes, by all means let us get health if we can.

Emerson.

गेल्या दीड हजार वर्षांचा हिंदुस्तानचा इतिहास पाहिला, तर या राष्ट्राचा एकंदरीत न्हासच होत गेलेला दृष्टीस पडतो. निदान शारीरिक संपत्तीच्या बाबतीत हा न्हास स्पष्ट आहे. 'शतायुर्वैपुरुषः' ह्या श्रुत्युक्ती-

वरून दिसून येणारी प्राचीन आर्यांची दीर्घ आयुर्मर्यादा, आफ्रिका, जाव्हा इत्यादि दूरदूरच्या प्रदेशांशी व्यापार करण्याची व त्यांत वसाहती करण्याची प्राचीन हिंदूंची प्रवृत्ति, व त्यांचे एकंदर शारीरिक पराक्रम यांची, अर्वाचीन हिंदु लोकांची आयुर्मर्यादा, त्यांची प्रवासपराङ्मुखता, व त्यांचे शारीरिक पराक्रम यांशी तुलना केली असतां ही गोष्ट सहज दिसून येणारी आहे. शारीरिक संपत्तीच्या बाबतींत हें अंतर पडण्याची इतर कारणे काय असतील तीं असोत; पण परमार्थसाधनासाठीं ( सत्य अथवा भ्रांतिमूलक परमार्थासाठीं ) ऐहिक ऐश्वर्याची व अर्थात् शारीरिक संपत्तीची उपेक्षा, हें कारण त्यांमध्ये प्रमुख असावें असे वाटते. ऐहिक ऐश्वर्य, ऐहिक उपभोग व त्यांचे साधन जी शारीरिक संपत्ति यांपासून होणारे सुख शाश्वतिक नाही, व ह्या गोष्टी सोडून हरिनामसंकीर्तन, ईशचिंतन, ईशध्यान ह्या गोष्टी करण्यापासून अत्युच्च सुखाची प्राप्ति होते अशी जर सर्वसामान्य समजूत, तर शारीरिक पराक्रम व शारीरिक संपत्ति यांची उपेक्षा होणे स्वाभाविक नाही काय ? आतां ऐहिकैश्वर्यसंपादन व परमार्थसाधन यांमध्ये स्वाभाविक विरोध आहे कीं काय, हा प्रश्न उत्पन्न होतो; व या प्रश्नाचा निर्णय करण्यास आम्ही असमर्थ आहोंत, असें जरी आम्ही कबूल करतो, तरी आम्हांस असें म्हटल्यावांचून राहवत नाही कीं, आमच्या अल्पबुद्धीप्रमाणें, या दोहोंत विरोध आहे, असें आम्हांस वाटत नाही. निदानां, परमार्थसाधन व शारीरिक संपत्ति यांमध्ये जो विरोध कित्येकांस दिसतो, तो भ्रांतिमूलक आहे, व कांहीं परमार्थसाधनतत्पर लोक शारीरिक संपत्तीची जी उपेक्षा करतात, ती स्वहेतुविघातक आहे, असें आम्हांस निश्चितपणें वाटते. धर्मग्रंथांतील 'गीतेत्युच्चारसंयुक्तो म्रियमाणो गतिं लभेत । गीतार्थश्रवणासक्तो महापाप-

युतोऽपि वा । वैकुण्ठं समवाप्नोति विष्णुना सह मोदते ' ' गंगागंगेति यो  
 ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि । मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं च गच्छति '   
 यासारखी अर्थवादाची किंवा अतिशयोक्तीची वचने सोडून देऊन,  
 ' शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं ' ही कालिदासोक्ति, ' आयुर्धर्मार्थ-  
 साधनं ' ही वाग्भटोक्ति किंवा ' प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्मषः।  
 अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ' ही भगवद्गीतोक्ति,  
 ह्या लक्षांत घेतल्या, तर असे दिसून येईल की, परमार्थसाधनास  
 शारीरिक संपत्तीची अत्यंत आवश्यकता आहे. गीतावचनाप्रमाणे,  
 चित्तशुद्धीस सत्कर्म करावी लागतात, व सत्कर्म करण्याकरितां श्रम करावे  
 लागतात; एवढेच नव्हे, तर सत्कर्म करण्यास दुष्ट लोकांकडून जो  
 प्रतिबंध होतो, तो नाहीसा करण्यास संग्रामही करावा लागतो; आणि  
 श्रम, व संग्राम, शारीरिक संपत्तीवाचून होणे अशक्य आहे हे उघड आहे.  
 म्हणून मोक्षसाधनास अवश्य असणारी जी चित्तशुद्धि, तिचे साधन  
 जी सत्कर्म, ती करण्यास शारीरिक संपत्तीची आवश्यकता आहे.  
 शिवाय हे लक्षांत घेतले पाहिजे की, सत्कृतीस ज्ञानाचीही आवश्य-  
 कता आहे. ज्या ज्ञानाने मनुष्य सच्छील बनतो, ते ज्ञान जगाचा  
 प्रत्यक्ष अनुभव व ग्रंथाध्ययन या साधनांनी मिळवावयाचे असते; व ही  
 गोष्ट मानसिक श्रमावांचून होणे अशक्य आहे. आतां मानसिक श्रम कर-  
 ण्यासही शारीरिक संपत्तीची जर अनुकूलता लागते, तर ज्ञानप्राप्तीस शारी-  
 रिक संपत्तीची आवश्यकता आहे, असे स्पष्ट दिसते. यावरून सत्कर्म  
 करण्यास शारीरिक संपत्तीची आवश्यकता आहे, असे एकंदरीत दिसून  
 येईल. शरीरसंपत्तीहीन मनुष्याच्या हातून यात्रा होणार नाही, तप-  
 श्र्चरण होणार नाही, वेदशास्त्रांचे पारायण होणार नाही, परोपकाराची  
 म्हणजे लोकेत्सेवी कामे होणार नाहीत किंवा बलि, रात्रण इत्यादि-

कांसारख्या दुष्टांपासून लोकांचें संरक्षण होणार नाही. आतां, विशिष्ट परिमाणाचा पुण्यसंचय झाल्यावाचून मोक्षप्राप्ति होत नाही, अशी जर स्थिति आहे, तर शारीरिक संपत्तीच्या अभावामुळे ज्यांची आयुर्मर्यादा कमी झाली आहे, त्यांचेकडून प्रत्येक जन्मांत पुण्यसंचय थोडा झाल्याकारणाने, त्यांना पुष्कळ जन्म घ्यावे लागतील, हें उघड होत नाही काय ? सत्कर्मांना प्रतिबंध करणाऱ्या दुष्टांपासून आपलें रक्षण करण्याबद्दल प्राचीन ऋषींना आपल्या तपश्चर्येचा सहावा भाग राजास द्यावा लागत असे. यावरूनही पुण्यसंचयाचें रक्षण होण्यास शारीरिक संपत्तीची आवश्यकता आहे असें दिसून येत नाही काय ? तेव्हां एकंदरीत परमार्थ—साधनास शारीरिक संपत्ति आवश्यक आहे असें ठरते. अर्थात् परमार्थसाधन व शारीरिक संपत्ति यांत विरोध आहे, ही कल्पना अज्ञानमूलक आहे असें म्हणण्यास कांहींही हरकत नाही.

ह्या कारणास्तव, परमार्थसाधनासंबंधाच्या भ्रांतिमूलक कल्पनेनें शारीरिक संपत्तीची जी उपेक्षा हिंदूंनी केली आहे, ती खरोखरी अक्षम्य आहे असें म्हणावें लागते. आतां ऐहिकसुखप्राप्तीच्या दृष्टीनें पाहिलें तरीही ही गोष्ट शारीरिक संपत्तीवांचून केवळ दुर्लभ आहे; म्हणून शारीरिक संपत्तीची उपेक्षा करणें अगदी चुकीचें आहे. ऐहिक सुखप्राप्तीस अत्यंत आवश्यक अशा गोष्टी, पराक्रमशीलता, ज्ञान, उल्लसित मनोवृत्ति, शांतपणा, व रोगमुक्तता ह्या आहेत; व ह्या सर्व गोष्टींस प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रीतीनें शारीरिक संपत्ति कारण आहे. पराक्रमाचें एक साधन शारीरिक संपत्ति आहे ही गोष्ट तर स्पष्टच आहे. पराक्रमास दुसरी अवश्य गोष्ट प्रबल मनोवृत्ति ही आहे. महत्त्वाकांक्षा, साहसप्रियता इत्यादि प्रबल मनोवृत्तीवांचून हातून पराक्रम होणें शक्य नाही. अलेक्झँडर, सीझर, चेंगिजखान, नेपोलियन, इत्यादि पुरुषांनीं जगांत

जी एवढी चळवळ उडवून दिली, ती त्यांच्यातील प्रबल मनोवृत्तीमुळेच. कृतीस प्रोत्साहन मनोवृत्तीकडूच मिळते असा मानसशास्त्राचाही अबाधित सिद्धान्त आहे. The emotions are the master & the intellect is the servant. असे प्रख्यात तत्ववेत्ते हर्बर्ट स्पेन्सर यांचे मत आहे. असो; पराक्रमाचे मूळकारण ह्या ज्या मनोवृत्ति, त्यांचे प्राबल्य शारीरिक संपत्तिविरच अवलंबून असते. ही गोष्ट अनुभवावरूनही दिसून येणारी आहे. मनोवृत्ति ( वाईट अथवा चांगल्या ) केव्हां प्रबल असतात व केव्हां दुर्बल असतात, याचे अवलोकन केले, तर असे दिसून येते की, जेव्हां शरीर जोमांत असते, तेव्हांच ( अर्थात् तारुण्यांत ) मनोवृत्ति प्रबल असतात, व जसजसे शरीर बलहीन होत जाते तसतशा मनोवृत्तिही दुर्बल होत जातात. शिवाय असेही म्हणता येते की, जेव्हां शरीर जोमांत असते तेव्हां मनोवृत्ति प्रबल असतात; एवढेच नव्हे, तर तेव्हां त्या बहुधा उच्च प्रतीच्याही असतात. विद्येकरितां, व्यापारकरितां, किंवा एकादा नवीन उद्योगधंदा करण्याकरितां, दुसऱ्याच्या मदतीची फारशी अपेक्षा न धरतां, स्वतःच्या हिंमतीवर परमुलखीं जाणें, कोणतीही नवीन गोष्ट करण्याचें धाडस करणें, अपमान सहन न करणें, स्नेह्यांकरितां जिवावर उदार होणें, वगैरे श्रेष्ठ प्रतीच्या कृति तारुण्यांत जशा घडतात, तशा उतारवयांत घडत नाहीत. त्याचप्रमाणें आनंदीपणा, मनमिळाऊपणा, उदारपणा, साशंकवृत्तीचा अभाव, इत्यादि चांगल्या मनोवृत्तिही तारुण्यांतच विशेष दृष्टीस पडतात. The history of heroes is the history of youth. असें डिझाएलनेही म्हटले आहे व सर्व वीरांचीं चरित्रें, या गोष्टीची साक्ष देत आहेत. उलटपक्षां असेही आढळून येते की, धाडस करण्यास

मार्गे घेणे, अपमान सोसून स्वस्थ बसणे, विनाकारण चिंता करित बसणे, स्वार्थाकडे वाजवीपेक्षा जास्त लक्ष देणे, इतरांसंबंधाने फाजील शंकेखोरपणा धारण करणे इत्यादि दोष उतरत्या वयाबरोबर वाढत जातात. अशाच प्रकारचा फरक निरोगी व रोगी लोक यांमध्येही आढळून येतो. तथापि, उच्च भावना किंवा सद्‌वृत्ति शारीरिक संपत्तीच्या अनुषंगी असतात, ही गोष्ट वादग्रस्त म्हणून सोडून दिली, तरी जेव्हां शारीरिक संपत्ति चांगली असते, तेव्हां मनोवृत्ति प्रबल असतात ही गोष्ट जर निश्चित आहे, तर पराक्रमीपणास ज्या मनोवृत्तीची आवश्यकता आहे, त्या प्रबल राहण्यास शारीरिक संपत्ति अवश्य आहे हे उघड आहे. \*

\* मर्दानी खेळांविषयी आवड हे शारीरिक संपत्तीचे लक्षण मानिले, तर शारीरिक संपत्ति व किलेक इष्ट गुण यांमध्ये जो संबंध असल्याचे वर सांगितले आहे, तो संबंध केवळ आनुमानिक नसून त्यास प्रत्यक्ष अनुभवाचाही आधार आहे असे दिसून येईल. लंडन येथील युनिव्हर्सिटी कॉलेजांतील, गणित व यंत्रशास्त्र यांचे प्रोफेसर कार्ल पीयर्सन यांनी ५१६ हजार विद्यार्थ्यांचे अवलोकनावरून वरील गोष्ट सिद्ध केली आहे. ह्यासंबंधाने त्यांचे म्हणणे पुढीलप्रमाणे आहे:--

Association between qualities is measured scientifically by the so called coefficient of correlation, which is really a measure of the relationship between two qualities—it can take any value between zero & unity. When it is zero, we say the qualities have no relation to each other; when it is unity we consider the relationship perfect or causal. When it is positive the two qualities increase together; when it is negative, the one quality increases as the other decreases, & vice versa. Premising so much, let us inquire in what degree our school record shows the athletic character to be increasingly related to admittedly desirable characteristics. We find, that the relationship between the characters is expressed as follows:—

ज्ञानासही शारीरिक संपत्तीची आवश्यकता आहे. प्रयत्नामुळे ज्ञानाचा वृद्धि झाली आहे ही गोष्ट स्पष्ट आहे. व्यास, पाणिनी, शंकराचार्य, भास्कराचार्य, अरिस्टॉटल, गॅलिलियो, बेकन, डार्विन, स्पेन्सर यांना ते ते ग्रंथ लिहिण्यास किती अध्ययन, अवलोकन, मनन व शारीरिकश्रम करावे लागले असतील, याचा विचार केला म्हणजे ज्ञानवृद्धीस श्रमाची किती आवश्यकता आहे हे दिसून येईल.

उल्लसित मनोवृत्ति, शांतता व आरोग्य या गोष्टींचाही शारीरिक संपत्तीशी निकट संबंध आहे. निरोगी मनुष्याची चित्तवृत्ति उल्लसित असते व तो दुर्मुखलेला फारसा असत नाही, ही गोष्ट सर्वमान्य आहे. तसेच जगामध्ये दुष्ट लोकांची जी खटपट चालू असते, तिला आळा घालण्यास त्यांशी संग्राम करून त्यांना दाबून टाकणे आवश्यक असते; व ही गोष्ट शारीरिक संपत्तीवांचून होणे शक्य नाही. म्हणून ती साध्य करण्यासही शारीरिक संपत्तीची आवश्यकता आहे. त्याचप्रमाणे सौख्यासही आरोग्याची आवश्यकता आहे. आरोग्य नसेल तर किती दुःख होतें याचा अनुभव सर्वास आहेच. तेव्हां या सर्व गोष्टी लक्षांत घेतल्या असतां, ऐहिक सुखास शारीरिक संपत्तीची अत्यंत आवश्यकता आहे, हे कोणासही कबूल करावे लागेल.

[ मागील पृष्ठावरून पुढे चालू. ]

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| Athletics & good health   | '46 |
| Athletics & intelligence  | '21 |
| Athletics & quick temper. | '22 |
| Athletics & popularity.   | '33 |

Karl Pearson.

in the Prefatory Essay to the 32 nd Vol. of the Encyclopaedia Britannica.

ऐहिक सुखास शारीरिक संपत्तीची किती आवश्यकता आहे याचें प्रत्यक्ष उदाहरण पाहणें असल्यास तें आपल्या राज्यकर्त्यांचें आहे. इंग्लिश लोक जें ऐश्वर्य व सौख्य उपभोगात आहेत, तें त्यांना प्राप्त होण्यास त्यांचे कोणते गुण कारणीभूत झाले आहेत, याचा विचार केला, तर त्या गुणांमध्ये उत्कृष्ट शारीरिक संपत्ति हा गुण प्रमुख आहे असें आढळून येईल. इंग्लिश लोक जगाच्या वाटेला त्या भागांत राहण्यास, वाटेला ते श्रम करण्यास, आणि वाटेला तेव्हां संग्राम करण्यास तयार असतात, याचें एक कारण त्यांची अलौकिक शारीरिक संपत्ति हें आहे. शिवाय असेही आढळून येईल कीं, आजपर्यंत जे जे लोक राज्यकर्ते म्हणून जगात प्रसिद्ध होऊन गेले, ते ते सर्व शारीरिक संपत्तीविषयी प्रसिद्ध होते. उलट असेही दिसून येतें कीं, ज्यांच्यामध्ये शारीरिक संपत्ति कमी आहे, अशा लोकांनीं आजपर्यंत कोणतीही मर्दानापणाची गोष्ट केली नाही. हिंदु लोक बुद्धिमान् असूनही संपत्ति व सामर्थ्य या बाबतींत मागसेलले आहेत, याचें कारण त्यांच्यातील शारीरिक संपत्तीचा अभाव हें एक आहे. दर्यावर्दीपणा, लष्करी नोकरी, परदेशीं वसाहत करणें, खाणी, व कारखाने चालविणें, इत्यादि राकटपणाचीं कामें करण्यास इतर लोक जसे पुढें होतात, तसें हिंदुलोक होत नाहीत. याचें कारण काय हें पाहूं गेलें असतां, तें उत्साहशक्तीचा अभाव हेंच बहुधा दिसून येईल. आतां उत्साहशक्ति आरोग्याचा अनुषंगी गुण आहे; म्हणून आरोग्य अथवा शारीरिक संपत्ति ही गोष्ट सर्व दृष्टींनीं मनुष्यमात्रास फार महत्त्वाची आहे. याप्रमाणें ऐहिक सुख व पारमार्थिक सुख ह्या दोहोंच्या दृष्टींनींही शारीरिक संपत्तीची आवश्यकता आहे. म्हणून ह्या संपत्तीचा होत असलेला न्हास थांबविणें अत्यंत इष्ट आहे. यास्तव आत्मोन्नति करूं इच्छि-

णाच्या सर्व विचारी लोकांनीं हा न्हास थांबविण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. हा प्रयत्न म्हणजे लोकांमध्ये शारीरिक संपत्तीची आवड उत्पन्न करणे व ती प्राप्त करून घेण्याच्या साधनांची माहिती करून देणे हा होय.

शारीरिक संपत्ति प्राप्त करून घेण्याचे जे मार्ग आहेत, त्यांत व्यायाम हा प्रमुख मार्ग आहे. ही गोष्ट लोकांस माहित नाहीं असें नाहीं; परंतु अलीकडे लोकांमध्ये जी एक प्रकारची उदासीनता व शिथिलता आली आहे, तिच्यामुळे इतर महत्त्वाच्या गोष्टींप्रमाणे या गोष्टीसंबंधाचेही आपले कर्तव्यकर्म लोक विसरले आहेत. आतां, पूर्वीप्रमाणे, मुलगा योग्य वयांत आल्यावर त्यास त्याचे पालक तालमीत पाठवात नाहीतच, पण पूर्वी ब्राह्मणांच्या घरांमध्ये सूर्योपासनेच्या निमित्ताने नमस्कार घालण्याची जी चाल असे, तिचाही आतां बहुतेक लोपच झाला आहे. आपला धर्म व आपल्या इतर प्राचीन सामाजिक संस्था यांचे उत्कृष्टपणाची जे लोक प्रशंसा करतात, त्यांचीं मुलेंही सूर्योपासनेस पारखीं झालीं आहेत. ही स्थिति अत्यंत खेदकारक आहे. आमचा तात्त्विक धर्म व प्रत्यक्ष धर्माचरण, व तसेच आमची वाणी व कृति यांमध्ये जी विसंगतता दृष्टीस पडते व ज्या विसंगततेमुळे आम्ही तेजोहीन झालो आहोंत, त्या विसंगततेचेच एक लहानसे उदाहरण ही गोष्ट आहे. असो; अशी स्थिति आहे, म्हणून लोकांस एवढीच विनंति आहे कीं, प्रस्तुत पुस्तकांत व्यायामाचे देशी व विदेशी जे प्रकार सांगितले आहेत, त्यांपैकी कोणताही प्रकार आपणांस पसंत न पडल्यास, निदानीं, आपल्यांमधील नमस्काराची जी चाल आहे, ती तरी आपण चालू ठेवा व ब्रह्मचर्य, लष्करीपेशा, यांचा अभाव व दारू, नाटकें, इत्यादि चैनी यांनीं शारीरिक संपत्तीचा जो

म्हास सर्व बाजूंनी झपाट्याने चालला आहे, त्यास अंशतः प्रतिबंध करण्याचे श्रेय घ्या.

ज्याप्रमाणे एकाद्या गांवांतील दुकानांचे स्वरूपावरून तेथील व्यापाराचे स्वरूपाची कल्पना होते, त्याप्रमाणे असेही म्हणता येईल की, एकाद्या देशांतील वर्तमानपत्रांतील जाहिरातींवरून त्या देशांतील लोकांच्या गरजांची व त्यांच्या रुचीची कल्पना होते. आमच्या इकडील वर्तमानपत्रे पाहिलीं तर त्यांच्या जाहिरातींपैकीं निम्या जाहिराती औषधांच्या असतात, व औषधांच्या जाहिराती जी जागा अडवितात, तिचा निमा भाग संसर्गजन्य रोगांवरील औषधांच्या व कामोत्तेजक गुटिकांच्या जाहिरातींनीं अडविलेला असतो. बरे पुस्तकांच्या जाहिराती पहाव्या, तर त्यांमध्येही कादंबऱ्या व नाटके यांचीच गर्दी असते; परंतु ह्या एवढ्या जाहिरातींच्या बाजारांत शारीरिक संपत्ति वाढविण्याचें साधन क्वचितच दृष्टीस पडतें. गिझनीच्या महंमदानें हिंदुस्थानावर स्वारी केल्यापासून पारतंत्र्य व दारिद्र्य यांचा अनुभव (कमीजास्त मानानें) जें राष्ट्र घेत आहे, त्यांतील लोकांना वरील प्रकारच्या औषधांची किंवा नाटके व कादंबऱ्या यांची इतकी आवश्यकता वाटावी व व्यायामाच्या साधनांची, व्यायामशास्त्रावरील पुस्तकांची किंवा व्यायामशालांची आवश्यकता भासूं नये, ह्यापेक्षां जास्त खेदकारक गोष्ट ती कोणती? चहाकाफीचीं दुकानें व हेअर-कटिंग सलन्स यांची संख्या श्रेढीनें वाढत जात असतांना पूर्वींच्या व्यायामशाला बुडत जाव्या, व ज्या मराठी भाषेंत हल्लीं दरवर्षीं सुमारे २।३ शें ग्रंथ उत्पन्न होतात, त्या भाषेंत आजपर्यंत व्यायामशास्त्रावर एकही ग्रंथ होऊं नये, ही गोष्ट अत्यंत खेदकारक व लाजिरवाणी नाहीं काय? ही गोष्ट कशाचें द्योतक आहे? अर्थात् शारीरिक संपत्तीविषयींच्या

अनास्थेचें. आपल्या राष्ट्राच्या कल्याणाकरितां आपली सर्व संपत्ति राष्ट्रास अर्पण करणारा प्रसिद्ध देशभक्त न्होड्स यानें इंग्लिश विद्यार्थ्यांकरितां ज्या स्कॉलशिप ठेवल्या आहेत, त्या मिळविण्याकरितां लागणाऱ्या गुणांमध्ये ३ गुण विद्वत्तेस व २ गुण शारीरिक संपत्तीसाठीं ठेवले आहेत.\* ह्यावरून व इंग्लिश विद्यार्थी व सामान्यतः इंग्लिश लोक व्यायामाकडे किती लक्ष देतात ह्यावरून या विषयाचें महत्त्व किती आहे, हें सहज दिसून येणारें आहे. अशी स्थिति असतांना, या विषयाकडे लोकांचें दुर्लक्ष असावें, हा गोष्ट खरोखरी फार वाईट आहे. ज्या विद्यार्थ्यांवर हिंदुस्थानचा भावी उत्कर्ष अवलंबून आहे, त्यांच्यामध्ये निरोगी व धष्टपुष्ट मुलांचें प्रमाण काय असतें, आणि शाळा व कॉलेजें यांत शिकणाऱ्या मुलांमध्ये आठ्यापाठ्या, क्रिकेट इत्यादि खेळ खेळणाऱ्या किंवा तालीम करणाऱ्या मुलांचें प्रमाण किती अल्प असतें, ह्यावरून शारीरिक संपत्तीचा न्हास कसा होत चालला आहे, हें सर्वास माहीत आहेच. केवळ व्यवहाराच्या दृष्टीनें पाहतांही, पोट भरण्यासाठीं जी विद्या शिकावी लागते, तिच्या इतकीच, भावी

\*केवळ विद्वत्ता किंवा घोकंपट्टी पाहून स्कॉलशिप देण्याची पूर्वी पद्धति होती; परंतु ती पद्धति चुकीची होती, भसें विचारी लोकांस वाटूं लागलें आहे. विद्वत्तेइतक्याच—किंबहुना जास्त—महत्त्वाच्या गोष्टी, शील व शारीरिक संपत्ति ह्या आहेत. म्हणून विद्यार्थ्यांची योग्यता ठरवितांना ह्या गोष्टी लक्षांत घेणें अवश्य आहे. ही गोष्ट लक्षांत घेऊनच सेसिल न्होड्स ह्या देशभक्तानें स्कॉलशिप मिळव्याला लागणारे गुण ठरविले आहेत. हे गुण, व एकंदर १० पैकीं त्यांस ठेवलेले मार्क पुढील प्रमाणें आहेत:—केवळ विद्वत्ता ३ मार्क, शील ३ मार्क, मानसिक धैर्य, लोकाप्रणीत्व..... वगैरे गुण २ मार्क, व शारीरिक संपत्ति २ मार्क.

ह्यावरून केवळ पुस्तकी विद्वत्ता किंवा घोकंपट्टीचें कौशल्य पाहून तेवढ्याच गुणावर स्कॉलशिप देण्याची आपल्या इकडे जी वहिवाट आहे, ती कितपत बरोबर आहे, याचा लोकांनीं विचार करावा.

सुखास व उत्कर्षास, शारीरिक संपत्तीची आवश्यकता आहे; म्हणजे २०० रुपये पगार मिळवून ४० व्या वर्षी मरण्यापेक्षां १०० रुपये महिना मिळवून ६० वर्षेपर्यंत जगणे जास्त फायद्याचें आहे. ही गोष्ट, कोणाही विचारी मनुष्यास समजण्यासारखी आहे. अशी स्थिति असतांना, विद्येकरितां जो पैसा व काल लोक खर्च करतात त्याचा चवथा राहूंद्या, पण आठवा हिस्साही शारीरिक संपत्तीचे प्राप्तीसाठी खर्च करीत नाहीत. फार काय; पण शर्ट, जाकिटें, नाटकें, चहा, विड्या यांकरितां जितका पैसा लोक खुषीनें खर्च करतात, तितकाही त्यांच्या हातून शारीरिक संपत्ति सुधारण्याच्या कामीं खर्च होत नाही. अशा प्रकारचें जें अज्ञान व जी मोहनिद्रा लोकांमध्ये दृष्टीस पडते, तीं घालविण्याचा प्रयत्न करणे अत्यंत आवश्यक आहे, हें उघड आहे. अशा प्रकारच्या प्रयत्नास मदत करावी, अशा हेतूनें प्रस्तुत पुस्तक लिहिलें आहे. ह्या पुस्तकांत सांगितलेलें व्यायामाचें महत्त्व व तो घेण्याची योग्य तऱ्हा, तसेंच ब्रह्मचर्य आणि योग्य आहार यांची आवश्यकता, या गोष्टींकडे लोकांचें लक्ष जाऊन व्यायामाचा प्रसार लोकांत जास्त झाल्यास, हें पुस्तक लिहिण्याच्या श्रमाची सार्थकता झाल्यावद्दल ग्रंथकर्त्यास परमानंद वाटे.

कृतीवांचून नसतें ज्ञान व्यर्थ आहे. दुष्काळपीडित लोकांकरितां जगांतील सर्व लोक हळहळले, परंतु त्यांपैकीं एकांनेंही दुष्काळग्रस्तांस मदत केली नाही, तर त्यांची हळहळ व्यर्थ आहे, हें आपण तेव्हांच कबूल करतो. असेंच या विषयासंबंधानेंही आहे. शारीरिक संपत्तीचें महत्त्व आपण कबूल केलें व ती संपादन करण्याचे उपायाचीही माहिती करून घेतली; पण ती संपादण्याचा प्रयत्न केला नाही तर हा सर्व खटाटोप व्यर्थ आहे. म्हणून प्रस्तुत पुस्तक वाचना.

ज्यांनी पुढील गोष्टी अवश्य कराव्या. त्या त्यांनी केल्या नाहींत, तर त्यांनी हे पुस्तक व्यर्थ वाचलें, असें ग्रंथकर्त्यास वाटे.

१ स्वतां रोज, किंवा निदानीं आठवड्यांतून एकदां. (रविवारी) कसल्या तरी प्रकारचा व्यायाम घ्यावा. ज्यांना कृत्रिम व्यायामाचा कंटाळा वाटत असेल, त्यांनीं गांवाशेजारील एखाद्या टेकडीवर फिरावयास जावें. ज्यांना फिरण्याचा कंटाळा असेल, त्यांनीं आपल्या परसांत कुदळीनें जमीन खणण्याचा परिपाठ चालू ठेवावा. वांकून जमीन खणणें ह्या व्यायामांत हा एक विशेष गुण आहे कीं, त्याच्या योगानें पोटाचे स्नायूंंस चांगल्या प्रकारचा व्यायाम मिळतो. हे खणण्याचें काम एकाद्या शेतांत केलें, तर व्यायामचा व्यायाम होऊन, शिवाय पिकासही चांगला फायदा होईल.

२ प्राणायामाचें महत्त्व जाणून त्याचा अभ्यास सार्वत्रिक करावा. युरोपियन सैन्यांतील शिपायासही प्राणायाम हा व्यायाम जर आवश्यक केला आहे, तर इकडील शाळांतील ज्या मुलांकडून कवाईत करविली जाते, त्यांचेकडून तो कां करवूं नये? प्राणायामाचा व्यायाम सुरू केल्यानंतर छातीच्या घेरामध्यें चांगला फरक पडतो, ही गोष्ट अनुभवानें सिद्ध झालेली आहे. यास्तव, प्राणायामाचा व्यायाम शाळांतून अवश्य चालू करावा, अशी सर्व शाळांच्या चालकांस विनंति आहे.

३ ज्या खेळांपासून शारीरिक श्रम होतात, असे खेळ खेळण्यास लहान मुलांना शक्य तेवढें उत्तेजन द्यावें.

४ गांवांतील तालमीचें पुनरुज्जीवन करून त्यांमध्ये जाण्यास योग्य वयाच्या मुलांना उत्तेजन द्यावें.

५ वर्षांतून निदानीं एकदां तरी कुस्त्या व खेळ यांचे सामने करून शारीरिक सामर्थ्य अथवा कौशल्य दाखविणाऱ्यांस बक्षिसें द्यावीं.

व्यायामशास्त्रासारख्या विषयावर लिहिण्याचा अधिकार प्रस्तुत ग्रंथकर्त्याचा नाही, हें तो जाणून आहे. परंतु ज्यांचा तसा अधिकार आहे, त्यांनीं अशा प्रकारचा ग्रंथ न लिहिल्यामुळे, ही उणीव तशीच राहूं देण्यापेक्षां, आपणांस लिहितां येईल तसा ग्रंथ लिहावा, म्हणजे कदाचित् तज्ज्ञांचें लक्ष प्रस्तुत विषयाकडे जाऊन त्यांचे हातून यापेक्षां जास्त चांगला ग्रंथ निर्माण होईल, असा विचार करून प्रस्तुत पुस्तक लोकांपुढें ठेविलें आहे. तरी यामध्ये जीं कांहीं व्यंगें असतील, त्यांचेकडे कानाडोळा करावा अशी विद्वानांना विनंति आहे.

प्रस्तुत पुस्तकाची हस्तलिखित प्रत विद्वद्भर्य डा० देशमुख व डा० छत्रे यांना दाखविली होती; व पुस्तक छापून निघत असतां त्यांतील कांहीं भाग असिस्टंट सर्जन डॉ० शिखरे, डॉ० छत्रे, डॉ० भागवत, डॉ० सहस्रबुद्धे, वे० बाळशास्त्री लागवणकर, रा० गणपत-राव वझे या सदगृहस्थांना दाखविला होता. त्यांनीं आपला वेळ खर्चून पुष्कळ उपयुक्त सूचना केल्या. त्यांबद्दल मी या गृहस्थांचा फार फार आभारी आहे. ह्या रीतीनें प्रस्तुत पुस्तकांत दोष राहूं नयेत म्हणून मी आपल्याकडून पुष्कळ प्रयत्न केले आहेत, तरीही पुस्तकाचा सर्व भाग वरील सर्व गृहस्थांचे अवलोकनांत न आल्यामुळे किंवा कांहीं अन्य कारणानें पुस्तकामध्ये कांहीं दोष राहण्याचा संभव आहे. ह्यास्तव हें कळविणें अवश्य आहे कीं, ह्या दोषांबद्दलची जबाबदारी सर्वस्वीं मजवर आहे.

प्रस्तुत ग्रंथ लोकोपयोगी व्हावा म्हणून लिहिला आहे. ह्यास्तव त्यामध्ये जे दोष दिसतील, ते वाचकांनीं जरूर कळवावे. ह्या ग्रंथाची

दुसरी आवृत्ति काढण्याचा सुप्रसंग आल्यास, दोषांची दुरुस्ती अवश्य केली जाईल.

प्रस्तुत पुस्तक लिहिण्याचे कामी मुख्यतः पुढील ग्रंथांचा † उपयोग झाला आहे, ह्यास्तव त्या ग्रंथांच्या कर्त्यांचे आम्ही फार आभारी आहो.

Cassell's Complete Physical Educator, by E. Miles.

Breathing. by E. Miles.

Exercise for Health, by Hulbert and Phelan.

My system, by Muller.

Milo's strength for all.

Strength & how to obtain it, by E. Sandow.

Body Building by E. Sandow.

The Science & Art of Physical Development by Pope.

Ideal Physical Culture by Apollo.

The Theory and art of Physical Exercise, by Chesterton.

तसेंच, या पुस्तकांत स्नायूंचा निर्देश करण्याकरितां जे संस्कृत शब्द योजिले आहेत, ते डा० गर्दे यांच्या परिश्रमांमुळे मिळाले

† वरील पुस्तकांची यादी पाहून तीं वाचण्याविषयींची उत्सुकता कांहीं वाचकांना होईल व ते तीं पुस्तकें विकत घेतील; म्हणून पुढील माहिती देणें इष्ट वाटतें. वरील पुस्तकांपैकीं शास्त्रीय माहितीचे दृष्टीनें विशेष उपयुक्त अशीं पुस्तकें वरील यादीतील पहिलीं ३-४ होत. बाकींच्या पुस्तकांत शास्त्रीय माहिती फार थोडी आहे. ह्या पुस्तकांचा बराच भाग ग्रंथकर्त्यानें स्वतांसंबंधानें दिलेल्या माहितीनें भरलेला आहे. म्हणून शास्त्रीय माहिती ज्यांना पाहिजे असेल, त्यांनीं पहिल्या तीन चार पुस्तकांवांचून इतर पुस्तकें घेण्याचे मानगडींत पडूं नये.

आहेत. तरी त्याबद्दल व आणखी काहीं उपयुक्त सूचनांबद्दल  
सदरहू विद्वान् डॉक्टरांचे आम्ही फार आभारी आहोंत.

शेवटीं हें पुस्तक ज्या हेतूनें लिहिलें आहे, तो हेतु साध्य  
होण्याचें कामीं त्याचा अंशतः तरी उपयोग होवो, अशी आशा  
प्रदर्शित करून ही प्रस्तावना पुरी करितों.

ग्रंथकर्ता.

आरोग्य, व्यायाम इत्यादिकांचे महत्त्वाविषयीं निरनिराळ्या विद्वानांचे विचारः—

Progressive accumulation & Concentration of human energy is to be sought for in the transference of vital force from muscle to brain; from the manifestation of physical to that of mental & moral qualities; always considering that physical frame must be always kept in such a condition as will supply the brain with the energy necessary to free those mental & moral forces; for without energy of a physical origin, it is impossible for them to be manifested at all.

A. H. Memford.

Without a high standard of health, duties become difficult or impossible to perform & our whole efficiency is lessened.

A vigorous old age is able to accomplish more than several careers, however brilliant cut short in youth.

Morison.

Every student ought to make a sacred resolution to move about in the open air at least two hours every day.

Sitting is a slovenly habit and ought not to be indulged.

Blackie.

As soon as the Englishman's love for sport disappears; then good-bye to England's greatness.

Hulbert.

Man is an intelligence sustained and preserved by bodily organs and their active employment is necessary to the enjoyment of health,

Smiles.

The nation that has trained itself to a career of unwarlike and isolated ease is bound to go down before other nations which have not lost the manly and adventurous qualities.

President Roosevelt.

A part of mental action is also physical action. Will is also a matter of nerves, energy is graduated by blood, and the finest thought stands with one foot upon tissue of brain.

On the Threshold of Life.

The ill-fed Hindu goes down before the Englishman fed on more nutritious food.

Herbert Spencer.

Children need sunshine, pure air, good digestion, large lung capacity, nutritive food & a good circulation. They need these things far more than anything else in the world.

Perfect health casts out fear & care.

One day of perfect health must convince a man of the bliss of earthly existence.

E. Miles.

She who can succeed in teaching the women of India the truth as regards outdoor exercise will be one of the greatest benefactors of the race not only for the present age but for all future time.

Every nation that has fallen a prey to conquerors has been a sitting down nation.

Sanitary Science.

Health is the working man's capital.

Apollo

All professional biography teaches that to win lasting distinction in sedentary, in-door occupations, which task the the brain and the nervous system, extraordinary toughness of body must accompany extraordinary mental powers.

Eliot, President of the Harvard College

Man's ethical and spiritual life must be sought to be built upon his physical life and functions.

The development of the muscles and the limbs, the right cultivation of the senses and the appetites, which involves both exercise and abstinence, in due proportion,—these therefore, necessarily constitute the very basis of the ethical, the emotional, and, through these, of the true spiritual life.

The ideal end of the physical life is health and longevity, and physical culture must be directed towards this end. And as to that of national life, as health and longevity of individual, namely valuable assets to individuals and nations alike, physical culture must necessarily occupy a most prominent place in every scheme of national regeneration.

## अनुक्रमणिका.

—०—

|   |      |      |      |     |
|---|------|------|------|-----|
| उपोद्घात  | .... | .... | .... | १   |
| भाग १. इंद्रियविज्ञानशास्त्र व शरीरशास्त्र यांचे संबंधाने<br>संक्षिप्त व स्नायूसंबंधाने विस्तृत माहिती. |      |      |      | ५   |
| भाग २. निरनिराळ्या व्यायामांत कोणत्या स्नायूस<br>व्यायाम होतो, याविषयीचे विवेचन.                        |      |      |      | २६  |
| भाग ३. व्यायामाची आवश्यकता.   | .... |      |      | ३०  |
| भाग ४. परिपूर्ण व्यायामपद्धति कोणती ?   | .... |      |      | ३९  |
| भाग ५. शास्त्रयुक्त व्यायामपद्धति.  | .... |      |      | ४३  |
| भाग ६. व्यायाम करणारांनी लक्षांत ठेवावयाच्या गोष्टी   |      |      |      | ४८  |
| भाग ७. व्यायामासंबंधाची कांहीं सामान्यतत्त्वे.  |      |      |      | ६८  |
| भाग ८. व्यायामपद्धतीच्या भिन्न प्रकारांचे मूळ स्वरूप  |      |      |      | ८२  |
| भाग ९. विकृतिनाशक व्यायाम   | .... |      |      | ८५  |
| भाग १०. विशिष्ट अवयव बळकट करण्याकरितां व्यायाम.   |      |      |      | ९४  |
| भाग ११. ब्रह्मचर्य.   | .... | .... | .... | १०० |
| भाग १२. अन्न.   | .... | .... | .... | १०८ |
| परिशिष्ट अ.   | .... | .... | .... | ११९ |
| परिशिष्ट ब.   | .... | .... | .... | १२३ |
| परिशिष्ट क.   | .... | .... | .... | १३१ |



## उपोद्धात.

—505—

व्यायाम-शास्त्राचें महत्त्व.

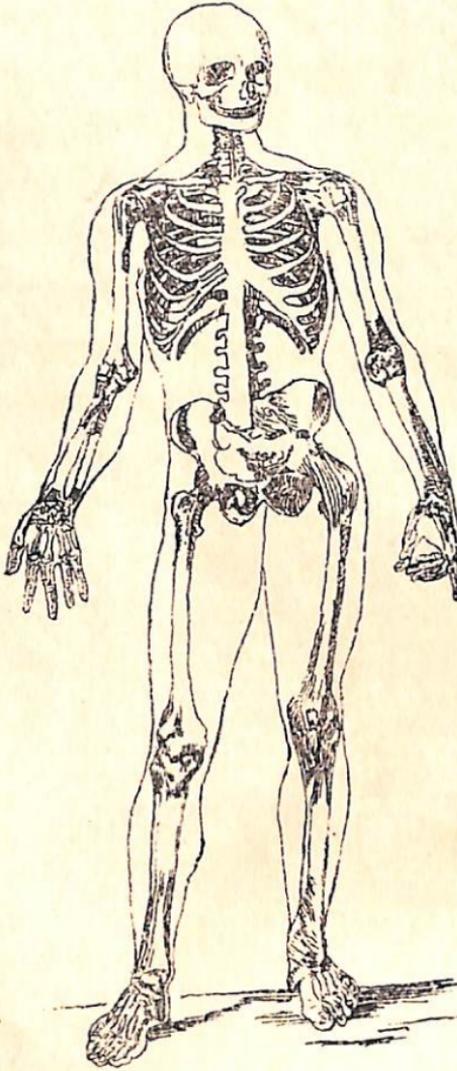
शारीरिक संपत्ति प्राप्त करून घेण्यास व्यायाम हा सर्वोत्कृष्ट उपाय आहे.—ज्याप्रमाणें ( १ ) कर्जवाजारी किंवा नादार असणें, ( २ ) कर्ज नसणें व संपत्तिही नसणें, व ( ३ ) कर्ज नसून संपत्ति मात्र पुष्कळ असणें हें मनुष्याच्या सांपत्तिक स्थितीचे तीन प्रकार आहेत, त्याप्रमाणें प्रत्येक गुणासंबंधानें व्यक्तीच्या तीन स्थिति आहेत. पहिली स्थिति, त्या गुणाच्या उलट प्रकारचा गुण आंगी असणें; दुसरी स्थिति, तो गुण अथवा त्याच्या उलट गुण हे दोन्हीही आंगी नसणें; व तिसरी स्थिति, तो गुण आंगी असणें. हीच गोष्ट शारीरिक संपत्तीला लागू आहे. म्हणजे शारीरिक संपत्तीसंबंधानें मनुष्याच्या तीन स्थिति असूं शकतात. पहिली स्थिति, शारीरिक संपत्ति आंगी नसून उलट शरीर विकारयुक्त असणें ही होय. दुसरी स्थिति, दृश्य विकार आंगी नसणें व शक्ति, उत्साह इत्यादि शारीरिक संपत्तीचे अनुषंगी गुणही आंगी विशेष नसणें ही आहे. तिसरी स्थिति, शरीर विकारयुक्त नसून उलट सतेज, उत्साही, बलवान व विकारास ( अथवा इतर आरोग्यशत्रूंस ) न जुमानणारें असें असणें ही आहे. आतां नेहमीं कर्जवाजारी असणाऱ्या लोकांना कर्ज नसणें हीच ज्याप्रमाणें उत्तम सांपत्तिक स्थिति वाटते, त्याप्रमाणें आपली स्थिति झाली आहे. म्हणजे, बहुतेक

माणसें कमी जास्त मानानें रोगग्रस्त असतात असें पाहून निरोगीपणा, म्हणजे रोगमुक्तता अथवा निरामयता ( म्हणजे दृश्य रोगापासून मुक्त असणें ) हीच उत्तम शारीरिक स्थिति अशी आपली समजूत झाली आहे. वास्तविकपणें पाहतां, रोगमुक्तता ही मध्यम स्थिति आहे; व ज्याप्रमाणें कर्जातून मुक्त होणें यापलीकडे संपत्तिमान् होणें ही अवस्था आहे, त्याप्रमाणें रोगमुक्ततेच्या पलीकडे शारीरिक संपत्ति ( अपूर्व उत्साह, अचाट शक्ति व रोगांशीं झगडण्याचें सामर्थ्य इ. ) आंगीं असणें ही स्थिति आहे. परंतु पूर्वी सांगितल्याप्रमाणें ही मनुष्याची स्वाभाविक श्रेष्ठ स्थिति लोक विसरले गेल्यामुळें रोगापासून मुक्त असणें एवढाच ' शारीरिक सुस्थिति ' या शब्दांचा अर्थ आहे, असें लोक समजू लागले आहेत. याच कारणामुळें शरिराच्या उत्तम स्थितीस आरोग्य, निरोगीपणा, निरामयता अशीं केवळ अभावघोतक नांवें देण्यांत आलीं आहेत, व ही अभावात्मक स्थिति प्राप्त करून देणारी साधनें जीं औषधें व त्यांचें शास्त्र यांस अद्वितीय महत्त्व आलें आहे परंतु, रोगनिर्मुक्ततेच्या पलीकडे एक स्थिति आहे, व ती प्राप्त करून घेणें आपले स्वाधीन आहे, एवढेंच नव्हे, तर तें आपलें पवित्र कर्तव्य आहे हें लोकांनीं लक्षांत ठेवले पाहिजे. ही गोष्ट लोक विसरले आहेत व या गोष्टीचें त्यांना महत्त्व विशेष वाटत नाही, या गोष्टीचें प्रमाण हेंच आहे कीं, वैद्यशास्त्राप्रमाणें शारीरिक संपत्तिकमविण्याचे शास्त्राचा लोक अभ्यास करीत नाहींत. कमविण्याचा प्रयत्नही विशेष करीत नाहींत. दवाखाने स्थापन लोक जितके पैसे खर्च करतात, तितके ते आरोग्यशास्त्र

स्थापन करण्यांत खर्च करीत नाहीत, यावरून या विषयासंबंधाने लोकांची काय कल्पना असावी हे स्पष्ट होत आहे. असो, पूर्वी सांगितल्याप्रमाणे केवळ आरोग्य किंवा रोगाभाव याचे पलीकडील एक श्रेष्ठ शारीरिक स्थिति आहे, व औषधे घेऊन विकारमुक्त होण्याची जी हल्ली आपण महत्वाकांक्षा धरतो, तिच्या ऐवजी वरील स्थिति प्राप्त करून घेण्याची महत्वाकांक्षा आपण धरिली पाहिजे. ही महत्वाकांक्षा साध्य करून घेण्याचा उपाय व्यायाम हा होय. शारीरिक संपत्ति प्राप्त करून देणाऱ्या सर्व उपायांत हा उपाय श्रेष्ठ होय. औषधे, उत्तम अन्न, उत्तम हवापाणी यांनी प्रकृतीतील विकार जातात. पण या पलीकडेचे गुण व्यायामावांचून उत्पन्न होणार नाहीत. म्हणून शारीरिक संपत्ति संपादन करू इच्छिणाऱ्यांनी व्यायामाकडेच विशेष लक्ष दिले पाहिजे.

---

आकृति १



हाडांचा सापळा.  
(शरीरांतील हाडे.)

# व्यायामशास्त्र.

## भाग १ ला,

व्यायामशास्त्राची माहिती समजण्यास शारीरशास्त्र व इंद्रिय-  
विज्ञान शास्त्र यांचे थोडे ज्ञान असणे अवश्य आहे; म्हणून त्यांसंबंधी  
अत्यावश्यक माहिती पुढे दिली आहे.

शरिराचे मुख्य घटक अवयव किंवा भाग.

हाडे, मज्जा, मज्जातंतु अथवा ज्ञानतंतु, नळ्या व पिंड, स्नायु,  
आणि त्या सर्वांवर त्वचेचे आच्छादन हीं मिळून शरीर बनले आहे.  
मस्तकांतील मेंदु व त्यापासून सर्व शरिरांत गेलेले तंतु हे मज्जा व  
मज्जातंतु या सदराखाली येतात. अन्न पचविणारी, व शरिरांतील  
मल वाहून नेणारी इंद्रिये व शरिरांत रक्ताचा पुरवठा करणाऱ्या  
रक्तवाहिन्या हीं नळीच्या आकाराचीं आहेत, म्हणून त्या  
सर्वांचा समावेश नळ्या या नांवांत होतो. शरिरास लाग-  
णारे भिन्न रस तयार करणारी इंद्रिये हीं पिंड होत.  
शरिरांतील हालचाल ज्या मांसाच्या दोऱ्यांचे आकुंचनाने  
होते ते स्नायु होत. ( ज्यास मांस म्हणतात ते स्नायूच होत.  
त्यांना कोणी मांसरज्जु, मांसाच्या दोऱ्या अथवा पेशीही म्हणतात. )  
हाडे व त्वचा ऊर्फ कातडी या संज्ञांचा अर्थ स्पष्ट आहेच.

शरिरांतील हाडे.

सामान ठेवण्याच्या पाकिटास ज्याप्रमाणे लोखंडी सांगाडा,  
किंवा घरास ज्याप्रमाणे खांब व तुळ्या, त्याप्रमाणे शरिरास हाडे  
होत. हाडांच्या योगाने शरिरास बळकटी आलेली आहे.

घस्तक व तोंड यांतील हाडें—पसरट व खोलगट अशीं आठ हाडें मिळून डोक्याची कवटी झाली आहे. हीं हाडें मिळून एक प्रकारची पेटाच झाली आहे. या पेटांत मेंदू असतो.

तोंडाचीं हाडें—हीं चवदा आहेत. तीं येणेंप्रमाणेंः—एक खालच्या जबड्याचें हाड, दोन वरच्या जबड्याचीं हाडें, दोन टाळ्याचीं हाडें, दोन गालाचीं हाडें, दोन नाकाच्या वरच्या भागाचीं, एक नाकाच्या खालच्या भागाचें, दोन नाकाच्या आंतील भागामधलीं [ नळीचे आकाराचीं ], आणि दोन, डोळ्यांतील पाणी नकांत आणून सोडणारीं, नळीच्या आकाराचीं हाडें.

घडांतील हाडें—पाठीचा कणा ३३ मणके मिळून झालेला आहे. उराच्या मध्यभागीं एक उभें व चपटें असलें हाड आहे. त्यास जत्रू म्हणतात. त्या हाडाचे दोन्ही बाजूस सात बरगड्यांचीं पुढील शेवटें चिकटलेलीं आहेत. प्रत्येक बाजूस १२ बरगड्या असतात. जत्रूचे वरचे टोंकापासून खांद्याकडे दोन लांब हाडें गेलीं आहेत. [ त्यांस गळपट्ट्याचीं हाडें\* हें नांव कोणी देतात ].

खांद्याचे भागें दोन खवाट्याचीं दोन हाडें आहेत.

कमरेचीं हाडें—पाठीच्या कण्याच्या ३३ मणक्यांपैकीं शेवटचे नऊ मणके व कटीराचीं २ हाडें मिळून कमरेचीं हाडें होत.

हाताचीं हाडें—दंडाचें एक, कोपरापासून मनगटापर्यंतचे हाताचीं दोन; मनगटाचीं आठ, तळहाताचीं पांच, आंगठ्याचीं

\* जत्रू हें नांव या हाडांना कांहीं मराठी पुस्तकांत दिलें आहे, परंतु तीं चूक असून मूळ संस्कृत ग्रंथांत हें नांव छातीचें हाडास दिलें आहे असें डॉ० गर्दे यांचें मत आहे.

दोन आणि इतर प्रत्येक बोटाचीं तीन याप्रमाणें चार बोटांचीं वारा; मिळून एकंदर तीस. दोन्ही हातांचीं मिळून साठ.

पायाचीं हाडें—मांडीचें एक; शुद्ध्याच्या वाटीचें एक; तंगडीचीं दोन; घोड्याजवळचे सांध्याचीं सात; तळपायाचीं पांच; व पांच बोटांचीं [ हाताचे बोटाप्रमाणेंच ] चवदा; मिळून एका पायाचीं तीस. दोन्ही पायांचीं मिळून साठ.

**मेंदू व मज्जातंतु अथवा ज्ञानतंतु.**

मस्तकाच्या कवटीच्या आंतील सर्व भाग मेंदूनें व्यापिला आहे. मेंदूचे मोठा मेंदू व लहान मेंदू असे दोन भाग आहेत. पैकीं मोठा मेंदु लहान मेंदूच्या आठपट मोठा असून त्यानें मस्तकाचा वरचा बहुतेक भाग व्यापला आहे. कवटीच्या मागील भागीं लहान मेंदू आहे. मेंदूपासून एक जाड फांटा निघून तो पाठीच्या कण्यामधील बोगद्यासारख्या पोकळ भागांतून कण्याच्या शेवटापर्यंत गेला आहे. मेंदू व हा फांटा यांस तंतु फुटून त्यांचे फांटे सर्व शरिरांत पसरले आहेत. यांस ज्ञानतंतु किंवा मज्जातंतु म्हणतात. या तंतूचे पुढील फांटे इतके वारीक व असंख्य आहेत कीं, शरिराच्या कोणत्याही भागावर सुईचें टोंक ठेविलें तर त्याच्या खालीं एखादा तरी ज्ञानतंतु सांपडल्याखेरीज राहणार नाहीं.

ज्ञान व विचार यांचें मुख्य इंद्रिय मेंदू होय. स्पर्शज्ञान ज्ञानतंतूनीं होतें. आपण जेव्हां हातपाय हालवितों, तेव्हां ते हालविण्याविषयींची आज्ञा त्या त्या अवयवास नेऊन पोहचविण्याचें कामही ज्ञानतंतु करितात.

ज्ञानतंतु शरिरांतील तारायंत्राप्रमाणें होत. शरिरांतील वातमी  
मेंदूस व मेंदूचा हुकूम शरिरास या तारायंत्राच्या योगानें समजतो.  
पचनेंद्रियें.

अन्न तोंडांत पडल्यानंतर तें मलरूपानें बाहेर पडेंपर्यंत ज्या  
नलिकेंतून जातें ती नळी, व ज्या इंद्रियांतील रसांचें अन्नावर  
कार्य घडतें, तीं इंद्रियें या सर्वांस पचनेंद्रियें हें नांव दिलें आहे.

शरिरामध्ये ज्या नळ्या आहेत, त्यांपैकी अन्ननलिका हीं  
सर्वांत मोठी नळी होय. तिची लांबी सुमारे १६ हात असते.  
अन्नाचें पचन करून त्याचा शेष निरुपयोगी भाग टाकून देण्याचें  
काम या नळीचें आहे. ह्या नळीचे मुख्य भाग पुढील प्रमाणें  
आहेत. अन्नमार्ग, कोठा, लहान आंतडें व मोठें आंतडें.

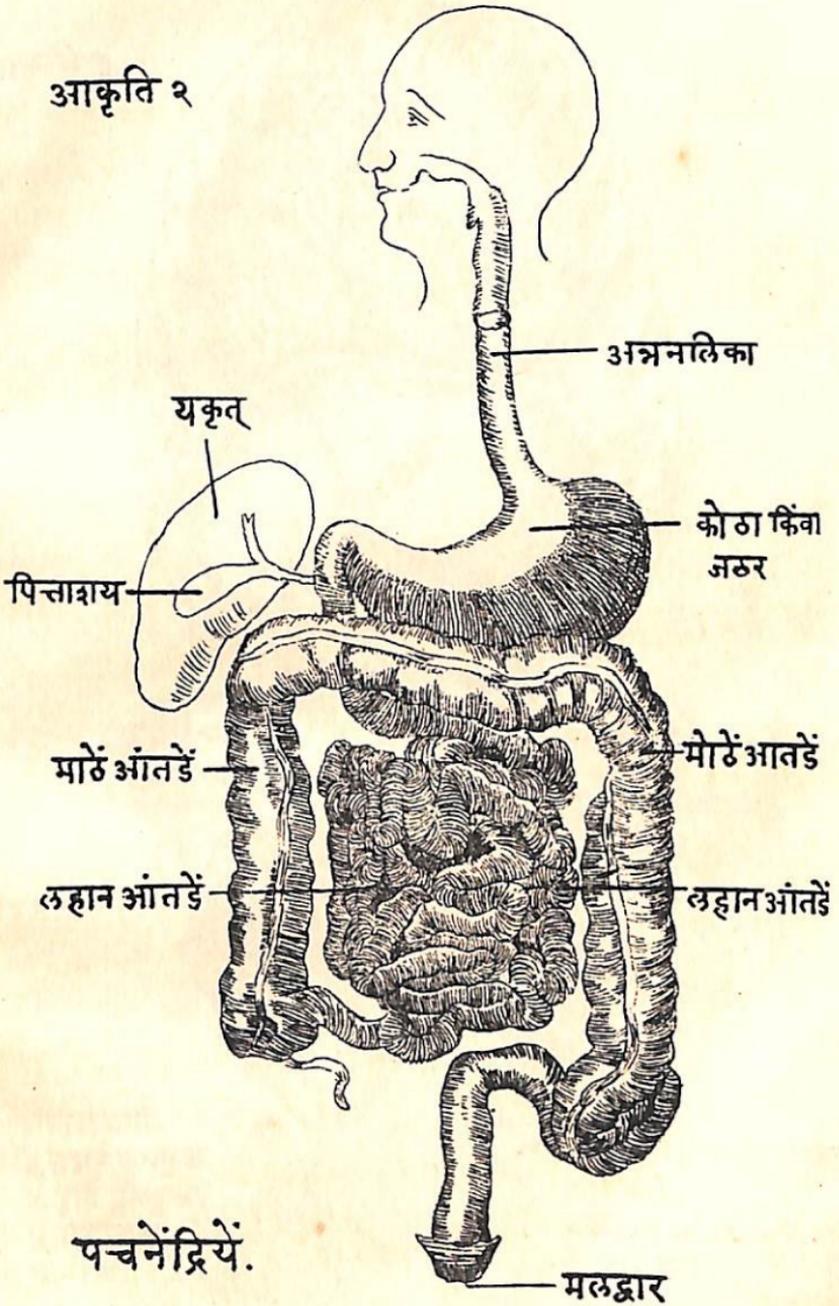
पचनेंद्रियांचे इतर भाग—तोंडांत लाला-पिंड आहेत.  
त्यांपासून लाल उत्पन्न होते. लाल अन्नांत मिसळल्यानें अन्न-  
पचनास मदत होते. कोठ्याजवळ यकृत व स्वादुपिंड म्हणून दोन  
इंद्रियें आहेत. तीं अनुक्रमें पित्त व स्वादुरस हे रस उत्पन्न  
करून अन्नांत आणून सोडतात. त्यांच्या योगानें अन्नपचनास  
मदत होते. हीं सर्व इंद्रियें पचनेंद्रियांचेच भाग होत.

अन्नाचे जे तीन मुख्य प्रकार आहेत, त्यांचे पचनाचीं  
स्थानें पुढें दिल्याप्रमाणें आहेत:—

मांसेत्पादक अन्नाचें पचन कोठ्यांत होतें.

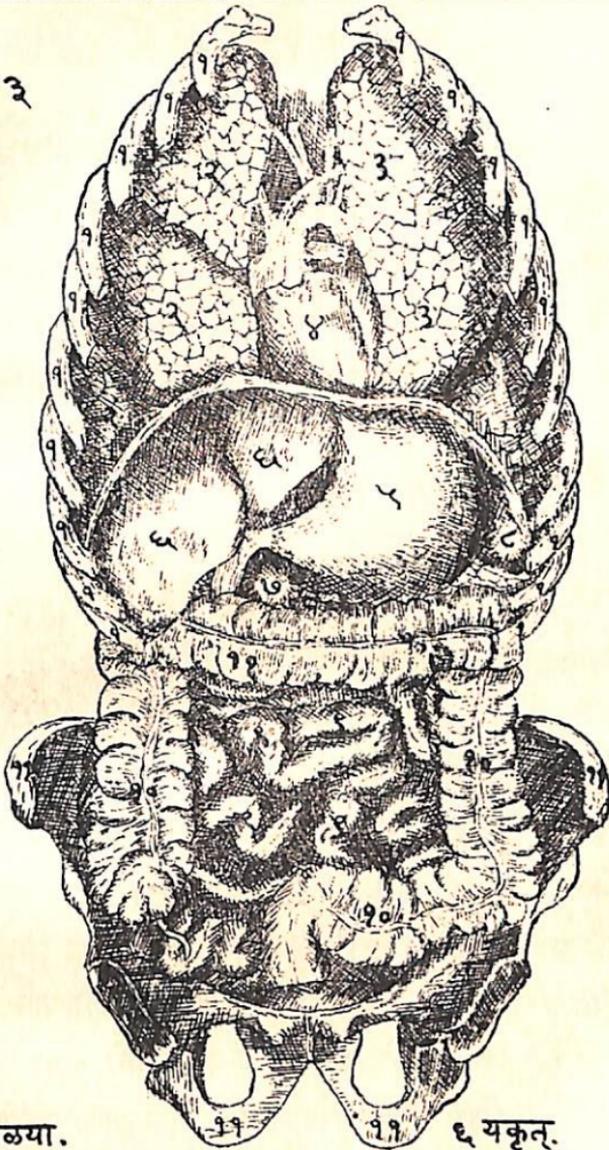
पिष्टमय (स्टार्ची) अन्नाचें अंशतः पचन तोंडांत व पूर्ण पचन  
आंतड्यांत होतें.

आकृति २





आकृति ३



१ फासळ्या.

२ उजवे फुफ्फुस.

३ डावे फुफ्फुस.

४ रक्ताशय.

५ कोठा.

११ करीर

६ यकृत.

७ स्वादुपिंड अथवा पॅन्क्रियस.

८ पांघरी.

९ लहान आंतडे.

१० मोठे आंतडे.

(बरील आकृतीन आंतील इंद्रियें दिसण्यासाठीं फासळ्यांचा पुढील भाग मुळीच दारवविला नाही.)



स्निग्ध अन्नांत यकृतांतील पित्त व स्वादुपिंडांतलि स्वादुरस हे मिसळले म्हणजे ते पचनास योग्य होतें. अन्न जठरांतून आंतड्यांत उतरण्याच्या सुमारास त्यांत यकृत् व स्वादुपिंड यांतील रस येऊन पडतात; म्हणून स्निग्ध अन्नाचें पचन आंतड्यांत होतें.

अन्न तोंडांत पडल्यापासून ते मलाचें रूपानें बाहेर पडेतोंपर्यंत ६-१२ तास लागतात.

अन्ननलिकेंतून अन्न जात असतां त्याची स्थिति पुढीलप्रमाणें हातः—

तोंडांत अन्नाचें चर्वण होऊन त्यांत लाळ मिसळते. पिष्टमय भागांत लाळ मिसळल्यानें तो पचनास योग्य होतो. अन्न कोठ्यांत गेल्यावर त्यांत कोठ्यांतून स्रवणारा जाठर-रस नांवाचा रस मिसळतो. तो मिसळल्यानें मांसोत्पादक भागाचें पचन होतें. पुढें अन्न आंतड्यांत उतरतांच त्यांत पित्त † व स्वादुपिंडरस § हे येऊन पडतात. या रसांच्या योगानें स्निग्ध द्रव्यांचें पचन होतें. याप्रमाणें क्रिया झाल्यावर, ज्या भागाचें पचन व्हावयाचें राहिलेलें असतें, तो भाग आंतड्यांतून जात असतां, त्यामध्ये आंतड्यांतून स्रवणारा रस ‡ मिसळतो व तेथें त्याचें पचन होतें. नंतर पचनास अयोग्य असा भाग मलरूपानें पडून जातो.

† मलशुद्धि साफ करविणे हाही पित्ताचा धर्म आहे.

§ स्वादुपिंड-रसामध्ये इतर प्रकारचीं अन्ने पचविण्याचीही शक्ति आहे.

‡ आंतड्यांतून स्रवणाऱ्या रसामध्ये तांन्हा प्रकारचीं अन्ने पचविण्याची शक्ति आहे.

जठर व आंतडीं यांमधून अन्न जात असतां, या इंद्रियांमध्ये ज्या सूक्ष्म नलिका (श्वेतरसवाहिन्या) असतात त्या अन्नांतिल पोषक रस शोषून घेतात.

### रक्ताभिसरणाचीं इंद्रियें.

रक्ताशय, फुफ्फुसें व शरिरांतिल सर्व रक्तवाहिन्या या सर्वास मिळून रक्ताभिसरणाचीं इंद्रियें म्हणतात.

काळीज, किंवा हृदय अथवा रक्ताशय हा रक्ताचा खजिना होय व फुफ्फुसें रक्तशुद्धीचें स्थान होय.

**रक्ताशय**—रक्ताशयाचीं दोन पुडे अथवा भाग आहेत. पैकीं डावें पुड शुद्ध रक्ताचा खजिना होय. या खजिन्यांत रक्त सांचून राहत नाहीं, तर तेथें तें आलें कीं, लागलीच पुढील मार्गास लागतें हें लक्षांत ठेवावें.

रक्ताशयाच्या दोन पुडांचा संकोच व विकास आळीपाळीनें एकसारखा चालूं असतो. छातीवर हात ठेवला असतां काळीजचें धडधडणें हातास लागतें, तें हेंच होय. रक्ताशयाचा एकदम विकास झाला असतां त्याचें शेवट छातीच्या आंतिल वाजूवर आपटतें; त्यायोगानें धड् धड् असा आवाज होतो.

निरोगी प्रौढ मनुष्याच्या रक्ताशयाचा संकोच-विकाप मिनिटांत ७० वेळां होतो. रक्ताशयाच्या डावे पुडाचा संकोच झाल्याबरोबर जो शुद्ध रक्ताचा प्रवाह निघतो, तो शिरांतून जात असतां शिरैस फुगवटी येऊन शीर उडल्यासारखी वाटते. नाडी ही एक शुद्ध रक्ताची शीर आहे, व रक्ताशयाचा संकोच जितक्या

वेळीं होतो तितक्या वेळां ही शीर फुगते व उडल्यासारखी हातास लागते. म्हणून नाडी पाहिल्यानं रक्ताशयाचा संकोच-विकास कसा चालला आहे हें समजेंत.

रक्ताशयापासून एक मोठी धमनी निघते. तीस फाटे फुटून ते सर्व शरिरांत पसरले आहेत. या सर्वांना रक्तवाहिन्या म्हणतात. या फाट्यांचे शेवटच्या रक्तवाहिन्या फारच सूक्ष्म-केसाहूनही वारीक-आहेत. या सूक्ष्म रक्तवाहिन्या जेथें नाहात असा शरिराचा कोणताही भाग नाही. या सर्व नलिकांतून रक्ताचा प्रवाह एकसारखा चालूं असतो.

शरिरांतील प्रत्येक हालचालीबरोबर शरिराचा कांहीं भाग झिजत असतो. झिजलेला भाग भरून काढणें व झीज झालेल्या ठिका-  
पचे निर्जिवि कण जाळून त्यांचा कार्बानिक असिड वायु वनाविणें हें काम रक्ताचें आहे. हें काम करीत रक्त सर्व शरिरांतून हिंडत असतें.

रक्ताशयातून रक्त निघाल्यावर, तें शरिराची झीज भरून काढण्याचें काम करीत करीत रक्तवाहिन्यांचे शेवटापर्यंत जातें. हीं शेवटें शरिराच्या सर्व भागांत आहेत. तेथून तें परत फिरतें त्यावेळां त्याचा रंग निळसर होतो. मग हें निळसर अशुद्ध रक्त दुसऱ्या नळ्यांनीं ( ज्यांस अशुद्धरक्तवाहिन्या म्हणतात त्यांनीं ) परत येऊन रक्ताशयाच्या उजव्या पुडांत जातें. तेथून तें फुफ्फुसांत जातें. तेथें रक्त शुद्ध होऊन रक्ताशयाच्या डाव्या पुडांत जातें व तेथून फिरून बाहेर पडून त्याचा पूर्वीप्रमाणें क्रम चालू होतो. शुद्धरक्तवाहिन्या व अशुद्धरक्तवाहिन्या यांच्या शेवटीं ज्या

सूक्ष्म नलिका असतात त्या एकमेकींस मिळून त्यांचें जाळें वनलेलें असतें; म्हणजे जेथें सूक्ष्म शुद्धरक्तवाहिन्या असतात तेथें त्यांना लागूनच व त्यांना जोडलेल्या सूक्ष्म अशुद्धरक्तवाहिन्या असतात. ह्या सूक्ष्म शुद्धरक्तवाहिन्या व अशुद्धरक्तवाहिन्या शरिराचे सर्व भागांत आहेत.

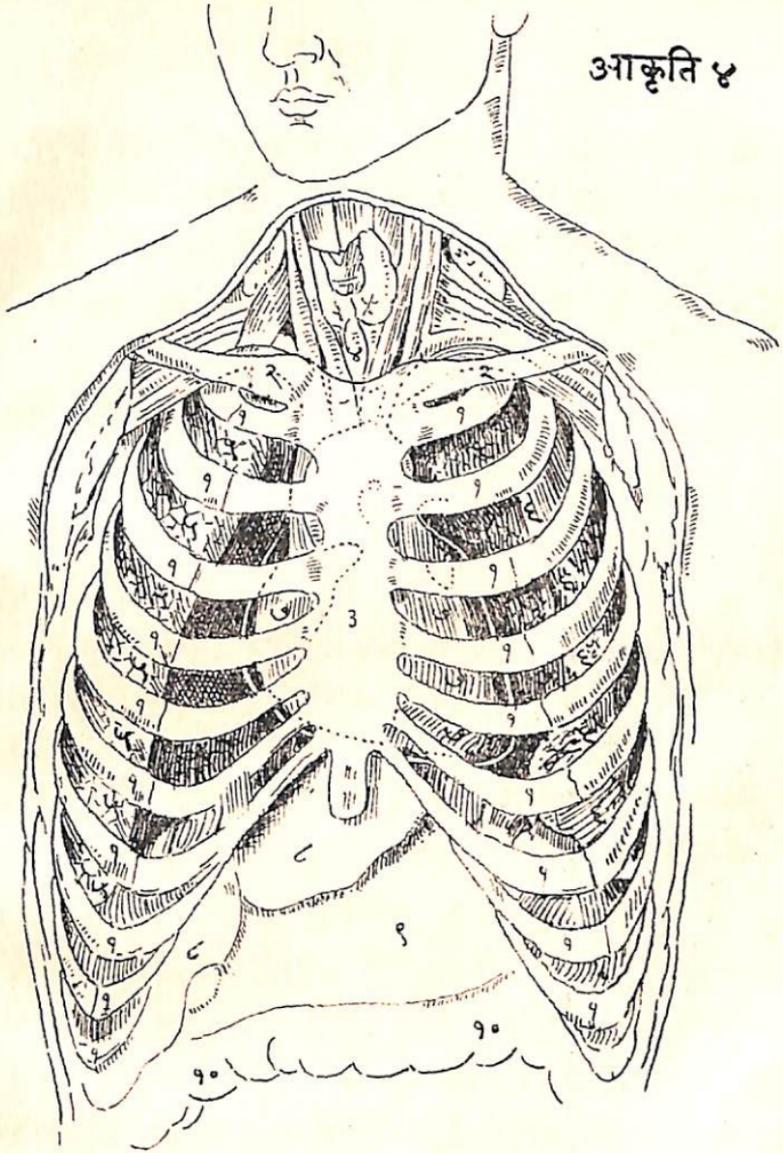
रक्त सर्व शरीरांतून फिरत असतां यकृत् व ग्रीहा उर्फ पानथरी व मूत्रपिंड या इंद्रियांतूनही जातें. हीं इंद्रियें रक्तांतील घाण व निरुपयोगी भाग काढून घेऊन तें शुद्ध करण्यास मदत करतात. मात्र पूर्वी सांगितलेलें निळें रक्त तांबडें करण्याचें सामर्थ्य या इंद्रियाचे अंगी नसतें. निळ्या रक्ताचें तांबडें रक्त करणें हें काम फुफ्फुसेंच करूं शकतात.

यकृत् जो भाग रक्तांतून घेतें, त्यापासून पित्त हा पाचक रस तयार करतें.

### फुफ्फुसें.

छातीमध्ये जी पोकळ जागा आहे, तिजमध्ये फुफ्फुसें व रक्ताशय एवढीच इंद्रियें आहेत. रक्ताशयाचा आकार साधारणपणें मुठीएवढा असतो, तेव्हां एवढी जागा खेरीजकरून बाकीचा छातीचा बहुतेक भाग फुफ्फुसांनीं भरला आहे. फुफ्फुसें दोन असून तीं छातीच्या दोन्ही आंगास आहेत, व त्यांच्यामध्ये, खालच्या आंगास, डावे वाजूला रक्ताशय आहे. फुफ्फुसांचा आकार साधारणपणें शंकूसारखा आहे. म्हणजे तीं खालीं रुंद असून वर निमुळतीं होत गेलीं आहेत. प्रत्येक फुफ्फुसांचें वजन सुमारें पक्का सवाशेर असतें.

आकृति ४



- १ फोस ल्या.  
 २ गलपट्याचें हाड.  
 ३ जंत्र.  
 ४ श्वासनलिका.  
 ५ उजवें फुफ्फुस.

- ६ डावें फुफ्फुस.  
 ७ रक्ताशय.  
 ८ यकृत.  
 ९ कोठा.  
 १० आंतडे.

असंख्य सूक्ष्म पिशव्या मिळून फुफ्फुस हें इंद्रिय झालें आहे. आपण श्वास घेतों तेव्हां पिशव्या हवेनें भरतात. फुफ्फुसांत येणाऱ्या रक्तांतील कार्बानिक आसिड नामक विषारी वायु घेऊन श्वास हवेतील ऑक्सिजन देऊन शुद्ध करणें हें फुफ्फुसांचें काम आहे.

फुफ्फुसांच्या संकोच-विकासानेंच श्वासोच्छ्वास चालतो. आपण साधारणपणें एका मिनिटांत १८ वेळां श्वासोच्छ्वास करतां.

### रसवाहिन्या.

शरिरांत जी झीज होते ती भरून काढण्याचें काम रक्ताचें आहे. झीज झालेल्या ठिकाणीं सूक्ष्मवाहिन्यांतून रक्ताचा प्रवाह झेल्यावर त्या रक्तांतील पोषक द्रव्य झिजलेल्या भागांकडून शोषून घेतलें जातें. हें द्रव्य कमी झाल्यावर रक्ताचा जो पातळ भाग राहतो त्यास रस असें नांव दिलें आहे. या रसाचा फिरून उपयोग होण्यासाठीं असतो व तो जमा करण्यासाठीं सूक्ष्मरक्तवाहिन्याजवळ सूक्ष्म नलिका किंवा शिरा असतात. त्यांत तो झिरपून येतो. या शिरा एकमेकांस मिळून मोठ्या होत जात जात शेवटीं त्यांच्या दोन मोठ्या शिरा होतात. या शिरांच्या द्वारे हा रस वाहत जाऊन शेवटीं तो दोन मोठ्या अशुद्धरक्तवाहिन्यांत पडतो. या रस वाहून नेणाऱ्या नळ्यांना रसवाहिनी नळ्या असें म्हणतात.

अन्न आंतड्यांतून जात असतां, अन्नांतील पोषाक रस आंतड्याच्या ज्या सूक्ष्म नळ्या शोषून घेतात त्याही रसवाहिनीच होत. कारण त्यांच्यांतील रस वर सांगितलेल्या नळ्यांतील रसासारखाच

असतो. या नळ्या मिळून शेवटीं जी एक मोठी नळी होते, तीच वर सांगितलेल्या दोन शिरांपैकी एक होय.

जेथें जेथें म्हणून शुद्धरक्तवाहिन्या आहेत, तेथें तेथें रस-वाहिन्याही आहेत.

ज्ञानतंतु, शुद्धरक्तवाहिन्या, अशुद्धरक्तवाहिन्या, व रस-वाहिन्या ह्या शरिराच्या सर्व भागांत एकीजवळ एक आहेत.

त्वचा.

आंतील नाजूक इंद्रियांना हवेंतील थंडी व उष्णता यांपासून व कोणत्याही आघातापासून अपाय होऊं नये म्हणून त्या सर्वांवर त्वचा ( कातडी ) हें एक आच्छादन घातलें आहे.

मुख्य दोन थर मिळून त्वचा झालेली आहे. पैकीं वरील थरास बाह्य त्वचा म्हणतात व आंतील थरास आंतर त्वचा म्हणतात. थोडेसें खरचटलें असतां, अथवा खरजेचा किंवा भाजल्याचा फोड आला असतां, जी पातळ त्वचा वर फुगून येते, ती बाह्यत्वचा होय. ही फार पातळ असते. हिचे खालीं जी त्वचा असते ती आंतर त्वचा होय. खरी त्वचा ती हीच. हिची जाडी  $\frac{1}{10}$  ते  $\frac{1}{8}$  इंचापर्यंत असते.

त्वचेत शुद्धरक्तवाहिन्या, अशुद्धरक्तवाहिन्या, रसवाहिन्या व ज्ञानतंतु हे असून शिवाय स्वेदवाहिन्या ( ज्यांतून घाम वाहतो अशा नळ्या ) व तैलवाहिन्या या सूक्ष्म नळ्या आहेत.

रक्तांतील घाण घामाच्या रूपानें बाहेर आणून टाकण्याचें काम स्वेदवाहिन्यांचें आहे.

तेलवाहिन्यांचीं तोंडें केसांचे मुळांशीं असतात. त्या एकप्रकार-  
रचा तेलकट पदार्थ बाहेर टाकीत असतात. त्या योगानें केसास  
च त्वचेस मऊपणा राहतो.

त्वचेचीं कार्ये:—

( १ ) आंतील इंद्रियांस आच्छादणें.

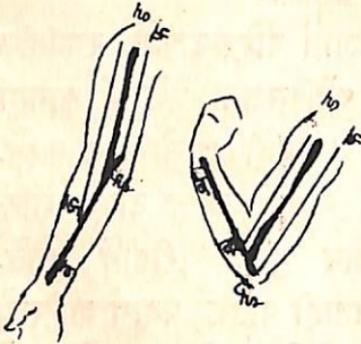
( २ ) ज्ञानतंतूंचें द्वारें स्पर्शज्ञान कराविणें.

( ३ ) रक्तांतील घाण घामाचे रूपानें बाहेर टाकणें. रक्तांतील  
कार्बानिक आसिड टाकून हवेंतील ऑक्सिजन घेणें, हें कामही  
त्वचा करते. म्हणजे फुपफुसांप्रमाणें त्वचाही श्वासोच्छ्वास करते.

( ४ ) घामाबरोबर पाणी कमी अथवा जास्त टाकून शरि-  
राची उष्णता कायम ठेवणें. हें काम पुढील रीतीनें होतें.  
वाफ होऊन उडून जाणारा कोणताही पातळ पदार्थ शरिराचे  
भागास लावल्यानें त्या भागास गारवा येतो, याचें कारण हें आहे  
कीं, वाफ होण्यास जी उष्णता लागते ती (उष्णता), तो पातळ पदार्थ  
आपल्या शरिरांतून घेतो. यामुळें शरिरांतील उष्णता कमी होऊन  
शरिरास गारवा येतो.

याच तत्वाचा उपयोग शरिराची उष्णता कायम राखण्यास प्रकृती-  
कडून करण्यांत येतो. उदाहरणार्थ, उष्ण हवेनें जेव्हां आंग  
तापूं लागतें, तेव्हां त्यांतील पाणी घामाचे रूपानें बाहेर पडतें.  
या घामाची जेव्हां वाफ होते, तेव्हां ती आंगची उष्णता घेऊनच  
होते. यामुळें शरिरांतील फाजील उष्णता कमी होऊन गारवा  
वाटतो.

हवेंत थंडी असते तेव्हा थंडीने त्वचेचा संकोच होतो, व या संकोचाने त्वचेच्या रंध्रांची तोंडे आवळली जातात. असे झाले म्हणजे रंध्रांतून पाणी येण्याचे बंद होते, व त्यामुळे शरिरातील रक्ताच्या उष्णतेस बाहेर निघून जाण्यास प्रतिबंध होतो; आणि ती आंत सांचून शरिराची उष्णता कायम राहत. थंडीच्या दिवसांत आंग हातास गरम लागते याचे कारण हेच होय.

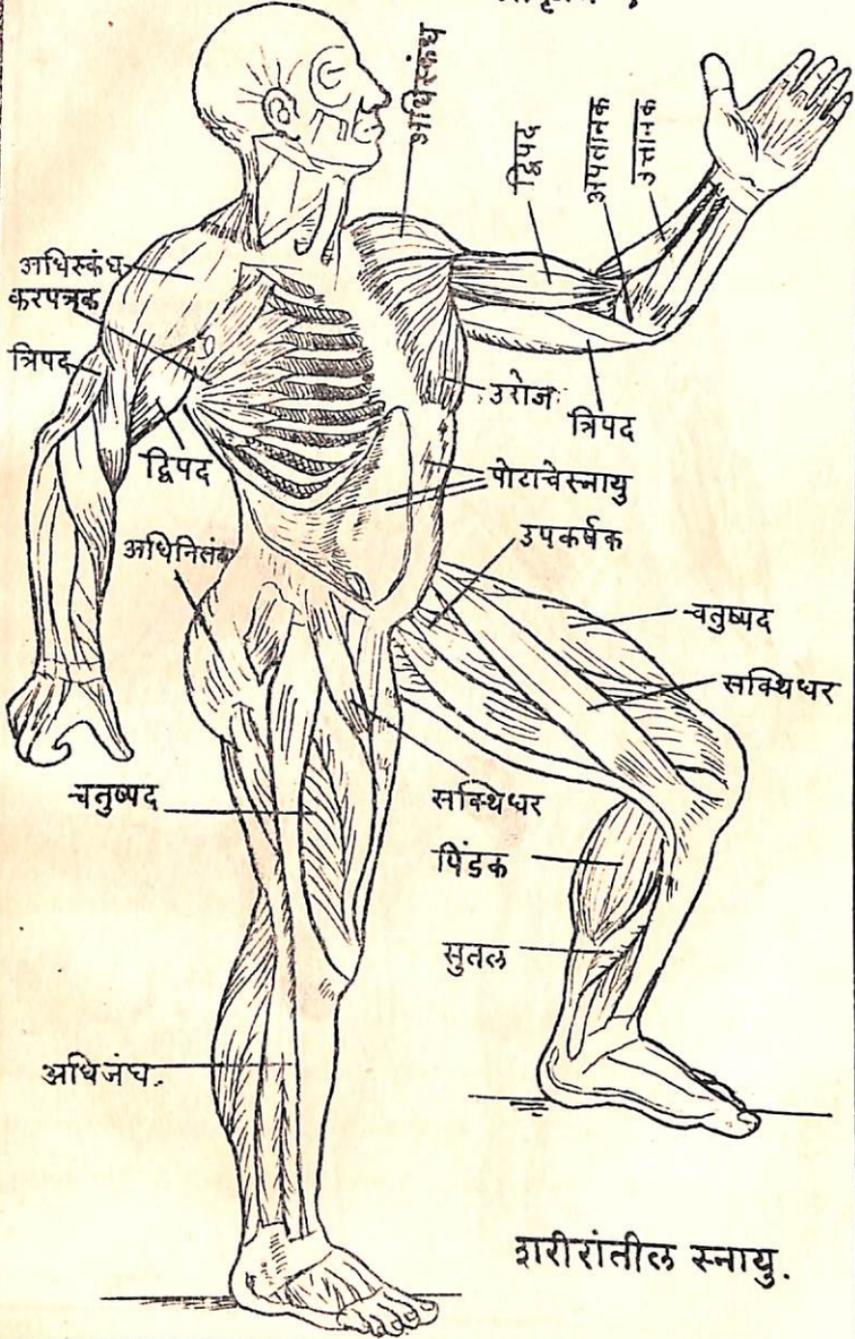


### स्नायु.

स्नायु म्हणजे मांसाच्या दोऱ्या. त्यांना मांस रज्जु अथवा पेशीही म्हणतात. त्यांच्यामध्ये रवरा माणे आकसण्याचा व प्रसरण पावण्याचा धर्म आहे. जज्जर आकृतीतील कड ही रवराची दोरी आकसली व इफ ही प्रसरली म्हणजे व भाग उचलला जाई, व इफ ही दोरी आकसली व कड ही दोरी सैल झाली म्हणजे व भाग फिरून पूर्व स्थितीप्रत येईल—उलट दिने फिरेल. स्नायूंची अशा प्रकारची योजना निरनिराळ्या हालचाला घडवून आणण्याकरितां शरिरांत केलेली आहे.

शरिरांत जे जे चलनवलन होतें, तें सव स्नायूंच्या योगाने. सर्व शरिरांत पांचशेंच्या वर स्नायु आहेत त्यांपैकी पुष्कळ जोडी जोडीने आहेत. म्हणजे एक स्नायु अवयवाच्या एका आंगास असतो व दुसरा स्नायु त्या या उलट आंगास

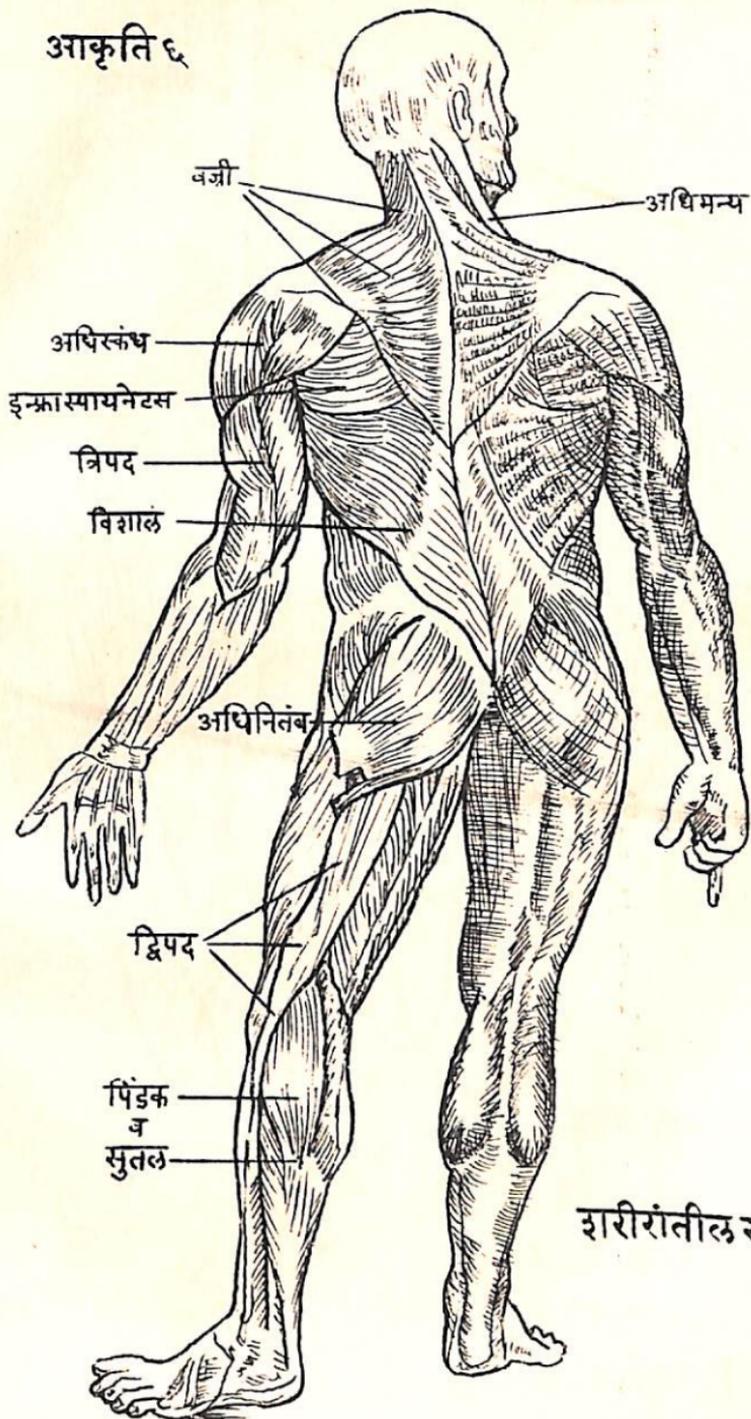
# आकृति ५



शरीरांतील स्नायु.



# आकृति ६



शरीरांतिल स्नायु

शरीर



शरीर

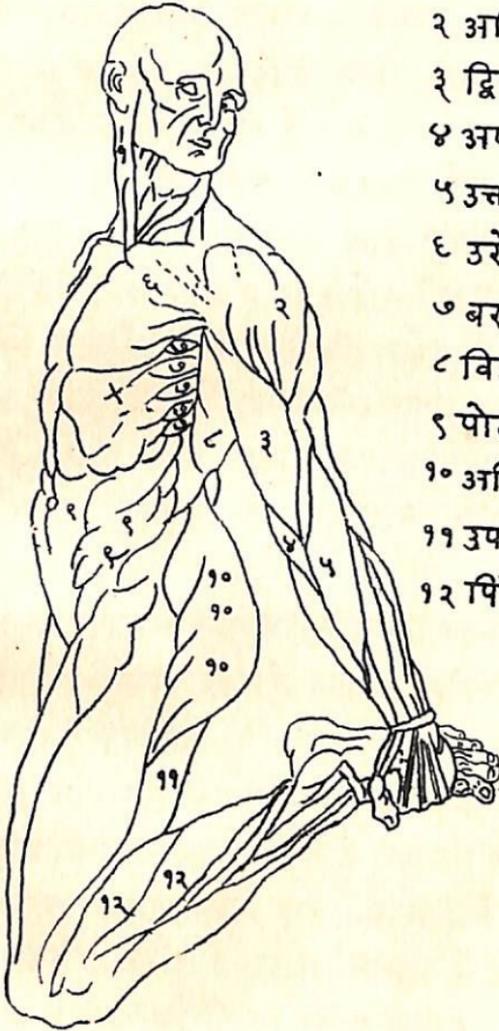
आकृति ७



हालांतील स्नायु.

- १ उरोज.
- २ अधिस्कंध.
- ३ त्रिपद
- ४ उत्तानक





शरीरांतील स्नायु.

- १ अधिमन्य.
- २ अधिस्कंध.
- ३ द्विपद.
- ४ अपतानक.
- ५ उत्तानक.
- ६ उरोज.
- ७ बरगड्यां मधील स्नायु
- ८ विशाल.
- ९ पोटाचे स्नायु.
- १० अधिनितंब.
- ११ उपकर्षक.
- १२ पिंडक व सुतल.



असतो. या योगानें एक अवयव विरुद्ध विरुद्ध दिशांनीं वळूं शकतो. हात, पाय, तोंडाचा खालचा जबडा, पापण्या, धड हीं वर खालीं करितां येतात, तीं अशा स्नायूंच्या जोडामुळेच. हात व पाय अनेक दिशांनीं फिरवितां येतात याचें कारण त्या त्या दिशांनीं ते अवयव फिरवितां यावे. यासाठीं त्यांना त्या त्या वाजूस स्नायु जोडले आहेत हें होय.

शरिरांत जी जी म्हणून हालचाल होते, ती ती, स्नायूंच्या योगानें होते म्हणून सांगितलेंच आहे. फुफ्फुसें व रक्ताशय. तसेंच अन्ननलिकेचे भिन्न भाग यांचा संकोच-विकास होतो याचें कारण हीं इंद्रियें स्नायूंचे तंतूंचीं बनलेली आहेत हें होय.

हात, पाय इत्यादि अवयवांतलि स्नायु आपल्या इच्छेप्रमाणेंच हालतात. परंतु कांहीं स्नायूंचें काम स्वतंत्रपणें चाललें असतें. अन्ननलिका, फुफ्फुस, व रक्ताशय यांचे स्नायु दुसऱ्या प्रकारचे होत.

पहिल्या प्रकारचे स्नायूस इच्छावर्ती किंवा इच्छाधीन स्नायु म्हणतात, व दुसऱ्या प्रकारचे स्नायूस अनिच्छावर्ती किंवा इच्छा-नधीन स्नायु म्हणतात.

स्नायु आकारानें कोष्ट्याचे धोष्ट्यासारखे असतात. म्हणजे ते मध्ये जाड असून दोन्ही टोंकांकडे निमुळते असतात. दंड, मांडी, तंगडी यांचा आकार मध्ये जाड असतो याचें कारण त्या अवयवां-मधील स्नायूंचा वरील प्रकारचा आकार हें होय.

अनेक बारीक तंतु मिळून स्नायु झालेला असतो. स्नायूंच्या

सर्व भागांत रक्तवाहिन्या, रसवाहिन्या व ज्ञानतंतु यांचें जाळें असतें. रक्तवाहिन्यांच्या योगें स्नायूंना रक्त मिळून त्यांचें पोषण होतें आणि ज्ञानतंतूंच्या योगानें स्नायूंना आकुंचन किंवा प्रसरण पावण्याची आज्ञा मिळते. आकसण्याचा व प्रसरण पावण्याचा धर्म जरी स्नायूंमध्ये आहे तरी ही क्रिया होण्यास त्यांन ज्ञानतंतूंकडून प्रेरणा मिळावी लागते, हें लक्षांत ठेवलें पाहिजे.

शरिरांतील मुख्य स्नायूंचें वर्णन.

पुढील स्नायूपैकी सर्व स्नायु जोडी जोडीने म्हणजे डाव्या अंगास एक व उजव्या अंगास एक असे आहेत, असें समजावें. पुढील स्नायूस एकवचनी नांव दिलें आहे, तथापि त्यापैकी कांहीं स्नायु अनेक स्नायु मिळून झाले आहेत; उदाहरणार्थ, वंशधर हा स्नायु कित्येक स्नायु मिळून झाला आहे.

शानेंतील स्नायु.

अधिमन्य [ स्टर्ना क्लीडो मॅस्टॉइड ].

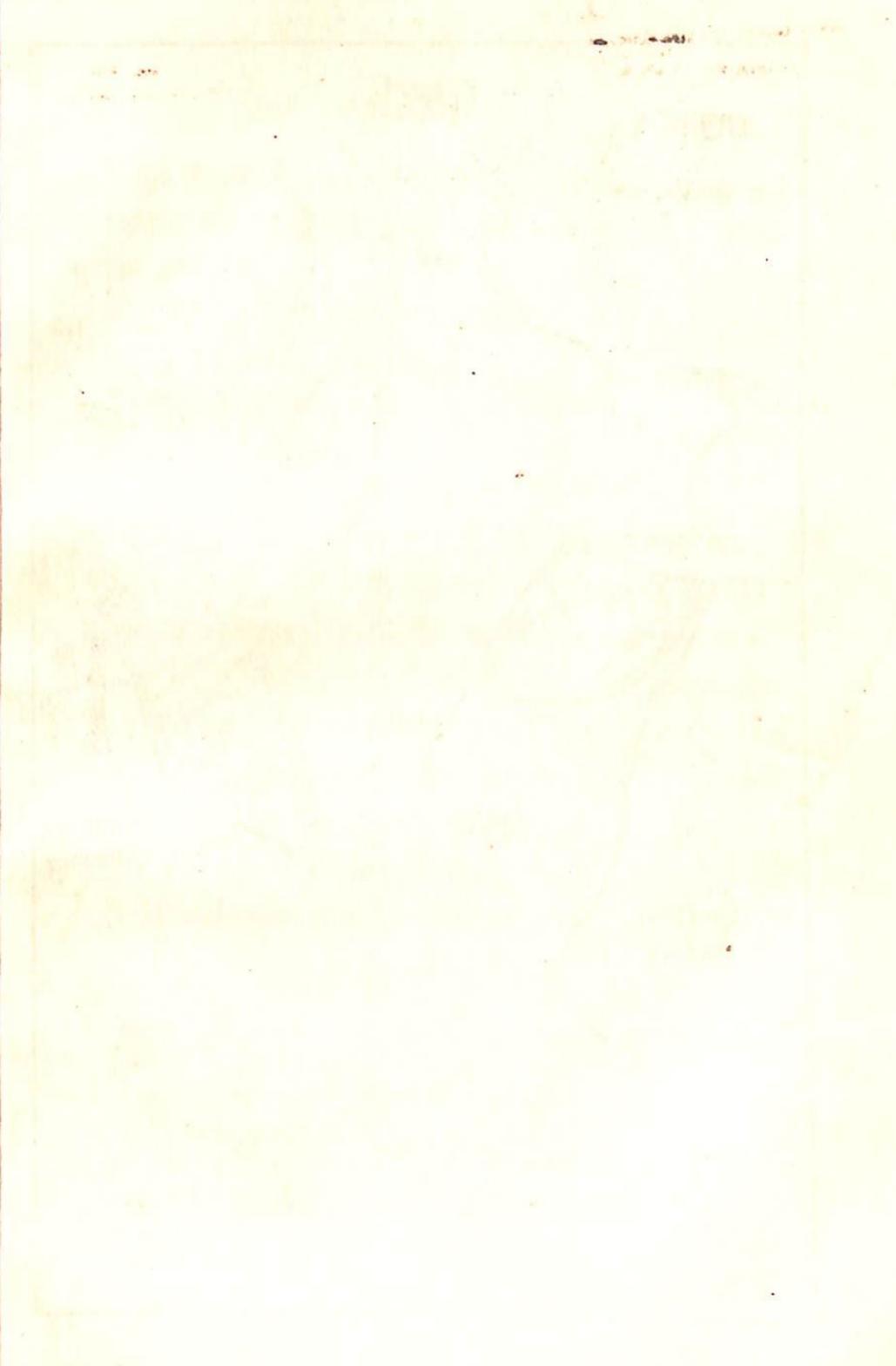
हा स्नायु तिरपा आहे.

क्रिया—हाच्या आकुंचनानें मान अथवा डोकें डाव्या किंवा उजव्या वाजूस वळविता येतें. डोकें वाजूस वांकविण्यासही हा स्नायूची मदत होते.

पाठीचे स्नायु.

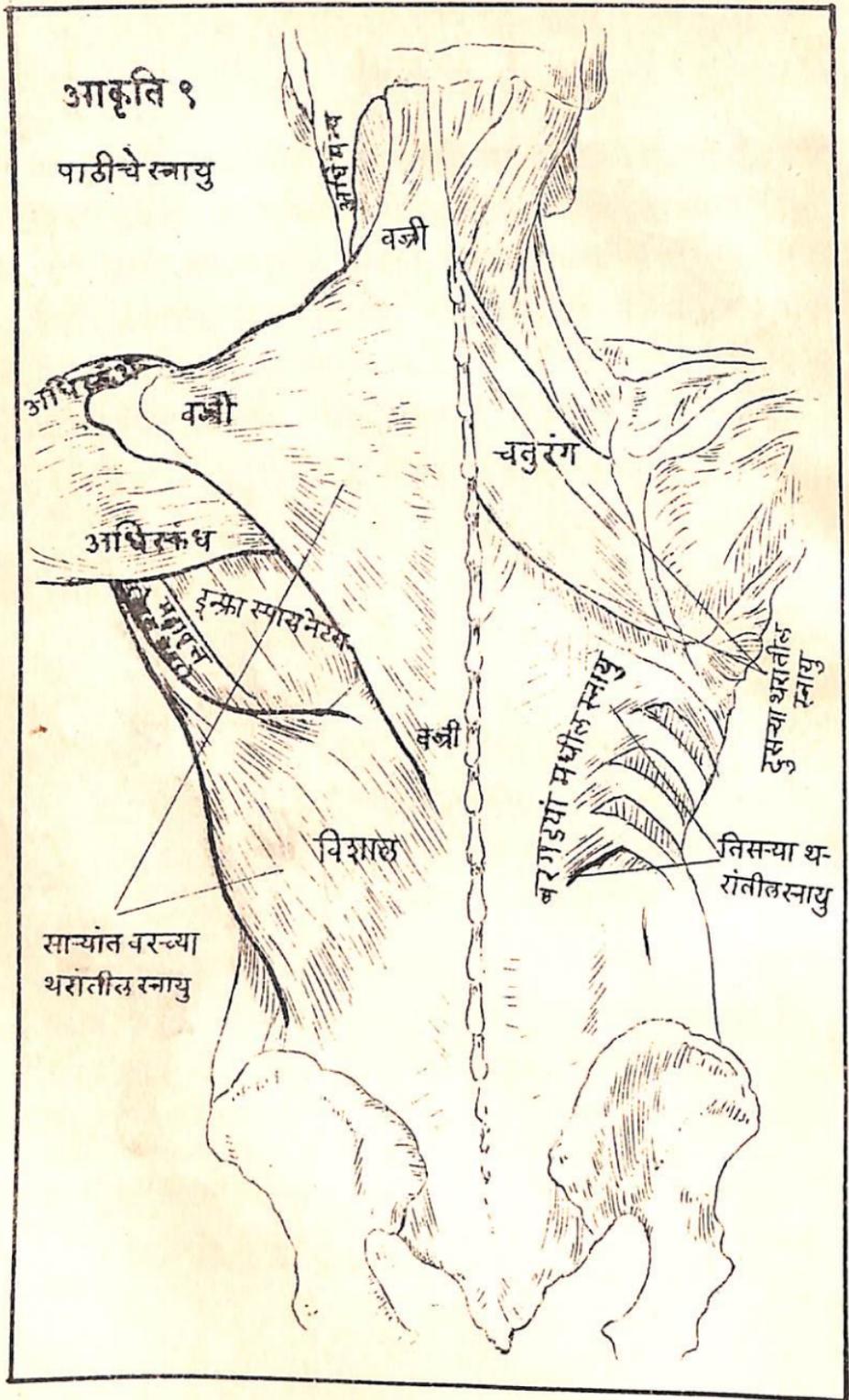
यांचे एकंदर पांच थर आहेत.

साऱ्यात वरच्या थरांत—



आकृति ९

पाठीचे स्नायु



† पृ० १ वज्री— [ ट्रूपीझियस् ]

क्रिया—खांदे वर व खाली करणें, डोकें मागें नेणें व खवाटा वाटोळा फिरविणें.

ह्या स्नायूचे मुख्य चार भाग आहेत. त्यांच्या क्रिया पुढे लिहिल्याप्रमाणें आहेत:—

१ ल्याचे आकुंचनांन डोकें मागें नेलें जातें.

२ च्याचे ” खांदा वर उचलला जातो.

३ च्याचे ” खांदा खाली ओढला जातो.

४ थ्याचे ” खांदा वाटोळा फिरविला जातो, व खवाटा मागें ओढला जातो.

पृ० २. विशाल— [ लॅटिसिमस डार्साय. ]

क्रिया—( १ ) दंड\*पार्श्वकडे ओढणें; ( २ ) दंड मागें नेणें; व ( ३ ) मागील वाजूने वाटोळा फिरविणें. कुन्हाड दोन्ही हातांत धरून तिचा घाव खाली मारतांना या स्नायूचा मुख्यतः उपयोग होतो.

( दुसऱ्या थरांत )

पृ० ३. चतुरंग [ न्हॉम्बाइडियस् ]

क्रिया—खवाटाचा खालचा कोपरा कण्याकडे ओढणें.

( तिसऱ्या थरांत )

† स्नायूचा थाडक्यांत निर्देश करितां याचा या करितां त्यांना पृ० १, पृ० २ अशीं सांकेतिक नांवे दिलीं आहेत. पृ १, या संज्ञेचा अर्थ पृष्ठस्थ म्हणजे ( पाठीच्या ) स्नायूंपैकीं १ ला स्नायु. ज २ म्हणजे जंघतील ( तंगडामध्यांल ) स्नायूंपैकीं २ रा स्नायु. याप्रमाणेंच इतर संज्ञांचा अर्थ समजावयाचा.

\* पार्श्व=कूस किंवा वाजू.

पृ० ४. वरगड्यांच्या मधील स्नायु. [ सेरेटस् पोस्टाईकस् सुपीरियर व सेरेटस् पोस्टाईकस् इन्फीरीयर ]

क्रिया—श्वासोच्छ्वास करतांना ह्या स्नायूंच्या योगानें वरगड्या खाली वर उचलल्या जातात.

( चवथ्या थरांत )

पृ० ५. वंशधर. ( वंश=कणा, वंशधर=कणा धारण करणारा.)

[ इरेक्टॉर स्पिनि ]

क्रिया—अनेक स्नायु मिळून हा स्नायु झाला आहे. याच्या-योगानें कणा ताठ राखिला जातो. तसेंच डोकें व मान ताठ राखण्यास या स्नायूची मदत होते. शरीराच्या पुढील भागी एखादें ओझे असल्यास पुढील भागास जो वांक येईल तो कमी करण्यासाठीं मागील भागास वांक आणण्याकरितांही या स्नायूचा उपयोग होतो. उदाहरणार्थ—एकादा वजनदार पदार्थ गळ्यांत बांधला असतां, अथवा गर्भारपणांत किंवा जलोदरामध्यें पोटाचें वजन वाढलें असतां, पुढील वाजूस येणारा वांक कमी करण्याकरितां हा स्नायु पाठीस वांक आणवितो.

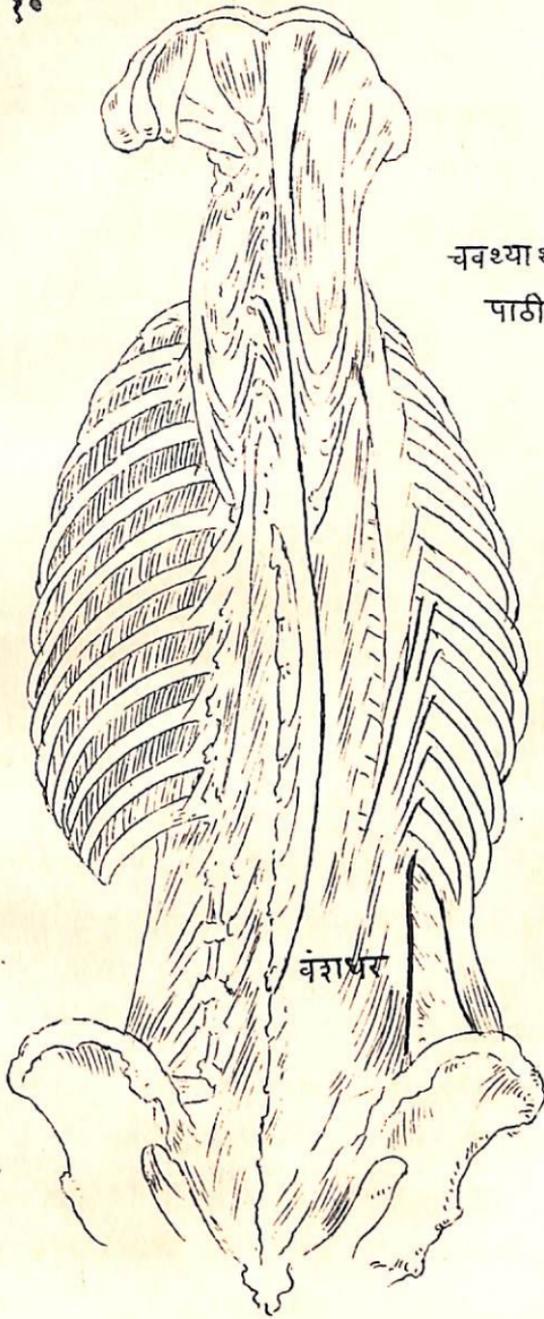
पोटाचे स्नायु.

|                    |                       |                     |
|--------------------|-----------------------|---------------------|
| ऋजु कौक्षिक        | } रेक्टस अंबडॉमिनिस्. |                     |
| बाह्य वक्र कौक्षिक |                       | एक्स्टर्नल ऑब्लिक्. |
| अंतर्वक्र कौक्षिक  |                       | इंटरनल ऑब्लिक्.     |

क्रिया—या स्नायूंचीं कामें पुढील होत.

( १ ) कोठा, आंतडीं वगैरे इंद्रियांना आंत दाबून धरणें, व

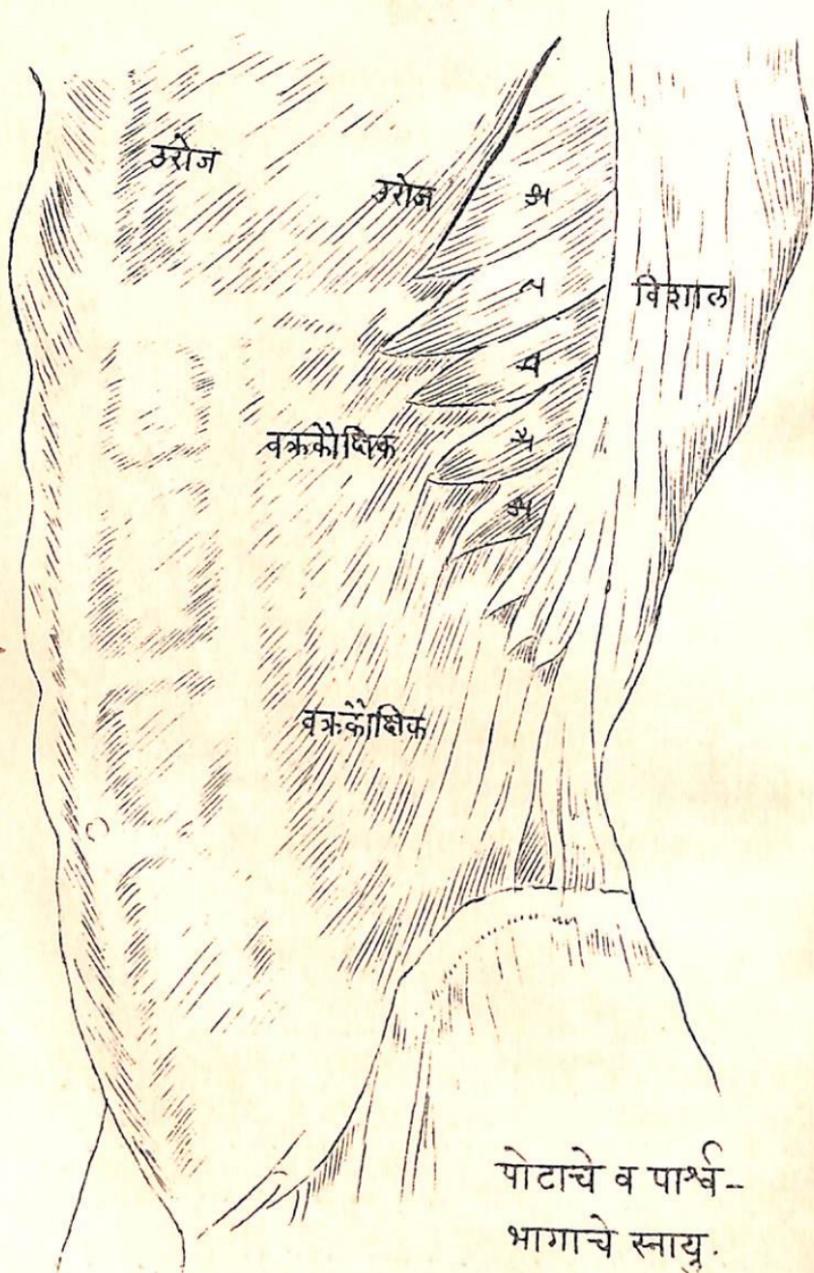
आकृति १०



चवथ्या थरांतील  
पाठीचे स्नायु

वंशधर

आकृति ११.



प्रसंगी त्यांच्यावर दाव घालणें. मलमूत्रविसर्जन, वांति व प्रसूति या प्रसंगी या स्नायूंचें आकुंचन होतें; यामुळें शरिरांतील ते ते पदार्थ जोरानें बाहेर लोटले जातात. ( या कामीं त्यांना मध्यपडद्या-चाही ( डायफ्रमचा ) उपयोग होतो. कुंथतांना मध्यपडदा आपण खाली घालवून त्यास तेंथें दावून धरतो. )

( २ ) पोट दावून ( खाली करून ) मध्यपडद्यास वर जावयास मदत करणें. या योगानें श्वासोच्छ्वासास मदत होते.

( ३ ) झाडावर वगैरे चढतांना कमरेचा भाग वर ओढून घेणें.

( ४ ) छाती अथवा ऊर खालीं कमरेकडे ओढणें किंवा वांकविणें.

( ५ ) धड बाजूस फिरविण्यास मदत करणें.

ह्या स्नायूंचीं व्यक्तिशः मुख्य कामें पुढें दिल्याप्रमाणें आहेत:—  
ऋजु कौक्षिकाचे आकुंचनानें छाती वांकविली जाते.

आंतर व बाह्य कौक्षिकाचे आकुंचनानें छाती बाजूकडे वळविली जाते.

पोट व छातीचा वरचा भाग यांच्यामधील स्नायु.

वरगड्यांमधील स्नायु-[ इंटरकॉस्टल मसल्स ] यांच्या योगानें वरगड्या खालीं वर होतात. यायोगानें श्वासोच्छ्वासास मदत होते.

मध्यपडदा— ( डायफ्रम ) फुफ्फुसें व कोठा यांचेमध्ये कमानाच्या आकाराचा जो मोठा स्नायुमय पडदा आहे, तो धडाच्या मध्यभागी आहे, म्हणून त्यास डायफ्रम अथवा मध्य-पडदा हें नांव दिलें आहे.

**क्रिया**—हाचे आकुंचन होतें तेव्हां त्याची कमान कमी होऊन तो खाली जातो, व साफ आडवा होतो. यावेळीं पोट वर येतें. फिरून त्याचे प्रसरण झालें, म्हणजे त्याचा मध्यभाग वर येऊन कमान होते. हा खाली गेला म्हणजे फुफ्फुसांना फुगण्यास वाव मिळतो व वर आला म्हणजे फुफ्फुसें दावलीं जाऊन श्वास बाहेर पडतो. हा पडदा खाली जातो तेव्हां त्याचा दाब कोठा, आंतडीं वगैरे पोटांतील इंद्रियांवर पडतो. आपण कुंथतांना हा मध्यपडदा खाली कां घालवितों याचे कारण वरील गोष्टींवरून समजून येईल.

### छातीचे व खांद्याचे स्नायु.

**उ १. उरोज**—[ पेक्टोरॅलिस भेजर ] हा स्नायु सर्व छातीभर खांद्यापर्यंत पसरलेला आहे.

**क्रिया**—दंड छातीकडे ओढणें हें या स्नायूचें मुख्य काम आहे. हात वर उचलला असेल तर तो खाली आणण्यास हा स्नायु विशाल स्नायूस मदत करतो. या स्नायूचें आकुंचन, व प्रसरण यांचें फुफ्फुसांचे आकुंचन-प्रसरणास साहाय्य होतें.

**उ. २ करपत्रक** (=करवतासारखा) [ सेरेटस मॅजस. ]

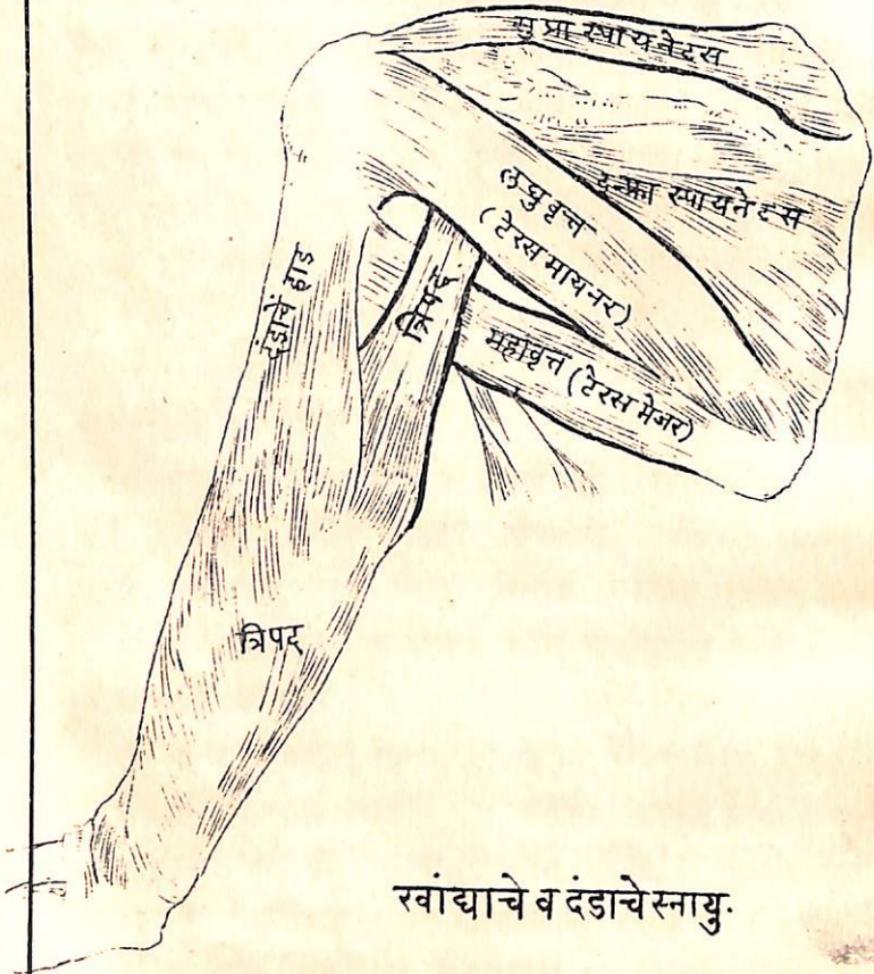
**क्रिया**—हा स्नायु खवाटा पुढें ओढतो. यामुळें हातानें पदार्थ पुढें ढकलण्याच्या कामीं याचा उपयोग होतो.

**स्क १. अधिस्कंध**— ( खांद्यावरील स्नायु ) [ डेल्टॉइड ]

**क्रिया**—हात वाजूनें वर उचलण्यास या स्नायूची मदत होते या स्नायूचा पुढला भाग, उरोज स्नायूचे साहाय्यानें, हात पुढाले



आकृति १२.



वाजूस ओढतो व महावृत्त स्नायूच्या आणि विशाल स्नायूच्या साहाय्याने हात मागे ओढतो.

स्क २. [ मुप्रा स्पायनेटस. ]

क्रिया—हा स्नायु वाजूने हात वर करण्यास अधिस्कंध स्नायूस मदत करतो.

स्क ३. [ इन्फ्रा स्पायनेटस. ]

लघुवृत्त [ ट्रेस मायनर. ]

क्रिया—दंड मागे नेण्यास या स्नायूंचा उपयोग होतो.

- ( १ ) दंड जागच्या जागी आंतून बाहेर फिरविण्यास,  
 ( २ ) अधिस्कंधाने दंड उचलल्यावर तो त्या स्थितीत धरण्यास,  
 व ( ३ ) दंड मागे नेण्यास या स्नायूंचा उपयोग होतो.

स्क ४. महावृत्त स्नायु— [ ट्रेस मेजर ]

क्रिया—हा स्नायू दंड खाली आणण्यास व तो मागे नेण्यास विशाल स्नायूस मदत करतो.

### हाताचे स्नायु.

#### स्नायूंचे नांव

#### क्रिया.

दंडांतील स्नायु } ( ह१ ) द्विपद [ वायसेप्स ] हस्त वर ओढतो.  
 ( ह२ ) त्रिपद [ ट्रायसेप्स ] हस्त खाली ओढतो हात ताठ करतो.

अग्रहस्तां- } ( ह३ ) अपतानक [ प्रोनेटॉर ] अग्रहस्त पालथा करतो.  
 तील स्नायू. } ( ह४ ) उत्तानक [ सुपिनेटॉर ] अग्रहस्त उताणा करतो.

कमरेतील स्नायु.

क १. [सोअस] अधिकटोर } हे स्नायु कमर व  
क २. [इलायकस] स्नायु. } मांडी यांना सांधतात.

क्रिया—मांडी वांकविण्यास ( वर पोटाकडे वळविण्यास )  
या स्नायूंचा उपयोग होतो. निजलों असतां मांड्या वर कर-  
ण्यास, अथवा पाय पसरून उताणे निजलों असतां (धड उचलून)  
उठण्यास हे स्नायु उपयोगी पडतात.

क ३. अधिनितंब [ग्लूटियस } हे स्नायु कमरेच्या मागल्या  
सॅक्सिमस. ] } वाजूस ( नितंब भागी ) आहेत.

क्रिया—( १ ) मांडी ताठ करणें.

[ २ ] ओणवे झालों असतां फिरून शरीर ( धड ) ताठ करणें.

पायाचे स्नायु.

मांडीतील अथवा साक्थिस्थ ( साक्थि=मांडी ) स्नायु.

स १. चतुष्पद. ( क्वॉड्रिसेप्स ) हा स्नायु मांडीचे पुढील  
भागी आहे.

क्रिया—वांकलेली तंगडी ताठ करणें.

स २. साक्थिधर [ सार्टोरियस. ]

क्रिया—[ १ ] तंगडी मांडीकडे ओढणें—वळविणें.

[ २ ] मांडी पोटाकडे ओढणें.

[ ३ ] मांडीच्या जागच्या जागीं आंतून वाहेर फिरविणें.

तंगडी वर उचलून मांडीवर ठेवण्याचें काम या स्नायूचें आहे  
असें पूर्वी समजत असत; पण तें चुकीचें आहे.

आकृति १३

अधिकटीर स्नायु

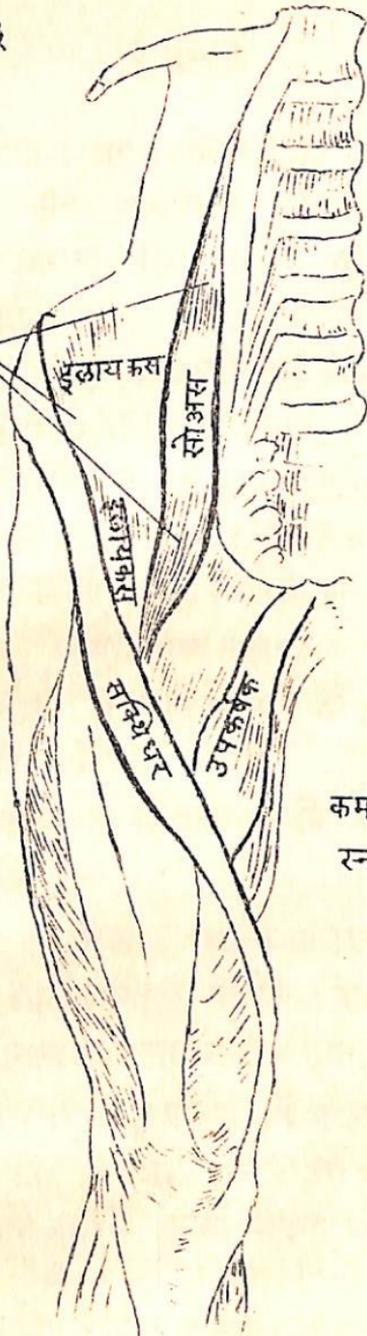
इलाय कस

सोअस

इलाय कस

साक्षि धर

उपकषक



कमरेतील (कटीरांतील)

स्नायु व मांडीतील स्नायु.



स ३. उपकर्षक ( जवळ ओढणारे ). [ ॲडव्कटॉर मसल्स. ]

क्रिया—मांडी आंत ओढण्याचें काम या स्नायूचें आहे. घोड्यावर बसलों असतां घोडा मांडींत दाबून धरण्यास या स्नायूचा उपयोग होतो.

स ४. अपकर्षक ( दूर ढकलणारे ) [ ॲडव्कटॉर मसल्स. ]

क्रिया—हे स्नायु मांडी बाजूनें वर नेतात. पाय फांकतांना किंवा पाय बाजूनें वर उचलतांना या स्नायूचा उपयोग होतो.

स ५. द्विपद.—[ वायसेप्स ] मांडीचे मागील भागीं हा स्नायु आहे.

क्रिया—तंगडी वांकाविणें हें या स्नायूचें काम आहे.

### तंगडींतील स्नायु.

ज १. अंतर्जघ्न. [ टिविॲलिस ॲंटिकस ] हा स्नायु तंगडीचे पुढील भागीं आहे.

क्रिया—पाऊल घोड्याच्या सांध्यावर वरचे बाजूस वळविण्याचें काम हा स्नायु करतो.

ज २. पिंडक व सुतल. [ गॅस्ट्रॉक्निमियस व सोलियस ] हे स्नायु तंगडीचे मागील भागीं आहेत. पोटरीस हात लावला असतां जे स्नायु हातास लागतात ते हेच होत.

क्रिया—( १ ) टांच वर ओढून पाऊल उभें अथवा ताठ करणें म्हणजे तंगडीशीं सरळ रेंपेंत आणणें. ( २ ) चालतांना पाऊल वर उचलणें. ( ३ ) उभें राहिलें असतां पाऊल आडवें ताठ राहण्यास मदत करणें.

## भाग २ रा.

निरानिराख्या व्यायामांत कोणत्या स्नायूंस व्यायाम होतो  
या विषयीचें विवेचन.

—:—:—

कोणत्या श्रमांत कोणत्या स्नायूंस व्यायाम घडतो, याचें जें विवेचन पुढें केलें आहे, तें स्थूलमानानें आहे असें समजावें. ज्याप्रमाणें झाडाची एक फांदी हालली कीं, इतर फांद्या थोड्या बहुत हालतात, त्याप्रमाणें शरिरांतील एका स्नायूंत हालचाल झाली कीं, शेजारचे स्नायूंमध्ये थोडी हालचाल होतेच. म्हणून अमक्या व्यायामांत अमक स्नायूंस व्यायाम होतो याचा अर्थ एवढाच समजावा कीं, त्या व्यायामानें त्या स्नायूंस विशेष व्यायाम होतो. अर्थात् त्या व्यायामानें शेजारच्या स्नायूंस थोडा बहुत व्यायाम होतोच असें समजावें.

तसेंच, पायास व्यायाम झाला म्हणजे फुफ्फुसांस व्यायाम होतोच, असें समजावें. ( कारण पुढें सांगतलें आहे. ) म्हणून ज्या व्यायामांत पायांस विशेष व्यायाम होतो, त्या व्यायामापासून फुफ्फुसांसही व्यायाम होतो असें समजावें.

### तालीम.

उठावशा—स ३, स ४ खेरीजकरून कमर व पाय यांतील सर्व मोठे स्नायूंना व्यायाम होतो. चवड्यावर उभें राहून उठावशा काढल्या असतां तंगड्यांचे स्नायूंस विशेष चांगला व्यायाम होतो.

उठावशा काढतांना होणाऱ्या व्यायामासंबंधानें सविस्तर माहितीः—

**वसतांना**—कमरेजवळ वांकतांना कमरेचे स्नायु; गुडध्याजवळ वांकतांना स ५; व घोठ्याजवळ पाय वांकतांना ज १.

**उठतांना**—कमर ताठ करतांना अधिनितंब; पाय ताठ होतांना स १; टांच भुईस टेकीत उठतांना ज २.

**जोर**—पाठीचे पहिल्या दोन थरांतील स्नायु व छातीचे व दंडाचे बहुतेक स्नायु यांना व्यायाम होतो. सविस्तर माहिती:—  
( १ ) हात टेकून उभें असतांना, हात ताठ करावे लागतात, म्हणून हाताचे त्रिपद स्नायूंस व्यायाम होतो.

( २ ) पाय ताठ करावे लागतात म्हणून स १ व स ५ यांस थोडासा.

छाती खाली जातांना व दंड मागे जातांना पृ. १।२।३ स्क ३-४ व डोकें मागे नेतांना पृ १.

हात ताठ करून छाती वर आणतांना—त्रिपद, उरोज व करपत्रक.

**जोडी**.—बोटें, मनगट, दंड व खांदा यांतील स्नायु व पाठीचा विशाल स्नायु यांना व्यायाम घडतो.

जोडी पासून होणाऱ्या व्यायामासंबंधानें विस्तरशः माहिती:—

**जोडी हातांत धरतांना**—बोटें व मनगट यांचे स्नायु.

**जोडी तोंडतांना**— " " " " " व अधिस्कंध आणि हस्ताचा द्विपद व अपतानक.

**जोडी फिरवितांना**—अधिस्कंध, वज्री, विशाल व मनगटाचे स्नायु.

मलखांब मुख्यतः पुढील स्नायुः—अग्रहस्ताचे स्नायु; हाताचे द्विपद व त्रिपद; अधिस्कंध, विशाल, अधिकटीर, सक्थिधर, उपकर्षक आणि कौक्षिक.

सिंगलवार—हात, खांदा, पोटा, व काटि यांतील स्नायु.

पॅरललवार—हाताचे व खांधाचे स्नायु; पायाचे अपकर्षक स्नायु.

क्रुस्ती—बहुतेक सर्व स्नायु.

व्यायामाचे इतर प्रकार.

वायासिकल—पायाचे, विशेषतः तंगडीचे स्नायु.

कुदळीनें जमीन खणणें किंवा कुन्हाडीनें लांकडे फोडणें—पोटाचे स्नायु व विशाल स्नायु. (सविस्तर माहितीः—) वांकातांना पोटाचे व कमरेचे स्नायु आणि कुदळ किंवा कुन्हाड मारतांना खांधाचे व उराचे स्नायु व पृ. २ यांना व्यायाम होतो.

हातांनीं खेळावयाचे निरनिराळे खेळ—सर्व खेळांतील सामान्य दोष पुढीलप्रमाणें आहेत. बहुतेक सर्व खेळांमध्ये फक्त उजव्या हाताचाच उपयोग करावा लागतो, यामुळे खेळांमध्ये डाव्या हातास व्यायाम मिळत नाहीं.

आठ्या-पाठ्या—मुख्यतः पायाच्या सर्व स्नायूंस व्यायाम होतो. वांकावें लागतें म्हणून कमरेच्या व पोटाच्या स्नायूंस थोडासा थोडासा हातास.

खो-खो—मुख्यतः पायांस व्यायाम घडतो. उठतांना व बसतांना थोडासा कमरेच्या व पोटाच्या स्नायूंस

हुतुतू अथवा हुडसाम.— पायांचे स्नायूंस. व्यायाम घडतो.

लंगडी—पायाचे व कमरेचे स्नायूंस मध्यम व्यायाम घडतो.

इटि-दांडू—या खेळांत कोणत्याही अवयवास म्हणण्यासारखा व्यायाम घडत नाही. हात, पाय, कमर व पोटाचे स्नायूंस थोडासा व्यायाम घडतो.

क्रिकेट—पळतांना मुख्यतः पायांस; चेंडूस टोला मारतांना, चेंडू फेकतांना व झेलतांना थोडासा हातास. टोला मारतांना व चेंडू फेकतांना उरोज, अधिस्कंध व करपत्रक स्नायु यांस चांगले श्रम होतात.

टेनिस व वॅडमिंटन—पायांस वराच, व हातास थोडासा.

फुट-बॉल—मुख्यतः पायांस. गर्दीत शिरल्यास व थोडी बहुत धक्कावुक्की केल्यास हातास; व शरिराच्या इतर भागांस थोडासा.

हॉकी—पायांस व हातांस.

क्रोके—कमरेस व पोटाचे स्नायूंस थोडासा आणि हातास थोडासा.

## भाग ३ रा.

### व्यायामाची आवश्यकता.

मनुष्याच्या चळवळीची मुख्य साधनें मेंदु व स्नायु हीं होत. विचार व प्रेरणा यांचें स्थान मेंदु आहे व मेंदू पासूनही प्रेरणा निघाल्यावर तिच्या योगानें चलन पावून क्रिया वाढविण्याचें काम स्नायूंचें आहे. म्हणून हीं दोन्ही इंद्रियें शक्तिमान् असणें जरूर आहे. तीं शक्तिमान् असण्यास त्यांचें योग्य पोषण झालें पाहिजे, व त्यांच्या क्रिया चालण्यासाठीं त्यांना नेहमीं रक्ताचा भरपूर पुरवठा झाला पाहिजे. अर्थात् हीं दोन्ही कामें योग्य रीतीनें होण्यास शरिरांत पुष्कळ रक्त पाहिजे, आणि तें रक्त शरिरांत एकसारखें खेळत राहिलें पाहिजे. रक्त उत्पन्न करणें हें काम पचनेंद्रियांचें आहे व शरिरांत रक्त जोरांन खेळविणें हें काम रक्ताशयरूपी बंधाचें आहे. रक्त एकदा शरीरांतून हिंडून आलें म्हणजे तें अशुद्ध व अपायकारक होतें; म्हणून तें शुद्ध करण्याचें काम फुफ्फुसांनीं केलें पाहिजे. याप्रमाणें प्राण्याची चळवळ चालण्यास जोरदार मेंदूखेरीज पचनेंद्रियें, फुफ्फुसें व व रक्ताशय हीं इंद्रियें उत्तम प्रकारचीं पाहिजेत, असें दिसून येईल. म्हणून या इंद्रियांची सुस्थिति ज्या उपायानें राहिल तो उपाय, प्राण्यांची चळवळ व त्यांची कर्तृत्वशक्ति वाढविण्यास कारणीभूत होईल हें उघड आहे. अशा प्रकारचा अद्वितीय उपाय व्यायाम होय. हें कसें तें पुढील विवेचनावरून दिसून येईल.

## व्यायामाचा परिणाम.

व्यायामापासून निरनिराळे इंद्रियांवर परिणाम पुढें लिहिल्या-  
प्रमाणें होतो.

**फुफ्फुसें**—व्यायाम करित असतां श्वासोच्छ्वास जोरानें चालून फुफ्फुसें हवेनें पूर्ण भरतात. यामुळें शुद्धीकरितां फुफ्फुसांत येणाऱ्या रक्तास हवा भरपूर मिळून रक्तशुद्धि चांगली होते. निरोगी स्थितीत रक्तशुद्धीस मोकळ्या हवेतील व्यायामासारखा दुसरा कोणताही उपाय नाही. फुफ्फुसें जेवढी अधिक मोठीं, तेवढी त्यांत हवा जास्त मावणार; म्हणून फुफ्फुसांचा आकार वाढणें ही गोष्ट शरिरास हितावह आहे. व्यायाम करित असतां आपण जोरानें श्वासोच्छ्वास घेतों, यामुळें फुफ्फुसांत पुष्कळ हवा भरून तीं चांगलीं फुगतात. या योगानें त्यांचा आकार वाढतो, व रक्त आणि ऑक्सिजन यांचा भरपूर पुरवठा होऊन त्यांना पुष्टि ( व बळकटीही ) येते, आणि विकाराचा प्रतिकार करण्यास तीं समर्थ होतात.

फुफ्फुसांत एक प्रकारचे जंतु गेले म्हणजे त्यांच्या योगानें फुफ्फुसें कुजू लागून कफक्षय हा विकार होतो. जेथें शुद्ध हवा किंवा ऑक्सिजन भरपूर आहे, तेथें हे जंतु जिवंत राहू शकत नाहीत. फुफ्फुसांची वरचीं टांके लहान असून तीं फुफ्फुसांच्या हालचालीच्या

\* आपण बसलों असतां, श्वासाबरोबर जितका कार्बानिक आसिड वायु बाहेर पडतो, त्याच्या चौपट, आपण पळत असतां, बाहेर पडतो. यावरून रक्तशुद्धीचें काम व्यायामापासून किती होतें याची कल्पना होईल.

मुख्य ठिकाणापासून दूर आहेत; यामुळे श्वास जोराचा घेतला नाही किंवा वाईट हवेत श्वासोच्छ्वास केला, तर या (टोंकांचे) भागास ऑक्सिजनचा पुरवठा भरपूर होत नाही. यामुळे या भागांत वरील जंतूंचा प्रवेश झाल्यास तो भाग कुजू लागून कफक्षय हा रोग होतो. व्यायामाने फुफ्फुसांच्या वरील टोंकांतही हवा भरत असल्याने कफक्षय होण्याची भीति राहत नाही.

व्यायामानंतर रक्तांत ऑक्सिजन जास्त प्रमाणाने आढळतो ही गोष्ट प्रत्यक्ष प्रयोगाने सिद्ध झाली आहे. अर्थात् तो पुढे उपयोगी पडावा म्हणून रक्तांत सांठविलेला असतो.

ऑक्सिजनयुक्त रक्ताचे महत्त्व इतके आहे की, रक्तांत ऑक्सिजनचे प्रमाण पुष्कळ असते, तेव्हां शरीरोपयोगी रस उत्पन्न करणारे शरीरांतिल पिंड जास्त जोराने काम करित असतात. एकाद्या प्राण्याचे मस्तक छोटल्यावर त्याच्या मस्तकांत ऑक्सिजनयुक्त रक्ताचा प्रवाह कृत्रिम रीतीने सोडला, तर मेंदूमध्ये क्षणभर जीव आल्याची चिन्हे दिसू लागतात.

**रक्ताशय व रक्तवाहिन्या**—व्यायाम करित असतां रक्ताशयाचा जोराने संकोच व विकास होतो, व तसेच रक्तवाहिन्यांतून जोराने रक्त वाहते; त्यामुळे रक्ताशय व रक्तवाहिन्या यांना बळकटी येते.

**स्नायु**—व्यायामाने सर्व स्नायूंचे आकुंचन व प्रसरण होऊन सर्वांगास बळकटी येते.

शरिराचा बहुतेक भाग जर स्नायुमय आहे, तर शरिराचें योग्य पोषण होण्यास शरिरांतील स्नायूंचें योग्य पोषण झालें पाहिजे हें उघड आहे. व्यायामानें सर्व स्नायूंचा संकोच-विकास होतो व या संकोच-विकासाचे योगानें त्यांच्यामध्ये रक्ताचा प्रवाह जोरानें चालू होऊन त्यांचें चांगलें पोषण होतें, आणि त्यांच्यांतील घाण भाग बाहेर ढकलला जातो. अशा रीतीनें सर्व शरिराचें योग्य पोषण स्नायूंच्या संकोच-विकासानें होतें.

**पचनेंद्रियें**—अन्नाचें पचन होण्यास त्यामध्ये पचनेंद्रियांत तयार होणारे पाचक रस पडावे लागतात, व अन्न चांगलें कुसकरलें व घुसळलें जावें लागतें. पाचक रस ज्या इंद्रियांत तयार होतात, त्यांतून ते पिळून निघण्यास व अन्नाचें घुसळणें चांगल्या रीतीनें होण्यास पचनेंद्रियांचा संकोच व विकास जोरानें व्हावा लागतो आणि तो जोरानें होण्यास त्या इंद्रियांच्या स्नायूंमध्ये उत्तम लवचिकपणा पाहिजे. हा लवचिकपणा व्यायामाचे योगानें येतो.

**त्वचा**—व्यायामानें शरिरांतून घाम वाहूं लागतो. घाम हा शरिरांतील मळ व अर्थात् शरिरास अपायकारक पदार्थ आहे. यामुळें शरिरांतून घाम वाहिल्यानें त्यांतील मळ नाहीसा होऊन शरीर निरोगी होतें. घाम घालविण्याचें काम त्वचेचें आहे व ही क्रिया करण्याचें त्वचेचें सामर्थ्य व्यायामाचे योगानें वाढतें. (त्वचेतून जाणाऱ्या पाण्याचें प्रमाण व्यायामानें दुप्पट होतें असा अनुभव आहे.)

**हाडें**—व्यायामानें इतर सर्व भागांप्रमाणें हाडांसही रक्ताचा भरपूर पुरवठा होऊन त्यांची वाढ चांगली होते.

**सांधे**—शरिरांत जे हाडाचे सांधे आहेत, त्यांना पुरेसें चलनवलन मिळालें नाहीं, तर त्यांमध्ये कांहीं द्रव्य सांचून त्यांचे चलन-वलनास प्रतिबंध होतो व त्यामुळें सांधे दुखूं लागून सांधेवात वगैरे रोग जडतात. परंतु व्यायामानें सांधे खुले राहून त्यांची सांधे-बंधनें वळकट होतात. यामुळें सांधेवातादि रोग जडण्याची भीति रहात नाहीं.

**मेंदू**—शरिराच्या हालचालीस मूळ प्रेरणा मेंदूतील कांहीं स्थानां-पासून मिळते. शरिरास व्यायाम मिळाला नाहीं, तर हीं मेंदूतील स्थानें दुर्बल होतात व या भागाच्या दुर्बलतेमुळें सर्व मेंदूसही अंशतः दुर्बलता येते. परंतु व्यायामानें या भागांचा विकास चांगला होतो व त्यामुळें सर्व मेंदूची शक्ति वाढते. शिवाय व्यायामानें मेंदूस शुद्ध रक्ताचा भरपूर पुरवठा होतो; यामुळें त्याची शक्ति वाढते.

व्यायामानें अन्नपचन चांगलें होऊन जास्त रक्तोत्पत्ति होत असल्यामुळें व रक्ताचा पुरवठा सर्व भागांस होत असल्यानें, त्या योगानें सर्व भागांचें चांगलें पोषण होऊन त्यांस पुष्टि व काम करण्याची शक्ति ह्या प्राप्त होतात.

### व्यायामाचे सामान्य परिणाम.

व्यायामानें भूक चांगली लागते, अन्नास जास्त गोडी येते व मनास आनंद वाटतो. यामुळें मन उत्साही व तरतरीत राहतें. शिवाय व्यायामानें तारुण्यावस्था थोडी उशिरानें येते. म्हणजे व्यायामानें ब्रह्मचर्याचा काल वाढतो.

## भाग ४ था.

परिपूर्ण (सर्वगुणसंपन्न) व्यायामपद्धति कोणती?

परिपूर्ण व्यायामपद्धति कशी असावी ?

व्यायामापासून होणारे जे फायदे पूर्वी सांगितले आहेत, ते पूर्णत्वाने होण्यास व्यायामही योग्य प्रकारचा पाहिजे. म्हणून योग्य प्रकारचा व्यायाम कसा असतो हे समजावे यासाठी त्याची लक्षणे पुढे दिली आहेत.

१ व्यायाम शरिराच्या सर्व भागांस झाला पाहिजे— शरीर हे इमारतीसारखे आहे. इमारत मजबूत होण्यास तिचे सर्व भाग मजबूत असावे लागतात. त्यातील एखादा भाग ( उदाहरणार्थ एका बाजूची भिंत किंवा एक तुळई ) मजबूत नसेल, तर इतर भाग चांगले असूनही इमारत लवकर पडेल. तसेच शरिराचे आहे. शरिराचा एखादा भाग अशक्त असेल, तर इतर भाग सशक्त असूनही एका अशक्त भागामुळे शरिरास विकार होईल, किंवा मृत्यु लवकर येईल. इतर शरीर चांगले असूनही केवळ रक्ताशय दुर्बल किंवा रोगयुक्त असल्याकारणाने अकाली मृत्यु आल्याची उदाहरणे पुष्कळ पाहण्यांत येतात. या-करितां शरिराचे सर्व भाग सशक्त असणे इष्ट आहे. व्यायाम शरिराचे सर्व भागांस झाला नाही, तर कांहीं भाग अशक्त राहतील

व व्यायामापासून सुदृढ झालेल्या अवयवांचा फायदा शरिरास व्हावा तितका होणार नाही. म्हणून शरिराचे सर्व भाग ( शरिरांतलं सर्व स्नायु ) सुदृढ होतील असा व्यायाम असावा.

२ फुफ्फुसें, रक्ताशय, पचनेंद्रिये हीं इंद्रिये अत्यंत महत्वाचीं आहेत; म्हणून हीं इंद्रिये व्यायामानें सुदृढ झालीं पाहिजेत.

३ केवळ शक्तीपेक्षां प्रसंगावधान, चपलता व तडफ यांची व्यवहारांत विशेष आवश्यकता आहे. म्हणून व्यायामानें अंगांत शक्तीबरोबर प्रसंगावधान, चापल्य व तडफ हीं आलीं पाहिजेत.

४ मन आनंदी राहिलें पाहिजे.

५ शरिराच्या डाव्या किंवा उजव्या अंगास विशेष व्यायाम मिळून दुसरे अंगास कमी व्यायाम मिळेल असा व्यायाम दोषयुक्त समजावा.

६ त्याचप्रमाणें, ज्या योगानें शरिराच्या केवळ वरच्या भागास किंवा केवळ खालच्या भागास श्रम पडून त्याचा विकास होऊन दुसऱ्या भागाचा विकास होणार नाही अशा प्रकारचा व्यायामही दोषयुक्त समजावा.

## व्यायामाच्या निरनिराळ्या प्रकारांतील दोष.

( सर्वगुणसंपूर्ण व्यायामाचीं जां लक्षणें दिलीं आहेत तीं लाविलीं असतां निरनिराळ्या व्यायामाचे प्रकारांत कोणते दोष दृष्टीस पडतात ते पुढें दिले आहेत )

**देशी तालीम**—नुसती ( कुस्तीशिवाय ) तालीम—( १ )  
तालीम करण्यापासून शक्ति वाढते, परंतु तिजपासून चापल्य व

तडफ हीं येत नाहीत. ( २ ) या व्यायामापासून सर्व स्नायूंस श्रम होत नाहीत. महत्त्वाच्या स्नायूंपैकीं पोटाचे स्नायूंस व उरोज स्नायूंस (एकंदर श्रमाच्या मानानें) तालमीपासून व्यायाम विशेष मिळत नाहीं असें दिसून येईल. ( ३ ) हा व्यायाम कांहींसा अवघड असल्या-मुळें तो अशक्त मनुष्यास विशेष उपयोगी पडत नाही. ( ४ ) मोकळी हवा मिळावी तितकी मिळत नाहीं.

खोखो, आठ्या-पाठ्या, क्रिकेट वगैरे खेळ खेळणारांत जो चपलपणा दिसतो तो नुसती तालीम करणाऱ्यांत दिसत नाहीं.

तालमीतील व्यायामाचे जे दोष वर दाखविले आहेत ते फक्त तालीम करून कुस्ती न करणारे लोकांचे व्यायामास लागू आहेत. जे लोक तालमीत कुस्ती करतात, ते तालमीतील माती खणण्याचा उद्योग करतात. खणतांना वांकावें लागत असल्याकारणानें पोटाच्या स्नायूंचें आकुंचन होतें; यामुळें खणतांना या स्नायूंस चांगला व्यायाम होतो. शिवाय कुस्ती करतांना तर सर्व अवयवांचें चलन होतें; म्हणून कुस्तीमुळें बहुतेक सर्व स्नायूंस श्रम होतात.

कुस्ती करण्यापासून हा विशेष फायदा होतो कीं, तिजमुळें अंगांत चपलता चांगली राहते.

तथापि शिकार करणाऱ्यांत जें चापल्य व जी तडफ राहते ती तालीम करणाऱ्यांत दिसत नाहीं, हा दोष आहे.

निरनिराळे सर्व प्रकारचे खेळ—( १ ) सर्व स्नायूंस व्यायाम मिळत नाहीं. पुष्कळ खेळांमध्ये फक्त एका उजव्या आंगच्या स्नायूंस श्रम होतात; यामुळें एकांगीपणा वाढतो.

§ तालीम, कुस्ती, पोहणें, व अंग तोलण्याचे खेळ यांशिवाय व्यायामाच्या बहुतेक प्रकारांनीं एकांगीपणा येतो.

( २ ) खेळास विशेष प्रकारची जागा, साधने व खेळगडी यांची आवश्यकता असल्यामुळे यांपैकी एखादे साधन अनुकूल नसल्यास खेळ बंद ठेवावा लागतो व व्यायाम घडत नाही.

( ३ ) खेळामध्ये पुरेसा व्यायाम होण्यास बराच वेळ मोडावा लागतो. उदाहरणार्थ, क्रिकेट किंवा खोखो खेळतांना आपल्यावर पाळी येईपर्यंत पुष्कळ वेळपर्यंत स्वस्थ बसून राहणे लागते.

( ४ ) व्यायामाच्या प्रमाणाचे नियमन व त्याची क्रमाने वाढ या गोष्टी साधतां येत नाहीत.

( ५ ) खेळाची वेळ आपल्यास सोईची नसेल, तर व्यायाम बुडतो.

**वायसिकल**—फक्त पायाचे स्नायूंस व्यायाम होतो.

पुढे वांकावे लागते यामुळे छातीस थोडा वांक येतो व खांदे पुढील बाजूस वांकतात.

वायसिकलवर बसलो असतांना अतिरिक्त श्रम झाले, तरी वेगाच्या व वाऱ्याच्या झुळकेच्या भरांत ती गोष्ट आपणांस कळून येत नाही. यामुळे कधी कधी शक्तीबाहेर व्यायाम होतो.

**शिकार**—सर्व स्नायूंस व्यायाम होत नाही. शरिराचे कांहीं भाग दुर्बल असल्यास क्रमाक्रमाने त्यांचा व्यायाम वाढवून त्यांस सशक्त करण्याचा प्रयत्न करतां येत नाही.

बहुतेक लोकांना हा व्यायाम घेणे अशक्य आहे.

अशक्तांना हा व्यायाम अपायकारक होण्याची भीति आहे.

खेळांतील बरेच दोष या व्यायामासही लागू आहेत.

दांडपट्टा, फरींगदगा इ०—सर्व स्नायूंस व्यायाम होत नाही. डाव्या आंगचे स्नायूंस व्यायाम न मिळाल्यानें एकांगीपणा वाढतो. थोड्या वेळांत पुरेसा व्यायाम मिळत नाही.

ज्यामध्ये सर्व स्नायूंना व्यायाम मिळतो अशा प्रकारची नवीन शास्त्रीय तालीम—चापल्य, तडफ, प्रसंगावधान वगैरे गुणांचा विकास होण्यास फारशी सवड नसते. ती कंटाळवाणी वाटते.

## व्यायामाच्या भिन्न प्रकारांतील गुण.

### देशी तालीम.

- १ परावलंबित्व फार कमी आहे.
- २ शक्ति वाढविण्यास फार उपयोगी आहे.
- ३ उपकरणांची आवश्यकता फारशी नाही.
- ४ थोडा वेळ पुरतो.

### खेळ.

- १ चापल्य, तडफ, प्रसंगावधान हे गुण येतात.
- २ व्यायाम आनंदांत होतो, यामुळे त्यापासून आरोग्यास फार फायदा होतो.
- ३ मोकळी हवा मिळाल्यानें रक्तशुद्धि चांगली होते.
- ४ सहानुभूति, मनुष्यस्वभावाचे ज्ञान, चाणाक्षपणा इत्यादिकांची वाढ होते.
- ५ चिडखोरपणा, एकलकोंडेपणा इत्यादि मनाचे दोष जातात.

५ चित्तवृत्ति उल्लसित राहते.

६ हस्तादि अवयवांचें कौशल्य वाढतें.

७ जे खेळ दोन टोळ्या किंवा पक्ष करून खेळावयाचे असतात ते खेळल्यानें सहकारित्वाची संवय लागते. जे खेळ दोन पक्षांमध्ये खेळावयाचे असतात ते खेळ खेळण्यास एकी, आज्ञाधारकत्व, आत्मविस्मृति, सहकारिशीलता वगैरे गुण लागतात; यामुळें या गुणांची वाढ होते. ज्या लोकांमध्ये हे गुण नसतात, त्यांच्या मुलांना टोळ्या करून खेळण्याचे खेळ विशेष आवडत नाहींत. युरोपियन लोकांपैकीं जे लोक ( उदाहरणार्थ इंग्लिश, जर्मन इ० ) एकी, सहकारिता वगैरे गुणांविषयीं प्रसिद्ध आहेत, अशा लोकांच्या मुलांना टोळ्यांनीं खेळावयाच्या खेळांची जितकी आवड आहे, तितकी इतर लोकांच्या मुलांना नाहीं असें अनुभवास येतें.

### बायसिकलः

जाण्याच्या वेगांत मोकळ्या हवेचा भरपूर पुरवठा फुफ्फुसांस होऊन रक्तशुद्धि होते व आनंदांत पुष्कळ व्यायाम होतो.

### शिकार.

धाडस, चापल्य, प्रसंगावधान इत्यादि गुण अंगीं येतात.

मोकळी हवा व सृष्टिसौंदर्य यांची आवड उत्पन्न होते.

### दांडपट्टा व फ़रीगदगा.

१ स्नायुचालनज्ञान वाढतें. अर्थात् नेम मारण्याचें सामर्थ्य वाढतें.

२ प्रसंगावधान येतें.

३ शत्रूचा तेव्हांच पराजय करूं अशी मनाची खात्री झाल्यामुळे अंगी धीटपणा येतो.

४ चलाखी येते.

सशास्त्र तालीम.

१ सर्व स्नायूंस व्यायाम मिळतो.

२ शरिराचा एखादा भाग दुर्बल असल्यास त्याची दुर्बलता घालवितां येते.

३ थोडा वेळ पुरतो.

४ व्यायाम क्रमाक्रमाने वाढवितां येतो.

५ शक्ति व आरोग्य वाढविण्यास हा व्यायाम फार उपयोगी पडतो.

## पूर्ण ( निर्दोष ) व्यायामपद्धति.

व्यायामांच्या भिन्न प्रकारांतील जे दोष दाखविले आहेत, त्यांवरून असें दिसून येईल कीं, व्यायामापासून जी इष्टसिद्धि व्हावयाची असते, ती पूर्णपणे होण्यास व्यायामाचा कोणताही एक प्रकार पुरेसा नाही. अशी स्थिति असल्यामुळे व्यायामाचा पूर्ण फायदा व्हावा अशी ज्यांना इच्छा असेल त्यांनी, व्यायामाच्या मुख्य तीन प्रकारांपैकीं प्रत्येक प्रकारचा व्यायाम केला पाहिजे. म्हणजे अंगांत धाडस, चापल्य व प्रसंगावधान येण्यास (१) शिकार केली पाहिजे; (२) सहानुभूति, हस्तकौशल्य, उल्लसितवृत्ति यांची वाढ होण्यास खेळ खेळले पाहिजेत, आणि (३) शिकार अथवा खेळ यामुळे

उत्पन्न होणारे दोष घालविण्यास व शरिरांतील व्यंगें घालविण्यास ( अर्थात् ज्या स्नायूंना वरील दोन प्रकारांत व्यायाम घडत नाही त्यांना व्यायाम देण्यास ) तालीम केली पाहिजे.

शारिरिक सामर्थ्य वाढण्यास सर्व प्रकारचे व्यायाम कमी जास्त प्रमाणानें आवश्यक आहेत, व त्यांपैकी कोणताही एक परिपूर्ण नाही हें विसरतां कामा नये.

## भाग ५ वा.

### शास्त्रयुक्त व्यायामपद्धति.

व्यायामापासून पूर्ण फायदा होण्यास तिन्ही प्रकारचे व्यायाम पाहिजेत म्हणून पूर्वीच्या भागांत सांगितलेंच आहे. पैकीं पहिल्या दोन प्रकारचे व्यायाम हे स्वतंत्र विषय असल्यामुळें व त्यांचा उपयोग करणें सामान्य मनुष्यास नेहमीं शक्य नसल्यामुळें व्यायामाचा तिसरा प्रकार जी तालीम तिच्यासंबंधानें पुढें माहिती दिली आहे.

तालमीच्या शास्त्रयुक्त पद्धतीमध्ये कोणते गुण असावे?

तालमीचे योगानें सर्व स्नायूंस व्यायाम घडला पाहिजे.

पोट, फुफ्फुसे व रक्ताशय हीं इंद्रियें रक्तोत्पत्तीस व रक्तशुद्धीस आवश्यक आहेत. म्हणून हीं इंद्रियें मजबूत करणारे व्यायाम असावेत. ( असे व्यायाम कोणते हें पुढें सांगितलें आहे. )

निरनिराळ्या स्नायूंस व्यायाम कांहीं क्रमाप्रमाणें व्हावा.

जवळजवळच्या किंवा एकमेकांशीं निकट संबंध असलेल्या स्नायूंस लागोपाठ व्यायाम होईल असा व्यायामक्रम नसावा.

फाजील श्रम होतील असा व्यायाम नसावा. फाजील व्यायाम केल्यानें फायद्याच्या ऐवजीं नुकसानच होतें हें विसरतां कामा नये.

शरिराचे दोन्ही अंगास स्वतंत्रपणे व्यायाम घडेल असा व्यायाम असावा.

शरिराच्या भिन्न अवयवांस आळीपाळीने विश्रांति मिळेल अशी व्यायामाची योजना असावी. पैसा जो जो अधिक खर्च करावा तो तो काम चांगले होतेंच असा नियम नाही; त्याप्रमाणे शरिरास जो जो श्रम अधिक तो तो व्यायाम अधिक फायदेशीर होतो असा नियम नाही. एकाच वेळी शरिराचे सर्व भागास श्रम झाल्याने, फार लवकर थकवा येऊन व्यायाम घडावा तितका घडत नाही. या कारणास्तव शरिरास थकवा न येतां पुष्कळ व्यायाम घडावा यासाठी शरिराचे एका भागास व्यायाम घडत असतां, इतर भाग दिले व स्वस्थ राहतील अशी योजना व्यायामांमध्ये असावी.

व्यायामापासून अंगी अष्टपैलूपणा यावा. म्हणजे तालमीचे योगाने विशिष्ट प्रकारच्या शारीरिक हालचाली करण्याचे सामर्थ्य येऊन पुरेसे नाही; तर खेळांत अथवा व्यवहारांत ज्या ज्या भिन्न हालचाली कराव्या लागतात त्या करण्यास तालमीचे योगाने पात्रता यावी.

व्यायामाने शरिरास सौंदर्य म्हणजे निरनिराळ्या भागांमध्ये प्रमाणशिरपणा यावा.

पुढील गुणही व्यायामापासून अंगी यावे:—शक्ति, कंटकपणा, सफाई, समतोलता, समाधानीपणा व आनंदीपणा

## शास्त्रीय व्यायामपद्धतीचा एक नमुना.

व्यायाम १ ला.

जोर काढवे. म्हणजे हाताच्या, छातीच्या, व पाठीच्या स्नायूंना व्यायाम मिळेल. जोर काढतांना मान खाली-वर चांगली वांकवावी, म्हणजे मानेच्या स्नायूंस व्यायाम मिळेल.

व्यायाम २ रा.

उठावशा काढाव्या. त्यांच्या योगानें पायाचे व कमरेचे स्नायूंस व्यायाम मिळेल.

व्यायाम ३ रा.

अ. जमिनीवर उताणें ताठ निजून एक एक पाय अनुक्रमानें वर आणावा व नंतर खाली न्यावा. असेंच दोन्ही पायांनीं एकदम करावें.

ब. ताठ उभें राहून हात वर करावे. नंतर हात भुईस टेकेतोंपर्यंत कमरेंत वांकावें व नंतर ताठ व्हावें.

वरील दोन्ही व्यायाम अनेक वेळां करावे.

या कसरतीचे योगानें पोटाचे स्नायूंस व्यायाम घडेल.

व्यायाम ४ था.

उभें राहून हात पुढील बाजूस ताठ पसरावे.

हात आडव्या पातळीत सावकाश फिरवून मागें न्यावे व असें करीत असतां टांचा सावकाश वर उचलून चवड्यावर उभें रहावें. हात मागें जातांना मान मागें न्यावी व छाती पुढें आणावी.

नंतर हात व डोकें पुढें आणीत आणीत टांच खालीं टेकवावी.  
हात मागें नेत असतां जोरानें पण सावकाश श्वास घ्यावा, व  
हात पुढें आणीत असतां जोरानें पण सावकाश श्वास सोडावा.

या कसरतीनें पावलाचे व छातीचे स्नायूंस ( विशेष थकवा न  
येतां ) व्यायाम घडेल.

### व्यायाम ५ वा.

अ. हात दोन्ही बाजूंस पसरून उभें रहावें.

उजवा पाय व उजवा हात वर करीत व चक्राकार फिरवीत  
कमरेजवळ डाव्या आंगास वांकावें. नंतर असेंच उजव्या  
आंगास वांकावें.

यायोगें पोटाच्या बाजूचे स्नायूंस व पायाचे अपकर्षक स्नायूंस  
व्यायाम मिळेल.

ब. पावलांमध्ये दीड हात अंतर ठेऊन उभें राहावें. नंतर तोंड  
व धड उजवीकडे वळवावें; हात ताठ पसरून धरावे व हाताच्या  
मुठी मिटाव्या.

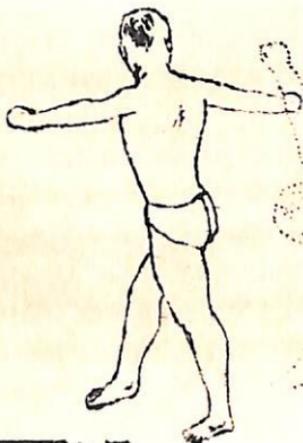
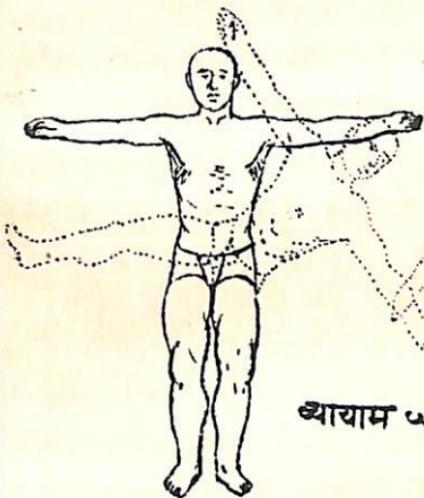
डाव्या हाताची मूठ मुईस लागे तोंपर्यंत डाव्या बाजूकडे  
कमरेंत वांकावें.

नंतर ताठ उभें होऊन डाव्या बाजूकडे धड वळवून पूर्वीप्रमाणें  
उजव्या हाताची मूठ मुईस टेके तोंपर्यंत उजव्या बाजूकडे कमरेंत  
वांकावें. याप्रमाणें प्रत्येक बाजूस पांच पांच वेळां वांकावें.

या व्यायामानें पोटाच्या बाजूचे स्नायु व यकृत् यांस  
बळकटी येते.

४५-४६ पानांतील व्यायामांचे

प्रकारां संबंधाने  
आकृति.



DEPARTMENT OF THE ARMY

OFFICE OF THE CHIEF OF MEDICAL DEPARTMENT

WASHINGTON, D. C.

REPORT OF THE CHIEF OF MEDICAL DEPARTMENT

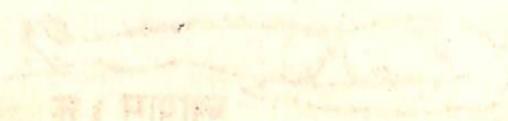


PLATE I

FIG. 1

FIG. 2

FIG. 3

FIG. 4

## व्यायाम ६ वा

जोडी करावी. या व्यायामानें मनगट व हातांचे इतर स्नायु यांस व्यायाम घडेल.

वर सांगितलेले व्यायामाचे सर्व प्रकार सावकाशपणें केल्यावर त्यांपैकी कांहीं भराभर करावे. म्हणजे आंगांत चपलता राहिल. दिवसांतून केव्हांतरी मोकळ्या हवेंत थोडेंसें पळावे. \* पळण्यानें आंगांत चपलता चांगली राहते व दम वाढतो.

आठवड्यांतून एकदां तरी उन्हाचे वेळीं डोंगर चढण्यास जावे. उन्हामध्ये डोंगर चढण्याची संवय केल्यानें ऊन्ह व श्रम सहन करण्याचा कंठकपणा आंगीं येईल.

वारवरील कांहीं कामें मधून मधून करावीं. सिंगलवारवरील कामानें खांद्याचे व पोटाचे स्नायूस उत्तम प्रकारची वळकटी येते. शक्य असेल तेव्हां मलखांबही करावा.

व्यायामानंतर स्नान करावे. † स्नान करतांना आंग चांगलें चोळावे, व स्नानानंतर रुमालानें आंग जोरानें पुसून आंगांत ऊब आणावी.

\* निदान एक फर्लांगपर्यंत खूप जोरानें पळतां येईल व एक मैलपर्यंत साधारण जोरानें पळतां येईल इतका दम प्रत्येक मनुष्यानें आपल्या अंगांत आणवावा.

† व्यायामानंतर स्नान करण्याची चाल आपल्याकडे नाही. जेथें अंगावर वारा येतो अशा उघड्याजागेत, व्यायामानंतर स्नान केल्यानें, किंवा स्नानानंतर आंग चांगलें कोरडें न केल्यानें अथवा स्नानानंतर उघड्या अंगानें हवेंत फिरल्यानें, थंडी होण्याची भीति असते; म्हणून वरील चाल पडली असावी असें वाटते. व्यायामानें घाम येऊन आंग अस्वच्छ होते म्हणून व्यायामानंतरच स्नान करणें चांगलें. पण तसें करतांना वर सांगितलेले दोष होऊं न देण्याबद्दल खबरदारी घेतली पाहिजे. तशी खबरदारी घेतां येत नसेल तर व्यायाम केल्यानंतर ११२ तासांनीं स्नान करावे हें वरें.

## भाग ६ वा.

व्यायाम करणारानीं लक्षांत ठेवावयाच्या गोष्टी.

सामान्य लोकांनीं व विशेषतः विद्यार्थ्यांनीं व्यायाम करण्यांत मुख्य हेतु कोणता धरावा?—शारीरिक संपत्ति कमाविणें म्हणजे अतिशय मोठी ओझी उचलण्याची शक्ति किंवा दोरीवर अथवा आडव्या काठीवर उभे राहून अनेक प्रकारच्या कसरती करण्याची शक्ति संपादन करणें होय, अशी जी कित्येकांची समजूत आहे ती चुकीची आहे. वरील गोष्टी शारीरिक संपत्तीचें एक अंग मानतां येईल, परंतु तीच सर्व शारीरिक संपत्ति नव्हे, हें विसरतां कामा नये. याचें कारण शारीरिक संपत्तीचा उपयोग काय व तिला महत्त्व कोणत्या कारणानें प्राप्त झालें आहे याचा विचार केल्यानें कळून येण्यासारखें आहे. मनुष्याची या आयुष्यांतलि इतिकर्तव्यता, सत्कृत्ये करणें ही आहे; व हा हेतु साध्य करण्यास लागणारीं साधनें म्हणजे ज्ञान, इच्छा-सामर्थ्य व शारीरिक सामर्थ्य हीं होत. पैकीं पहिलीं दोन साधनें बुद्धि व मन यांच्या शिक्षणानें प्राप्त होणारीं आहेत व तिसरें साधन शारीरिक शिक्षणाचे द्वारे प्राप्त होणारें आहे. जगामध्ये आपला जय होण्यास ज्या शारीरिक सामर्थ्याची जरूरी आहे तें सामर्थ्य हत्तीच्या बलाच्या रूपाचें नसून, तें चापल्य, कौशल्य,

आवेश, तडफ इत्यादि गुणांच्या स्वरूपाचें आहे. वाघ इतर श्वापदांवर आपलें वर्चस्व कां स्थापितो, किंवा जगामध्ये एक मनुष्य इतरांस आपल्या सामर्थ्यानें भारी कां होतो, याचें कारण शोधूं गेलें असतां तें आवेश, कौशल्य, तडफ इत्यादि गुणांमध्येच आढळून येईल. केवळ मोठें ओझें उचलण्याच्या शक्तीमुळें मनुष्य पराक्रमी होऊं शकत नाहीं. सैन्यरचना, डावपेंच व यांत्रिक शस्त्रास्त्रें या बुद्धिसामर्थ्याच्या योजनांचें ज्या वेळीं विशेष महत्त्व नव्हतें, अशा वेळचे पराक्रमी पुरुष पाहिले, तर त्यांमध्ये भीमासारखे केवळ शक्तिमान् पुरुष फार थोडे आढळून येतात. अर्जुन, कर्ण, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा हे पौराणिक वीर किंवा शिवाजी, बाजीराव, मल्हारराव, राघोबादादा हे ऐतिहासिक वीर पुरुष ओझें उचलण्यांत किंवा साखळदंड तोडण्यांत प्रसिद्ध होते, असे मुळींच दिसून येत नाहींत. उलट बाजूनें पाहिलें, तर पेशव्यांच्या वेळचे किंवा अलीकडचे पहारा वांकविणारे पैलवान युद्धांत विशेष उपयोगी पडत होते असेंही दिसून येत नाहीं. असें असण्याचें कारण काय हें पाहूं गेलें असतां असें दिसून येईल कीं, जगांतील संग्रामांत जे गुण विशेष उपयोगी पडतात, ते ओझें उचलण्याच्या शक्तीच्या जातीचे नसून ते आवेश, प्रसंगावधान, संधानकौशल्य अशा प्रकारचे असतात. ही युद्धाची गोष्ट झाली. लहानसान संग्रामांतही कोणते शारीरिक गुण विशेष उपयोगी पडतात हें पाहिलें तरी ते वरील गुणच आढळून येताल. दोन पक्षांत मारामारी झाली असतां मार खाणारे किंवा पळून येणारे

लोक टिकाव धरणाच्या लोकांपेक्षां जास्त मोठीं ओशीं उचलणारे असतात असें मुळींच नसतें. उलट आपणांस असें देखील म्हणतां येईल कीं, शिवाजी अथवा बाजीराव यांच्या सारख्या आवेशी व प्रसंगावधानी मनुष्याच्या हातांत काठी देऊन त्यांच्या आंगावर त्यांच्यापेक्षां जास्त शक्तीचे हातांत काठी घेतलेले २।४ इसम सोडले, तर ते इसम मार खाऊनच परत येतील. याप्रमाणें मारामारींतही केवळ शक्ति फारशी महत्त्वाची नाही. म्हणून त्या दृष्टीनेंही तिचें महत्त्व विशेष नाही. एरव्हीं व्यवहारांत पाहिलें तर तेथेंही केवळ शक्तीचा विशेष उपयोग नाही. शारीरिक गुणांपैकी कोणते गुण व्यवहारांत विशेष लागतात हें पाहिलें, तर ते उत्साह ( काम जोरानें व पुष्कळ वेळपर्यंत करण्याची ताकद ), चापल्य ( काम भराभरा करण्याची शक्ति ), कंटकपणा, ( ऊन्ह, पाऊस, थंडी, भूक, तहान वगैरे सहन करण्याची शक्ति ) अष्टपैलूपणा वगैरे गुण दिसून येतात. म्हणून शारीरिक संपत्ति कमाविणें म्हणजे वरील गुण संपादन करणें होय हें ध्यानांत ठेवलें पाहिजे व हा हेतु ध्यानांत धरून व्यायाम केला पाहिजे.

सामान्य लोकांनीं अलौकिक शक्ति संपादण्याची हांव धरूं नये— सामान्य लोकांना केवळ शक्तीपेक्षां निरोगी प्रकृति, चापल्य, प्रसंगावधान, अष्टपैलूपणा, तडफ या गुणांची आवश्यकता विशेष आहे म्हणून त्यांनीं मोठ्या जोड्या पेलण्याची किंवा फार जड डबेल्स वापरण्याची हांव धरूं नये. मन, बुद्धि व शरीर यांचा विकास करण्याचें शरीरांतील एकंदर सामर्थ्य कांहीं अंशीं

नियमित आहे व सामर्थ्याचा फाजील विनियोग शरीरवृद्धीकडे झाला म्हणजे मन व बुद्धि यांच्या विकासास कमीपणा येतो. फाजील शारीरिक श्रम केल्याने बुद्धिमांध येते ही गोष्ट प्रसिद्ध आहे. ग्रीक लोकांमध्ये पैलवान म्हणजे निर्बुद्ध मनुष्य असा समज झाला होता. अतिरिक्त मानसिक श्रमानेही शरीर दुर्बल होते ही गोष्टही अनुभवसिद्ध आहे. अशा प्रकारची स्थिति असल्यामुळे व हल्लींच्या काळी शारीरिक शक्तीपेक्षा बुद्धिसामर्थ्याची विशेष जरूरी असल्यामुळे बुद्धिमांध येईल किंवा चापल्य नष्ट होईल इतकी मेहनत करू नये. विशेषतः ज्यांना पुढे बुद्धिसामर्थ्याचा धंदा करावयाचा आहे त्यांनी अतिरिक्त मेहनत करू नये. अभ्यास करणाऱ्या मुलांनी अतिरिक्त व्यायाम केल्यामुळे त्यांना बुद्धिमांध आल्याची उदाहरणे आहेत; एवढेच नव्हे, तर अतिरिक्त व्यायाम व अतिरिक्त अभ्यास ही दोन्ही एकाच वेळी केल्यामुळे प्रकृतीचे कायमचे नुकसान झाल्याची उदाहरणेही पाहण्यांत आहेत. म्हणून बुद्धिसामर्थ्याचा धंदा ज्यांना करावयाचा आहे अशा विद्यार्थ्यांनी व्यायाम करण्यामध्ये शक्तिसंपादन हा हेतु मुख्य न धरतां इंद्रियांची मजबुती, आरोग्य, चापल्य, उत्साह, इत्यादिकांचे संपादन करणे हा हेतु मुख्य धरावा.

**एकाग्रता**—कोणताही उद्योग करतांना त्यामध्ये आपले मन नसेल, तर त्या उद्योगापासून आपल्या शक्तीस फायदा होत नाही. याकरितां शक्तीचा विकास व्हावा या हेतूने जो उद्योग करावयाचा त्यामध्ये आपले मन पाहिजे. लोहार किंवा घिसाडी रोज पुष्कळ काम करतो, परंतु त्याचे शरीर पैलवानाइतके तयार होत नाही.

याचें कारण, पैलवानाचें मन जसें मेहनतींत असतें, तसें घिसाड्याचें नसतें, हें होय. पैलवान शोकाकारितां मेहनत करतो व घिसाडी पोटासाठीं मेहनत करतो. यामुळें हा फरक पडतो. इतर शक्तींची वाढ होण्यासही ही गोष्ट लागू आहे. गवयाचा शिष्य गवयाचें गाणें ऐकतो त्याप्रमाणें तबलजीही ऐकतो; परंतु त्या ऐकण्याचा फायदा गायन शिकूं इच्छिणाऱ्या शिष्यास जसा होतो, तसा तबलजास होत नाहीं. याचें कारणही एकाचें त्या गोष्टीकडे लक्ष असतें व दुसऱ्याचें नसतें हें होय.

आपण जो उद्योग करतो त्याकडे लक्ष असल्यानेच शक्तीचा विकास विशेष होतो याचें कारण पुढील प्रमाणें आहे. कोणत्याही इंद्रियाचा विकास होण्यास त्या इंद्रियास रक्ताचा भरपूर पुरवठा झाला पाहिजे व रक्ताचा भरपूर पुरवठा होण्यास त्या इंद्रियावर मनाची एकाग्रता झाली पाहिजे. जी क्रिया आपण करतां तिजमध्ये आपलें मन असलें म्हणजे ती क्रिया ज्या अवयवांनीं करावयाची असते त्यांच्यावर मनाची एकाग्रता झाल्याने त्याचेकडे रक्ताचा प्रवाह जैरानें जातो.

सर्व शरिरांत रक्ताचा प्रवाह एकसारखा फिरत असतोच; पण एकाद्या भागांत रक्ताचा प्रवाह विशेष जाणें हे त्या भागावर मनाची एकाग्रता होण्यावर अवलंबून आहे असें दिसून येतें. ही गोष्ट प्रयोगानें सिद्ध झाली आहे. याविषयी पुढीलप्रमाणें प्रयोग केला होता. ताजव्याची दांडी ज्या प्रकारच्या तिकोनी ( कुन्हाडीसारख्या किंवा पाचरीसारख्या ) तुकड्याचे धारेवर उभी केली असते, तशा

प्रकारच्या तुकड्यावर एक फळी आडवी ठेवून ती समतोल केली होती. ही फळी समतोल राहिल अशा रीतीने तिजवर एका मनुष्यास आडवे निजविले होते. नंतर या मनुष्यास एक तोंडचा हिशेब किंवा सोपे उदाहरण करण्यास सांगितले; तेव्हां त्याच्या डोक्याकडील फळीची वाजू खाली जाऊ लागली. नंतर त्यास मनाची एकाग्रता पायावर करावयास सांगितले; त्या वेळी त्याच्या पायाकडील वाजू खाली जाऊ लागली.

या प्रयोगावरून हे उघड दिसते की, शरिराच्या ज्या भागावर मनाची एकाग्रता होते, त्या भागामध्ये रक्ताचा प्रवाह जोराने जातो.

इंद्रियावर मनाची एकाग्रता झाल्याने त्यास रक्ताचा पुरवठा होत असल्याने, शरिराचे हितासाठी जो व्यायाम करावयाचा त्यामध्ये आपले मन पाहिजे. म्हणून व्यायाम करतांना तो उत्साहाने व शरिराच्या त्या त्या भागावर मनाची एकाग्रता करून केला पाहिजे. व्यायाम करतांना मनामध्ये दुसरे विचार न आणतां जो व्यायाम चालू असेल त्याशी तादात्म्य पावावे. उदाहरणार्थ, जोर काढित असतां दुसऱ्या तिसऱ्या गोष्टींचा विचार न करतां दंडावर मनाची एकाग्रता करावी; व माझ्या दंडाकडे रक्ताचा प्रवाह चालला आहे व ते फुगत आहेत अशी मनाची भावना करावी. असेच इतर सर्व व्यायामासंबंधाने करावे.

इच्छेविरुद्ध व्यायाम केला तर त्यापासून व्हावा तितका फायदा होत नाही. याकरितां मुलांकडून केवळ सक्तीने व्यायाम करून

खेळं नये. व्यायामाचें महत्त्व त्यांना सांगून अथवा व्यायामानें होणारी सुधारणा त्यांना दाखून व्यायाम करण्यास त्यांना उद्युक्त करावें.

खेळांतील व्यायाम मुलें स्वतःच्या खुषीनें करतात. यामुळें त्यापासून त्यांना फायदा होतो. म्हणून ज्यांपासून व्यायाम होतो असे खेळ मुलांस अवश्य खेळू द्यावे.

व्यायामापासून फायदा होण्यास त्यामध्ये आपलें मन पाहिजे हें कधींही विसरतां कामा नये.

चलन सावकाश व अनेकवेळां व्हावें—शक्ति वाढविण्याकरितां म्हणून जो व्यायाम करावयाचा तो सावकाश व अनेक वेळां केला पाहिजे. व्यायामापासून होणाऱ्या विकासाचें परिमाण (स्नायूनें उचलले जाणाऱ्या) वजनाचे प्रमाणावर विशेष अवलंबून नसून हालचालीच्या संख्येवर मुख्यतः अवलंबून आहे. उदाहरणार्थ, दंड मोठे करणें असतील तर ती गोष्ट १० शेरांचें वजन दिवसांतून दहापांच वेळां उचलण्यापेक्षां १ शेराचें वजन १०० वेळां उचलण्यानें जास्त लवकर साध्य होते. स्नायूंची वाढ होण्यास त्यामध्ये रक्ताचा प्रवाह जास्त प्रमाणानें व पुष्कळ वेळां गेला पाहिजे. स्नायु सावकाश हालविल्यानें त्यांत रक्ताचा प्रवाह स्नायूच्या निरनिराळ्या भागांचें पोषण करीत सावकाश जातो, व स्नायु अनेक वेळां हालविल्यानें त्यांचें पोषण अनेक वेळां होतें; म्हणून स्नायूंचें चलन सावकाश व अनेक वेळां झाल्यानें त्यांचा विकास चांगला होतो. ज्याप्रमाणें अन्न एकदम भराभरा खाण्यापेक्षां सावकाश व २।३ वेळां खाल्ल्यानें शरिरास

जास्त फायदा होतो, त्याप्रमाणेच व्यायामाची स्थिति आहे. म्हणून पंधरा मिनिटांत भराभरा व्यायाम घेण्यापेक्षां तेवढाच व्यायाम सावकाश व दिवसांतून दोनदां घेणे अधिक फायदेशीर आहे.

व्यायाम करतांना फार मोठ्या वजनाच्या जोड्या किंवा डम्बेल्स घेणे हेही चुकीचे आहे. मोठ्या जोडीनें अथवा डम्बेल्सनीं लवकर थकवा येतो, यामुळे त्यांचे हात कमी होतात. या कारणानें अशा व्यायामापासून व्हावा तितका फायदा होत नाही.

व्यायामांतील हालचाली सावकाश केल्यानें शक्ति वाढेल, परंतु चापल्य येणार नाही; आणि सामान्य मनुष्यास तर शक्तीइतकीच, किंवाहुना शक्तीहूनही अधिक, चापल्याची आवश्यकता असते. याकरितां कांहीं व्यायाम जलदीनें अथवा वेगानें करावे. तालमीबरोबरच कुस्ती केली किंवा दांडपट्टा अथवा दुसरे चापल्य आणणारे खेळ खेळले म्हणजे हा दोष नाहीसा होणारा आहे.

व्यायामशालेंत आरसा असावा.—शक्य असेल तर व्यायाम करावयाच्या जागी, व्यायाम करण्याचे ठिकाणासमोर, आरसा लावावा व व्यायाम करतांना आपले प्रतिबिंब आरशांत पहावे. असें केल्यापासून दोन फायदे होतात. एक, आपल्या हालचाली आरशांत पाहिल्यानें त्यांमध्ये कांहीं चूक—बेढबपणा, चुकीची दिशा वगैरे—असल्यास ती समजून येते; व दुसरा, आरशांत आपले अवयव दृष्टीस पडल्यानें त्यांचेवर एकाग्रता करणे सोपें जाते. ज्यास व्यायामाची गोडी नाही अशा मनुष्यानें रोज आरशांत शरीर पाहून त्यांमध्ये होणारा फरक पाहिला, म्हणजे त्यास

आपल्या शरिरासंबंधाने प्रेम व अभिमान उत्पन्न होऊन त्याला व्यायामाची गोडी लागेल.

**कपडे.**—तालीम करतांना अंग जितकें उघडें राहिल तितकें चांगलें. म्हणजे तालीम करतांना लंगोटाशिवाय दुसरा कोणताही कपडा अंगावर असूं देऊं नये. अंगांत कपडा असल्यानें शरिराच्या हालचालीस व स्नायूच्या विकासास प्रतिबंध होतो. शिवाय शरीर उघडें राहिल्यानें शरिरास मोकळी हवा मिळण्याचा जो प्रसंग येतो तो अंगांत कपडे घातल्यानें येत नाहीं. आपण ज्याप्रमाणें नाकानें स्वच्छ हवा आंत घेतों व शरिरांतील घाण वायु बाहेर सोडतो, त्याप्रमाणें त्वचाही आंत हवा घेण्याचें व शरिरांतील घाण बाहेर टाकण्याचें काम करीत असते. हा जो त्वचेचा श्वासोच्छ्वास तो नीट चालण्यास त्वचा जितकी मोकळी राहिल तितकें चांगलें असते. तालीम करतांना नाकाचा श्वासोच्छ्वास जसा भराभर चालतो, त्याप्रमाणें त्वचेचा श्वासही जोरानें चालतो. या कारणास्तव तालीम करतांना आंग उघडें ठेवावें हें चांगलें. तथापि व्यायाम करण्याच्या जागीं अंगावर गार वारा येत असेल तर अंगांत सैल सद्रा राहूं द्यावा.

**व्यायामास वेळ.**—व्यायामास वेळ सकाळ किंवा संध्याकाळ चांगली. व्यायामानंतर थोडी विश्रांतीची आवश्यकता आहे, म्हणून विश्रांति घेण्यास सकाळीं अवधि मिळत नसेल तर व्यायाम संध्याकाळीं घेणें बरें. एरव्हीं सकाळची वेळ फार चांगली. ज्या वेळीं हवेंत गारवा असतो त्यावेळीं व्यायाम करणें चांगलें. कारण अशा वेळीं थकवा

नयेतां जास्त व्यायाम आपल्या हातून घडतो. सकाळीं हवेत गारवा असतो व हवा फार स्वच्छ व आल्हादकारक असते म्हणून ही वेळ व्यायामास फार चांगली आहे.

**भोजनोत्तर व्यायाम करूं नये.**—जेवणानंतर कमीत कमी दोन तासपर्यंत व्यायाम करूं नये. ज्यावेळीं एखाद्या इंद्रियाकडून काम व्हावयाचें असतें, त्यावेळीं त्या इंद्रियाकडे रक्ताचा प्रवाह जोरानें चालतो. कारण रक्त हें शरीररूपी एंजिन चालविणारी वाफ आहे. जेवणानंतर पोटांमध्ये अन्नपचनाचें काम चालवयाचें असतें म्हणून ज्यावेळीं पोटाकडे रक्ताचा प्रवाह जोरानें चाललेला असतो.\* म्हणून जेवणानंतर लागलीच व्यायाम केल्यानें, ज्या अवयवांना व्यायाम घडत असतो त्यांकडे पोटाकडील रक्ताचा प्रवाह जातो व पोटांत रक्ताचा पुरवठा कमी पडून पोटांतील अन्नपचनाचे कामास प्रतिबंध होतो. या कारणानें अन्नपचन बरोबर होत नाही. म्हणून जेवणानंतर व्यायाम करूं नये; एवढेंच नव्हे, तर विशेष श्रम पडणारें दुसरें कोणतेंही काम कांहीं वेळपर्यंत करूं नये.

**व्यायामाचें प्रमाण.**—व्यायाम आपल्या शक्तीप्रमाणें करावा व तो क्रमाक्रमानें वाढवावा. व्यायाम वाजवीपेक्षां कमी केल्यानें अथवा वाजवीपेक्षां थोड्या प्रमाणानें वाढवीत गेल्यानें जें नुकसान होण्याचा संभव आहे, त्याहून वाजवीपेक्षां जास्त व्यायाम केल्यानें पुष्कळ जास्त नुकसान होणारें आहे. म्हणून व्यायाम बेतानें करावा व बेतानेंच वाढवावा.

\* जेवणानंतर मेंदूस व इतर इंद्रियांस सुस्ती येते याचें कारण त्यांतील रक्ताचा प्रवाह कमी होतो हेंच होय.

**मोकळी हवा.**—जेथें हवा खेळती आहे अशा जागेंत व्यायाम करावा. घाम आलेल्या अंगावर वारा लागल्यानें अपाय होतो, म्हणून वारा अथवा हवा स्वभावतःच अपायकारक आहे अशी जी सर्वसामान्य समजूत आपल्या लोकांमध्ये झालेली आहे ती निराधार आहे. घाम आलेल्या अंगावर वारा लागल्यानें अथवा शरिराचा भाग वारा लागून फार थंड झाल्यानें प्रकृतीस अपाय होतो, ही गोष्ट खरी आहे; परंतु त्यावरून हवा अपायकारक आहे असें मानणें म्हणजे कडक उन्हांत फार वेळ बसल्यानें अपाय होतो म्हणून ऊन स्वभावतःच अपायकारक आहे असें मानण्यासारखें वेडगळपणाचें आहे. ऊन जसें प्राणिमात्राचें जीवन आहे तशीच हवाही आहे. रक्तशुद्धीस आक्सिजन वायु अवश्य आहे हें आतां शिकलेल्या बहुतेक सर्व लोकांस माहीत झालें आहे. आपल्या फुफ्फुसांना आक्सिजनचा भरपूर पुरवठा होण्यास स्वच्छ हवेचा भरपूर पुरवठा झाला पाहिजे; व व्यायाम करतांना तर रक्तशुद्धीची क्रिया जोरानें चाललेली असते, म्हणून अशा वेळां शुद्ध हवेच्या भरपूर पुरवठ्याची विशेष आवश्यकता आहे. याकरितां व्यायामाच्या जागेंत स्वच्छ हवा खेळती राहिल अशी व्यवस्था केली पाहिजे.† व्यायामाच्या जागेंतील हवेचें येणेंजाणें बंद करणें हें घरांतील पाण्याची तोटी व मोरीचें तोंड हीं बंद करून घरांतील घाण पाण्याचा उपयोग करण्यासारखें अस्वच्छपणाचें व अपायकारक आहे.

† आपण जो श्वास बाहेर टाकतो त्यांत विषारी वायूच प्रमाण इतकें असतें कीं, दोन तासांच्या उच्छ्वासांतील सर्व विषारी वायु एकत्र केला तर त्यांतील विषानें एक मनुष्य तत्काळ मरेल. या कारणास्तव आपल्या भोंवतालची हवा खेळती ठेवणें अवश्य आहे.

श्वासोच्छ्वास नेहमीं नाकानें करावा. तो तोंडानें कधींही करूं नये.—नाकांत श्लेष्मा व केंस असतात, त्यायोगानें नाकांतून हवा जात असतां त्यांत जो केर किंवा घाण असते ती केंसांस लागून किंवा श्लेष्म्यास लागून अडविली जाते व हवा जणूं काय गाळली जाऊन पुढें जाते. तसेंच हवा नाकाच्या लांब व वांकदार नळींतून जात असतां तिला या नळीच्या स्पर्शानें उबदारपणा येतो. अशा प्रकारें नाकाच्या योगानें हवा गाळली जाऊन उबदार होत असल्यामुळें, तिच्यांतील घाणीचा अथवा तिच्या गारव्याचा फुफ्फुसांवर परिणाम होत नाही. अशा प्रकारची व्यवस्था तोंडांत केली नसल्यामुळें तोंडानें श्वासोच्छ्वास केल्यानें फुफ्फुसांस अपाय होण्याची भीति असते.

कित्येक क्षय रोग्यांचीं तोंडें नेहमीं उघडीं असतात व ते तोंडानें श्वासोच्छ्वास करीत असतात. यावरून तोंडानें श्वासोच्छ्वास करणें अपायकारक आहे,—निदानांनीं तें वाईट लक्षण आहे—असें दिसून येईल. नाकानें श्वासोच्छ्वास करण्याची संवय लहानपणापासून मुलांस लावण्याची खबरदारी आईवापांनीं जरूर घ्यावी.

व्यायामास निषिद्ध प्रसंग.—एखादा क्षीणता आणणारा विकार झाला असतां, अथवा अतिरिक्त मानसिक श्रम केल्यानंतर लागलीच, व्यायाम करूं नये. मानसिक व शारीरिक श्रम करण्यास जी शक्ति लागते, ती प्रत्येक व्यक्तीमध्ये नियमित असते. या शक्तीचा उपयोग एक प्रकारचे श्रम करण्यांत ज्या मानानें कमी अथवा अधिक होईल, त्या मानानें तिचा जास्त अथवा कमी भाग इतर प्रकारचे श्रमाचे वांट्यास

येतो. म्हणून मानसिक श्रम फार झाले तर शारीरिक श्रम कमी केले पाहिजेत, व शारीरिक श्रम फार झाले तर मानसिक श्रम कमी केले पाहिजेत. वरीलपैकी एका प्रकारचे श्रम विशेष झाल्यास दुसऱ्या प्रकारचे श्रम होत नाहीत हा अनुभव सर्वास आहेच. ही जी श्रमाची स्वाभाविक मर्यादा आहे, तिचें अतिक्रमण केल्यास शरिरांतील शक्तीचा सांठा कमी होऊन प्रकृतीत क्षीणता येते. याकरितां शक्तीच्या मर्यादेबोहर जाईल असा व्यायाम घेऊ नये. अन्नपचन बरोबर झालें नाहीं एवढ्याच प्रकारचें अजीर्ण झालें असेल तर सौम्य व्यायाम करण्यास हरकत नाहीं; परंतु जोराचें अजीर्ण झालें असतां व्यायाम करूं नये. तसेंच ज्वर अमांश, अतिसार इत्यादि कोणत्याही तीव्र विकारांतही पूर्ण विश्रांति घेणें जरूर आहे.

यासंबंधानें वाग्भटाचें वचन पुढीलप्रमाणें आहे:—

वातपित्तामयी बालो वृद्धोऽजीर्णी च तं त्यजेत् ।\*

ज्याला अजीर्ण किंवा वातपित्तात्मक विकार झाले आहेत त्यानें, म्हाताऱ्यांनीं व मुलांनीं ( सोळा वर्षांच्या आंतील ) व्यायाम करूं नये.

\* व्यायामासंबंधानें वाग्भटांत पुढीलप्रमाणें माहिती आहे:—

लाघवं कर्मसामर्थ्यं दीप्तोऽग्निर्मेदसः क्षयः ॥

विभक्तघनगात्रत्वं व्यायामादुपजायते ।

अर्धशक्त्या निषेव्यस्तु बालिभिः स्निग्धभोजिभिः ॥

शीतकाले वसंतेच मंदमेव ततोऽन्यदा ।

तं कृत्वानुसुखं देहं मर्दयेच्च समंततः ॥

तृष्णा क्षयः प्रतमको रक्तपित्तं श्रमः क्लमः ।

अतिव्यायामतः कासो ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

कसरतीचे कांहीं अनिष्ट प्रकार.—शरिराच्या ज्या भागास स्वाभाविक लवचिकपणा नाही, तसेंच ज्या भागांत लवचिकपणाची जरूरी नाही त्या भागास लवचिकपणा आणणाऱ्या कसरती प्रकृतीस हितकारक नसून अपायकारक असतात. शरिराची कमान करणे, अंगाची घडी करणे, वगैरे कामे कांहीं पैलवान व कसरत करणारे लोक करतात म्हणून हीं कामे करणे शारीरिक सामर्थ्याचे लक्षण आहे, अशी कांहीं लोकांची जी समजूत झाली आहे ती चुकीची आहे. पाठ विशेष वांकविण्यापासून कसलाही फायदा नाही व तिची घडी करण्याचे प्रसंग व्यवहारांत कधीही येत नाहीत. धड हा एका अर्थानें शरीराचा पाया असल्यामुळे तो

[ मागील पृष्ठावरून पुढें चालू. ]

व्यायामजागराध्वस्त्रीहास्यभाष्यादि साहसम् ।

गजं सिंह इवाकर्षन् भजन्नति विनश्यति ॥

व्यायामापासून अंग हलकें होतें, काम करण्याचें सामर्थ्य येतें, भूक वाढते, वात झडतो, व शरीर पीळदार आणि घट्ट होतें. स्निग्ध आहार करणाऱ्या व वळकट पुरुषांनीं शीतकाळीं व वसंतऋतूमध्ये आपल्या शक्तीच्या निम्मे व्यायाम करावा. इतर ऋतूमध्ये अगदीं अल्प व्यायाम करावा. अतिव्यायामापासून तृषा, क्षय, श्वास, रक्तपित्त, श्रम ग्लानी, खोकला, ताप व वांति हे विकार उत्पन्न होतात. व्यायाम, जागरण, मार्गक्रमण, स्त्रीसेवन, हास्य व भाषण करणे इ० साहसांचें अतिसेवन करणारा मनुष्य हत्तोवर हल्ला करणाऱ्या सिंहाप्रमाणें नाश पावतो.

वाग्भट.

अध्याय २ श्लोक ९-१३.

भाग ईश्वरानें ताठ व मजबूत केला आहे. कण्याची रचना पाहिली तर असें दिसून येतें की, तो विशेष मर्यादेचे पुढें वांकू नये अशीच योजना त्याच्या रचनेमध्ये केली आहे. असें असतां तो वांकविण्याचा प्रयत्न करणें हें ईश्वरी योजनेचे विरुद्ध आहे. म्हणून अंगाची घडी करण्याच्या ज्या कसरती असतात, त्या करूं नयेत. त्या करण्यापासून सामर्थ्य विलकूल न वाढतां ज्या भागांत ताठपणा असणें विशेष महत्त्वाचें आहे त्या भागास दुर्बलता येते. तथापि पाठीतील कांहीं स्नायूंंस व्यायाम मिळण्याकरितां पाठ मागील वाजूस थोडीशी वांकविणें अवश्य आहे हें ध्यानांत ठेवलें पाहिजे. मात्र ती वाजवीपेक्षां जास्त वांकविणें चांगलें नाहीं.

व्यायामानंतर स्नान करणें हितावह आहे.—व्यायामानें घाम सुटून आंग अस्वच्छ होतें व थोडा थकवाही येतो. अस्वच्छता आणि थकवा नाहींसा करण्यास स्नान हा उत्तम उपाय आहे. स्नान केल्यानें शरीर स्वच्छ होतें व त्वचेतील घामाच्या रंध्रांची तोंडे मोकळी होतात आणि हुषारी वाटते.

स्नान थंड पाण्यानें करावें. पोहण्याची सोय असल्यास पोहणें उत्तम. मात्र पोहण्याच्या मर्यादेचें अतिक्रमण करतां कामा नये. थंड पाण्यानें स्नान करण्याची संवय पूर्वीं नसल्यास ती हळू हळू करावी. या संवयीस प्रारंभ उन्हाळ्यांत करावा म्हणजे थंड पाणी वाधण्याची भीति राहणार नाहीं. इतर ऋतूंत थंड पाण्याचे स्नानास आरंभ करणें असेल तर प्रथम कोमट पाणी

स्नानास ध्यावें व रोज पाण्यांत जास्त जास्त विसण घालून पाण्याची उष्णता कमी करीत आणावी. याप्रमाणें उष्णता कमी करतां करतां शेवटीं थंड पाण्यानें स्नान करावें.

स्नान करतांना अंगावर वारा लागूं देऊं नये. स्नान केल्यावर अंगावर वारा एकसारखा वाहत राहिल तर शरिरास एकदम गारवा येऊन थंडी होईल. म्हणून उघड्या जागेत स्नान करणें असेल व तेथे जोराचा वारा वाहत असेल तर स्नान केल्यावर लागलीच अंगावर पांघरूण ध्यावें. थंड पाण्यानें स्नान केल्यावर नमस्कार घालणें, उन्हांत धोतरें धुणें, किंवा थोडेंसें उन्हांत फिरणें वगैरे शरिरांत ऊब आणणारा किंवा अंगास घाम आणविणारा व्यायाम घडेल तर थंड पाण्यानें थंडी होण्याची भीति राहणार नाही.

ज्यांना ऊन पाण्यानें स्नान करणें अपरिहार्य असेल, त्यांनीं ऊन पाण्यानें स्नान केल्यावर शेवटीं अंगावर थंड पाण्याचे २।३ तांबे ध्यावे\* व अंग कोरडें करावें. आणि अंगांत चांगली ऊब येईतोंपर्यंत अंग रुमालानें जोरानें चोळावें. या योगानें शरिरास दार्ढ्य येऊन हुषारी वाटते.

### स्नानाविषयीं सँडोचें मत.

१ व्यायाम केला कीं, शीतस्नान केलेंच पाहिजे; मग तो व्यायाम तुम्ही केव्हांही घ्या. व्यायामापासून पूर्ण फायदा व्हावा अशी ज्यांची इच्छा असेल त्यांनीं या गोष्टीची उपेक्षा विलकूल करतां कामा नये. व्यायाम केल्यानंतर अंगास कितीही घाम आलेला

\* ही गोष्ट लोकांच्या समजुतीच्या विरुद्ध आहे, पण तीस कांहीं वैद्यशास्त्रज्ञांची संमति आहे. तथापि असें करावें असा आग्रह नाही.

असला तरी बेलाशक थंड पाण्याने स्नान करावे. मात्र व्यायाम करित असतां लागलेला दम बंद होईपर्यंत स्नान करू नये.

३ ज्यांना कांहीं कारणाने शीतस्नान करवत नसेल त्यांनी थंड पाण्यांत भिजवलेले रुमाल घेऊन आंग पुसून काढावे. मात्र हें काम झटपट केले पाहिजे. ओल्या रुमालाने आंग पुसल्यावर तें लागलीच कोरड्या रुमालाने पुसावे. शरिराचा निमा भाग ओला व निमा भाग कोरडा, अथवा निमा भाग गारठलेला व निमा ऊबदार असा फार वेळ ठेवल्याने अपाय होण्याचा संभव असतो; म्हणून सर्व आंग ओल्या रुमालाने झटदिशी चोळणे व तें झटदिशी कोरडे करणे अवश्य आहे.

४ वारंवार शैत्यबाधा न होण्यास शीतस्नान हा एक उत्कृष्ट उपाय आहे.

२ व्यायामानंतरचें शीतस्नान म्हणजे थंड पाण्यांत डुंबत बसणे नव्हे. हें शीतस्नान म्हणजे स्नानाचे हौदांत उडी टाकून लागलीच बाहेर येणे हें होय. उन्हाळ्याचे दिवसांत पाहिजे तर १० ते १५ सेकंद ( मिनिटे नव्हेत ) पाण्यांत रहावे. ( ही गोष्ट इंग्लंडसंबंधाने आहे. तथापि याचा अर्थ एवढा स्पष्ट आहे की, फार वेळ पाण्यांत राहणे चांगले नाही. )

५ ज्यांचे रक्ताशय अशक्त असेल त्यांनी शीतस्नान करू नये. व्यायाम झाल्यावर ४।५ मिनिटांत हृदयाचे धडधडणे बंद झाले पाहिजे. तेवढ्या वेळांत तें बंद न होईल तर रक्ताशय दुर्बल किंवा विकृत आहे असे समजले पाहिजे. अशी स्थिति ज्यांची असेल त्यांनी व्यायामानंतर शीतस्नान करू नये.

मर्दन.—शक्य असेल तेव्हां व्यायामानंतर आंग स्वतः चोळवें किंवा दुसऱ्याकडून चोळून घ्यावें. आंग चोळण्यानें किंवा चेपण्यानें व्यायामाचा थकवा जातो एवढेच नव्हे तर त्यापासून मांसवृद्धीस मदत होते. स्नायु दाबल्यानें त्यांतील निर्जीव द्रव्य बाहेर जाण्यास मदत होते व स्नायूंवरील दाब काढून घेतल्यावर त्यांमध्ये जो रक्ताचा प्रवाह जोरानें जातो, त्यामुळे त्यांचे पोषणास मदत होते. या कारणानें स्नायु चेपण्यापासून शरिरास फायदा होतो. आंग दुखत असेल तर तें चेपण्यापासून दुखावयाचें राहतें व मनास हुशारी वाटते असा आपला अनुभव आहेच.

आंग चेपणें किंवा मर्दन करणें हा एक व्यायामाचा प्रकार आहे; म्हणून ज्यांना कांहीं कारणानें व्यायाम घेतां येत नसेल त्यांनीं या व्यायामाचा उपयोग करावा. या व्यायामांत अशी एक सोय आहे कीं, यानें श्रम न होतां व्यायाम केल्याचा बहुतेक फायदा मिळतो. नेहमींच्या व्यायामानें फायदा होतो याचें कारण व्यायाम करण्यानें शरिरांतील घाण बाहेर टाकली जाऊन स्नायूंंस रक्ताचा पुरवठा जोरानें होतो व त्यायोगानें त्यांचें चांगलें पोषण होतें हें आहे; व कांहीं अंशीं हाच परिणाम चेपण्यापासून होतो असें दिसून येतें. कारण, चेपण्यानें स्नायु दाबले जाऊन त्यांतील निर्जीव व अपायकारक द्रव्य बाहेर टकलिलें जातें व त्यांस रक्ताचा जास्त पुरवठा होतो. म्हणून चेपून घेणें शरिरास हितावह आहे. मात्र या गोष्टीची कायमची व दुस्त्याज्य संवय लागतां उपयोगी नाही. शिवाय स्वतः व्यायाम न करतां मर्द-

नाचे व्यायामावर काम भागविणे हा अनिर्वाहपक्ष आहे हे ध्यानांत ठेविले पाहिजे.

आंगाचे मर्दन करतांना तेल लावण्याची जी पद्धति आहे, ती चांगली आहे. मात्र या तेलाचा ओषटपणा पुरता निघून जाईल अशी व्यवस्था केली पाहिजे. आंग तेलकट ठेवणे हितावह नसते, कारण आंग तेलकट ठेवल्याने घामाची भोके बंद होऊन घाम जाण्यास प्रतिबंध होतो. शिवाय तेलकटपणामुळे अंगावर धुराळाही जास्त चिकटून बसतो. हजामतीनंतर तेल लावून कांहीं वेळ बसल्याने मनास अस्वस्थता कशी वाटते याचा आपणांस अनुभव आहेच.

**तालीम करण्यास प्रथम आरंभ करणाऱ्यांस सूचना.**

आपल्या शक्तीवाहेर तालीम केल्याने प्रकृतीस कायमचा अपाय होतो. म्हणून आपली ताकद पाहून व्यायामाचे प्रमाण ठरवावे.

व्यायाम वाढविणे तो क्रमाक्रमाने वाढवावा. वाजवीपेक्षा कमी व्यायाम केल्याने म्हणण्यासारखा तोटा होत नाही, पण वाजवीपेक्षा जास्त व्यायाम केल्याने शरिरास कायमची इजा होते हे लक्षांत ठेवावे.

तालीम करण्यास प्रथम प्रारंभ केल्यावर दुसऱ्या दिवशी आंग दुखते; पण त्याविषयी विलकूल काळजी करू नये. आंग थोडे चोळून घेतले म्हणजे हे दुखणे कमी होते व तशाच स्थितीत मेहनत करण्याचे चालू ठेवल्याने हे आंग दुखणे आपोआप थांबते.

### व्यायामासंबंधानें किरकोळ सूचना.

जेवणानंतर सुमारे दोन तासपर्यंत तरी कोणत्याही प्रकारचा व्यायाम करूं नये.

मुकेनें अतिशय व्याकूळ झाले असतांही व्यायाम करूं नये.

व्यायाम करीत असतां अथवा एरवींही तोंडानें श्वासोच्छ्वास कधींही करूं नये.

व्यायामानंतर थंड पाणी पिऊं नये.

तालीम करणारानें तिखट वेताचें खावें. दूध, तुप यांचा उपयोग थोडा जास्त करावा.

### व्यायामास प्रथमच आरंभ करणाऱ्या अशक्त लोकांस सूचना.

व्यायाम करण्यास प्रारंभ केल्यावर एकादा तीव्र विकार उत्पन्न झाल्यास व्यायाम कांहीं दिवस बंद ठेवावा व विकार थांबल्यावर व्यायाम वेतानें सुरू करावा.

व्यायामास प्रथम प्रारंभ केल्यावर मानसिक श्रम (अभ्यास, वाचन वगैरे) कमी करावे.

व्यायाम केल्यावर लवकर हुपारी न येईल तर व्यायामानंतर अंग रगडून घेऊन नंतर स्नान करावें.

व्यायामानंतर अर्ध्या किंवा एका तासानंतर पावशेर दूध प्यावें. दूध धारोष्ण असावें किंवा तापवून निवालेलें असावें. कडत दूध पिणें चांगलें नाहीं. कडत पेयें प्याल्यानें कोठ्यास कायमची दुर्बलता येते.

## भाग ७ वा.

### व्यायामासंबंधाचीं कांहीं सामान्य तत्त्वे.

एका अवयवास व्यायाम घडला असतां इतर अवयवांसही अंशतः व्यायाम घडतो. - शरिरांतील सर्व इंद्रिये व अवयव यांचा परस्परांशीं संबंध आहे. यामुळे, ज्याप्रमाणें झाडाचीं एक फांदी हलविली कीं इतर फांद्या कमी जास्त मानानें हालतातच, त्याप्रमाणें शरिराच्या कोणत्याही एका भागास व्यायाम मिळाला म्हणजे इतर भागांसही अंशतः व्यायाम मिळतो. उदाहरणार्थ, आपण एका हातानें जोडी करीत असलों तर तो हात हालतांना शरिराचे इतर भाग हालतातच. हीच गोष्ट इतर सर्व व्यायामांस लागू आहे.

शरिराच्या कोणत्याही भागास व्यायाम झाला म्हणजे फुफ्फुसांसही व्यायाम घडतो. - ह्याचें कारण पुढील प्रमाणें आहे. शरिराच्या ज्या भागास व्यायाम घडतो, तेथील कांहीं द्रव्य मृत होऊन तेथें कार्बोनिक आसिड ग्यास उत्पन्न होत असतो. या ग्यासामुळे रक्त अशुद्ध होतें. तें शुद्ध करण्याचें काम फुफ्फुसांचें असल्यामुळे, व्यायामानें शरिराच्या कोणत्याही भागांत कार्बोनिक आसिड वायु उत्पन्न झाला, कीं फुफ्फुसांचें काम वाढतें. अर्थात् या योगानें फुफ्फुसांचें काम जोरानें चालून त्यांना व्यायाम घडतो.

चालणें, पळणें, वगैरे पायांच्या श्रमांनीं फुफ्फुसांचा चांगला विकास होतो. स्नायु जसजसा मोठा, तसतशी त्याच्या संकोच-प्रसरणानें होणारी झीज जास्त; म्हणून स्नायु जसजसा मोठा तस-तसें त्याच्या व्यायामामुळें फुफ्फुसांस पडणारें कामही जास्त. या कारणानें, एकाद्या व्यायामापासून फुफ्फुसांना कमीजास्त श्रम होणें हें, तो व्यायाम ज्या स्नायूंना घडतो, त्यांच्या लहानमोठेपणावर अवलंबून आहे. पायाचे स्नायु सर्व स्नायूंत मोठे आहेत ( पायांतील सर्व स्नायूंचें वजन हातांतील स्नायूंच्या तिप्पट आहे ), यामुळें पायांचा उपयोग केल्यानें फुफ्फुसांस जितका व्यायाम मिळतो तितका, ज्यांचा फुफ्फुसांशीं प्रत्यक्ष संबंध नाहीं अशा दुसऱ्या कोणत्याही स्नायूंच्या व्यायामापासून मिळत नाहीं. पळण्यानें श्वासोच्छ्वास जितका जोराचा चालतो, तितका दुसऱ्या कोणत्याही व्यायामापासून चालत नाहीं, यावरून वरील गोष्ट स्पष्ट दिसून येते. म्हणून फुफ्फुसांचा विकास करण्यास व त्यांना मजबूत करण्यास धांवणें, चढण चढणें वगैरे पायाचे व्यायाम उपयोगी आहेत. कुस्तीनें पुष्कळ दम लागतो म्हणून कुस्तीनेंही फुफ्फुसांचा चांगला विकास होतो,

पाठीचे स्नायु, आणि उरोज व अधिस्कंध हे स्नायु बरेच मोठे आहेत, म्हणून या स्नायूंना श्रम झाल्यानेंही फुफ्फुसांस बळकटी येते.

स्नायु दगडाप्रमाणें टणक होणें हें त्यांच्या विकासाच्या परमावधीचें लक्षण आहे ही समजूत चुकीची आहे—ज्या तंतूंचे स्नायु बनले आहेत ते तंतु मऊ असून संकोच्यता

हाच त्यांचा मुख्य गुण आहे. स्नायु संकोच पावूनच शरिरांतील हालचालीचें व ओझे उचलण्याचें काम करतात. हा गुण स्नायूंचे अर्गां राहण्यास त्यांच्यामध्ये मऊपणा ( अर्थात् बेताचा ) हा गुण आवश्यक आहे; म्हणून मऊपणा हा स्नायूंचा स्वाभाविक व आवश्यक गुण आहे असें दिसून येईल. स्नायूस अतिरिक्त श्रम दिल्याने त्यांच्यांतील संकोच्यता हा गुण कमी होऊन, त्यांचे तंतु सांधणारे जे दुसरे संयोजक तंतु असतात, त्यांची वृद्धि होते, व हे तंतु जात्या टणक असल्याने त्यांचे वृद्धीने स्नायूस टणकपणा येतो. हा टणकपणा स्नायूंचा सद्गुण नसून दोष आहे; म्हणून स्नायूस फाजील दाढ्य आणण्याचा प्रयत्न करूं नये. बुक्कीने धोडे फोडण्याची किंवा दुसऱ्याने आपल्या दंडास गुद्दा मारला तर त्याचे मुठीस इजा व्हावी अशी ज्यांची महत्त्वाकांक्षा असेल, त्यांनी पाहिजे तर स्नायु दगडाप्रमाणें टणक करण्याचा प्रयत्न करावा; परंतु चापल्य, आरोग्य, उत्साह.....वगैरे गुण ज्यांना पाहिजे असतील, त्यांनी ही महत्त्वाकांक्षा बाळगूं नये. ज्यांचें शरीर कमावलेलें व निरोगी असतें अशांचे स्नायु मऊ असतात. सँडो वगैरे मलांचे स्नायु हातास दगडाप्रमाणें टणक न लागतां मऊच लागतात ही गोष्ट ध्यानांत ठेवावी.

एकाद्या इंद्रियास वाजवीपेक्षां जास्त मेहनत झाल्याने त्याच्या स्नायूस जें दाढ्य येत त्या योगानें तें इंद्रिय काहीं दिवस मजबूत झाल्यासारखें वाटतें खरें; पण त्यांतील लवचिकपणा नाहींसा

झाल्यामुळे तें लवकरच विकृत होतें. अतिरिक्त मेहनत केल्यानें रक्ताशय दाढ्ययुक्त होऊन, शेवटीं रक्ताशयाचे विकारानें ज्यांना मृत्यु आला आहे अशांची उदाहरणें अनेक आहेत.

शारीरिक शक्तीचे पराक्रम पुष्कळ दिवस टिकणें रक्ताशय व फुफ्फुसें यांच्या मजबुतीवर अवलंबून आहे. -एकादें काम करण्यास जी ताकद किंवा उत्साह लागतो तो रक्तापासून उत्पन्न होतो. रक्ताचा प्रवाह जोरानें चालण्यास मजबूत रक्ताशयाची आवश्यकता आहे, व शरीरभर फिरून आलेल्या रक्ताची शुद्धि होण्यास मोठ्या फुफ्फुसांची आवश्यकता आहे; म्हणून अंगावर पडलेलीं कामें उत्साहानें पार पडण्यास जोरदार रक्ताशय व फुफ्फुसें यांची जरूरी आहे. याकरितां हीं इंद्रियें विशेष मजबूत करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. इतर इंद्रियें मजबूत असूनही या इंद्रियांचे दुर्बलतेमुळे उद्योग मध्येच टाकून देण्याचे प्रसंग लोकांस येतात. ज्यांचें रक्ताशय विकृत झालेले होतें असे पैलवान कुस्तीस निरुपयोगी झाल्याची व अल्पवयी मृत्यु-मुखी पडल्याची उदाहरणें अनेक आहेत.

ज्या ज्या चढाओढींत शारीरिक बलाची अपेक्षा असते, त्या त्या चढाओढींत, ज्या लोकांची रक्ताशय व फुफ्फुसें हीं इंद्रियें मजबूत असतात, असेच लोक टिकाव धरतात, असा सामान्य नियम आहे.

आरोग्याच्या दृष्टीनें, सहनशक्ति अथवा चपळता किंवा वेग वाढविणारे व्यायाम, अवघड ( ज्यांस शक्तीची विशेष अपेक्षा असते अथवा ज्यांनीं स्नायूंस विशेष ताण बसतो

अशा ) व्यायामांपेक्षां जास्त उपयोगी आहेत.—अवघड व्यायामानें शक्ति वाढते, परंतु केवळ शक्तीच्या उपयोगाचे प्रसंग व्यवहारांत फारच थोडे येतात. म्हणून असे व्यायाम विशेष उपयोगी नाहीत. परंतु सहनशक्ति व चपलता दाखविण्याचे प्रसंग व्यवहारांत अनेक येतात, व अशा वेळां ती शक्ति आपल्या आंगां नसल्यास आपल्या प्रकृतीस अपाय होतो. शिवाय शत्रूचा प्रतिकार करण्याची शक्ति व रक्तशुद्धि ह्या ज्या गोष्टी व्यायामापासून आपणास साधावयाच्या असतात, त्या वरील प्रकारचे व्यायामापासून जशा साध्य होतात तशा शक्ति वाढविणाऱ्या अवघड व्यायामापासून होत नाहीत. म्हणून अशा प्रकारच्या व्यायामांचें महत्त्व सामान्य लोकांस विशेष आहे.

व्यायाम करीत असतां व्यायामाचे मानानें मानसिक श्रम कमी केले पाहिजेत.—शारीरिक व मानसिक श्रम करण्यास लागणाऱ्या एकंदर शक्तीची मर्यादा ठरलेली असते. या मर्यादेच्या बाहेर श्रम झाल्यास शरिरास अपाय होतो हें पूर्वी दाखविलेंच आहे. म्हणून या मर्यादेचे अतिक्रमण होऊं देऊं नये. यास्तव तालीम करण्यास प्रथम आरंभ केला असतां, अथवा एकाद्या दिवशीं जास्त शारीरिक श्रम केले असतां, मानसिक श्रम त्या मानानें कमी करावे. ज्याप्रमाणें बुद्धीच्या निरनिराळ्या भागांचीं स्थाने मेंदूंत आहेत, त्याप्रमाणें निरनिराळ्या अवयवांच्या हालचालीची प्रेरणा जेथे उत्पन्न होते अशीं कांहीं स्थाने मेंदूमध्ये आहेत. अर्थात् शारीरिक श्रम विशेष झाल्यानें मेंदूतील या भागांस

थकवा येतो. या योगानें मानसिक श्रम करण्यानें मेंदूचें सामर्थ्य कमी होतें. म्हणून ज्या मानानें आपले शारीरिक श्रम वाढतील त्या मानानें आपण मानसिक श्रम कमी केले पाहिजेत. शरीर व मन हीं पूर्वीं अगदीं भिन्न मानीत असत; परंतु त्यांचा अत्यंत निकट संबंध आहे असें आतां ठरलें आहे. योग्य मर्यादेपर्यंत दोघांस श्रम झाल्यास एकमेकांच्या श्रमांचा एकमेकांस फायदा होतो; परंतु एकाचे किंवा दोघांचे श्रम वाजवीपेक्षां जास्त झाले, तर त्यापासून दोघांसही परिणामी अपाय होतो. या दोघांचा निकट संबंध आहे यास एक प्रमाण असें आहे कीं, अतिरिक्त शारीरिक श्रम व मानसिक श्रम यांनीं मूत्राच्या रूपामध्ये जो फरक पडतो त्याचें स्वरूप साधारणपणें सारखेंच असतें. अतिरिक्त शारीरिक श्रमापासून आरोग्यावर होणारे जे परिणाम पुढें दिले आहेत, त्यांवरूनही अतिरिक्त शारीरिक श्रम व मानसिक श्रम यांचे परिणाम कांहीं अंशीं सारखेच असतात असें दिसून येईल. याकारितां व्यायाम करणारांनीं आपली एकंदर ताकद पाहून त्या मानानें मानसिक श्रम करावे.

व्यायामानें एकंदर ताकद जसजशी वाढत जाईल तसतसे मानसिक श्रम वाढविले तर कांहीं हरकत नाही. परंतु ही गोष्ट कालांतरानें होणारी आहे हें विसरतां कामा नये.

विशेष मानसिक श्रम किंवा अभ्यास करणाऱ्या मुलांनीं तालीम अथवा कोणतेही शारीरिक श्रम अगदीं बेतानें करावे.

**अतिरिक्त व्यायाम.**—कोणतीही गोष्ट मर्यादेबाहेर गेली तर ती अपायकारक होते. अन्न वाजवीपेक्षां जास्त खाल्लें तर तें रोगोत्पत्तीस कारण होतें. तसेंच व्यायामासंबंधानें आहे. व्यायाम वाजवीपेक्षां जास्त घेतला तर त्यापासून अपाय होतो. म्हणून व्यायाम वाजवीपेक्षां जास्त होत आहे किंवा काय हें जाणणें अवश्य आहे. ह्यासंबंधानें पुढील नियम लक्षांत ठेवावे.

( १ ) व्यायामानें चेहरानिस्तेज व सुकट होईल तर तो व्यायाम वाजवीपेक्षां जास्त होत आहे असें समजावें.

( २ ) व्यायाम करीत असतां, किंवा व्यायामानंतर, हृदयांत दुखूं लागेल किंवा हृदयाचें धडधडणें सुरू होऊन जीव अस्वस्थ होईल, तर आपलें हृदय म्हणजे रक्ताशय अशक्त आहे व व्यायाम शक्तीबाहेर होत आहे असें समजून तो कमी करावा.

( ३ ) व्यायाम करतांना नाडीचे ठोके दर सेकंदास १२० पेक्षां जास्त पडूं लागले किंवा नाडीचे ठाक मधून मधून बंद पडूं लागले, म्हणजेही व्यायाम शक्तीबाहेर होत आहे असें समजून तो कांहीं वेळ कमी करावा किंवा बंद करावा.

अतिरिक्त शारीरिक श्रम बरेच दिवस करण्यापासून शरीर सर्व प्रकारचे विकारांस पात्र होतें. त्यांतूनही पुढील विकार होण्याची भीति विशेष असते:—दोषिक ज्वर, अपस्मार.....इ०.

वाजवीपेक्षां जास्त व्यायाम करण्यापासून होणारे दुष्परिणाम पुढें दिल्याप्रमाणें आहेत.

( १ ) बुद्धिमांघ येतें.

( २ ) स्नायूस दाढ्य येतें.

( ३ ) रक्ताशय फाजील मोठें होऊन त्यांतील निबर तंतूची संख्या वाढते; त्यामुळें त्याचा लवचिकपणा व शक्ति हीं कमी होतात व रक्ताशय विकृत होऊन अल्पकाळीं मृत्यु येतो.

( ४ ) लहानपणीं अतिरिक्त श्रम केल्यास शरिराची पुरती वाढ होत नाही व तें निस्तेज राहतें.

कमी जास्त दम लागणें हें श्रमाच्या कमीजास्त अवघडपणाचें किंवा परिमाणाचें प्रमाण अथवा माप आहे.—स्नायूस श्रम जों जों अधिक, तों तों त्यामध्ये अधिक झीज होते. तसेंच स्नायु जों जों अधिक मोठा, तों तों त्याच्या श्रमानें झीज अधिक होते, आणि झीज जों जों अधिक, तों तों कार्बानिक असिड वायूची उत्पत्ति अधिक होते. आतां रक्तांत कार्बानिक असिड वायु जों जों अधिक होतो, तों तों त्यास घालवून देण्याकरितां फुफ्फुसांचा श्वासोच्छ्वास जोरानें चालतो. म्हणून शरिरांत कार्बानिक असिड वायूची उत्पत्ति जसजशी अधिक होते, तसतसा दम अधिक लागतो. यावरून दम कमीजास्त लागणें हें श्रमाच्या कमीजास्त प्रमाणावर अवलंबून आहे असें दिसून येईल. याकरितां कोणत्याही व्यायामाचा कमीजास्त अवघडपणा अथवा श्रमाचें परिमाण ठरविण्यास या प्रमाणाचा उपयोग करीत जावें.

अंगांतून पुष्कळ घाम येईपर्यंतच व्यायाम करीत राहिलें पाहिजे हा समजूत चुकीची आहे.—वाम कमीजास्त येणें हें प्रकृ-

तीवर अवलंबून आहे. साधारणपणे असा नियम आहे कीं, ज्यांची प्रकृति पूर्णपणे निरोगी नसते, त्यांना घाम लवकर येतो. म्हणून प्रकृती चांगली असल्यामुळे ज्यांना घाम लवकर येत नसेल, त्यांनीं घाम फुटण्याची वाट न पाहतां, थकवा आला म्हणजे व्यायाम पुरा करावा.

शरिराचे पुढील भागाच्या स्नायूपेक्षां मागील भागाचे स्नायु कमी बळकट असतात, म्हणून हे स्नायु मजबूत होतील अशी व्यायामांत व्यवस्था असावी.—बसून पाठीस वाक सहज येतो व म्हातारपणीं शरीर पुढील वाजूस वांकट जातें, याचें कारण पाठीमागच्या स्नायूंचा स्वाभाविक कमकुवतपणा होय. हे स्नायु व्यायामानें चांगले मजबूत केले, म्हणजे उतार वयांत शरीर वांकण्याची विशेष भीति राहणार नाही. म्हणून पाठीमागच्या स्नायूंचा संकोच ज्यांत होईल असे कांहीं व्यायाम नित्य करित जावे.

मनुष्य कितीही अशक्त असला तरी त्यास व्यायाम आवश्यक आहे.—कांहीं लोकांची अशी समजूत आहे कीं, व्यायाम फक्त सशक्त लोकांसच उपयोगी आहे. पण ही समजूत चुकीची आहे. प्राणिमात्तास आहाराप्रमाणें व्यायामही आवश्यक आहे, व ज्यांना ज्वरादि तंत्र विकार झाले आहेत असे लोक खेरीजकरून तो सर्वांनीं करणें हितावह आहे. मात्र तो हितावह होण्यास एवढी अट आहे कीं, तो प्रमाणांत असला पाहिजे. व्यायाम वेतानें केला व तो क्रमाक्रमानें वाढविला तर अगदीं अशक्त लोकही सशक्त होतात. एखाद्यास प्रथम १० जोर किंवा १२ नमस्कार सोसतील, तर तेवढाच

व्यायाम त्यानें करावा, व आपल्या शक्तीप्रमाणें तो वाढवावा. प्रथम एवढी थोडी मेहनत करणें ही व्यायामाचा थडा होते अशा भीतीनें व्यायाम मुळींच न करणें चांगलें नाहीं. प्रथम पावशेर दूध पचत नाहीं म्हणून दूध मुळींच न पिण्यासारखीच ही चूक आहे. ज्यास पावशेर दूध पचत नाहीं त्यानें छटाक दुधापासून प्रारंभ केला असतां तें जसें त्यास पचूं लागतें, तशीच व्यायामाची स्थिति आहे. व्यायाम करण्यास प्रारंभ केल्यावर प्रथम खोकल्याचा विकार उत्पन्न झाला असतांही, व्यायाम चालू ठेवल्यानें शेवटीं व्यायाम अंगवळणीं पडून तो प्रकृतीस अत्यंत हितावह झाल्याची उदाहरणें अनेक आहेत. या कारणास्तव प्रत्येक मनुष्यानें व्यायाम करून त्यापासून होणारा फायदा करून घ्यावा.

**कृश व स्थूल अशा दोन्ही प्रकारच्या लोकांस व्यायाम आवश्यक आहे.**—शरिरांत वात म्हणजे मेद किंवा चरबी वाजवीपेक्षां जास्त सांचल्यानें शरिरास स्थूलता येते; व शरिराच्या निरनिराळ्या भागांचें योग्य पोषण न झाल्यानें त्यांना कृशता येते. व्यायामानें शरिरांतील मेद व इतर निरुपयोगी भाग जळून जातो व सर्वांगामध्ये रक्ताचा प्रवाह जोरानें चालून सर्व भागांचें योग्य पोषण होतें. म्हणून ज्यांचें शरीर स्थूल असतें त्यांनीं व्यायाम केल्यानें त्यांचे अंगांतील फाजील चरबी जळली चाऊन त्यांचें अंग सडसडीत होतें; व जे लोक कृश असतात त्यांच्या शरिरांतील सर्व स्नायूंचें योग्य पोषण होऊन त्यांची वाढ होते व त्या योग्यानें शरिरास पुष्टि येते. या कारणास्तव स्थूल व कृश अशा दोन्ही प्रकारच्या लोकांना व्यायामाची आवश्यकता आहे.

**वसल्या वसल्या व्यायाम.**—व्यायामामुळे स्नायूंस जी बळकटी येते, तिचें मुख्य कारण व्यायामाचे वेळीं होणारा स्नायूंचा संकोच हें होय. हा संकोच एरव्हीं स्वस्थ वसून करविला, तरीही स्नायूंस फायदा होतो. याकरितां कांहीं कारणामुळे व्यायाम करण्यास सवड झाली नाही तर वसल्याजागीं स्नायूंचा संकोच जोरानें केल्यानें व्यायामापासून होणारा फायदा स्नायूंस अंशतः मिळतो. आपण वजन उचलतो आहोंत अशी कल्पना करून एकादा मनुष्य जर आपल्या दंडांतील स्नायूंचा रोज संकोच करील, तर कांहीं दिवसांनीं तो दंड मोठा झाला आहे असें खास आढळून येईल.

**पुरुषाप्रमाणें स्त्रियांनाही व्यायाम आवश्यक आहे.**—व्यायामापासून काय फायदे होतात व ते कोणत्या कारणानीं होतात, याविषयीं जी माहिती दिली आहे, तिजवरून व्यायामाची आवश्यकता बायकांसही आहे असें दिसून येईल. म्हणून व्यायामासंबंधानें जी माहिती सांगितली आहे, ती स्त्रियांनाही लागू आहे, असें समजावयाचें. आतां, समाजाच्या हल्लींच्या स्थितींत या सर्व माहितीचा उपयोग करणें जरी जवळ जवळ अशक्य आहे, तरी त्या माहितींतिल तत्वांचा उपयोग करून स्त्रियांची शारीरिक स्थिति सुधारणें शक्य आहे हें विसरतां कामा नये. शरिरांतील महत्त्वाच्या स्नायूंस चलनवलन देणें, होतां होईल तें मोकळ्या हवेंत श्वासोच्छ्वास करणें इत्यादि व्यायामांतील मुख्य गोष्टी होत. म्हणून या गोष्टी ज्यांत साधल्या जातात, असे जे स्त्रियांचे नित्य

व्यवसाय आहेत, ते करण्याविषयी त्यांना शक्य तेवढे उत्तेजन द्यावे. अर्थात् श्रीमंतीमुळे अथवा श्रीमंतीच्या खोड्या कल्पनेमुळे ज्या स्त्रिया घरांतील श्रमाची कामे करीत नाहीत त्यांना-विशेषतः शहरांतील स्त्रियांना-ही गोष्ट लागू आहे. गरीब लोकांच्या बायकांना श्रम करण्यास उत्तेजन देण्याचे फारसे प्रयोजन नाही. कारण, त्यांना शारीरिक श्रम स्वाभाविकपणे पुष्कळ घडतात. फुगड्या, पिंगा, लपालपी, शिवाशीव वगैरे मुलीचे खेळ मनास आनंद देऊन व्यायाम घडविणारे आहेत. तसेच पाणी ओढणे, धुणे, कांडणे, केर काढणे वगैरे कामे पोटा, हात, वगैरेतील स्नायूंस मजबूत करणारी आहेत. म्हणून वरील खेळ खेळण्यास मुलींना व कामे करण्यास प्रौढ स्त्रियांना उत्तेजन द्यावे. सभ्यपणाच्या किंवा श्रीमंतीच्या चुकीच्या कल्पनेने वरील खेळ व कामे बंद करणे अगदी वेडेपणा आहे. अगदी अल्पवयांतही बहुतेक स्त्रियांचे अवयवास शैथिल्य येते, यावरून स्त्रियांस व्यायामाची आवश्यकता किती आहे हे दिसून येईल. हल्ली लहानपणी शारीरिक श्रमाचे खेळ खेळण्याची सवड मुलींना कमी मिळत असल्यामुळे, व ( दारिद्र्य वाढले आहे तरी ) शारीरिक श्रमाची कामे मोलात करून घेण्याची पद्धति दिवसेंदिवस वाढत असल्यामुळे, स्त्रियांना व्हावा तितका व्यायाम होत नाही; म्हणून त्यांचे व्यायामासंबंधाने विशेष काळजी घेतली पाहिजे.

ज्यांना शारीरिक श्रम करावे लागत नाहीत अशा पुरुषांप्रमाणे स्त्रियांचीही पोटे स्थूल व अशक्त झालेली असतात. म्हणून पोटाचे

स्नायु मजबूत करणाऱ्या व्यायामांची त्यांना विशेष जरूरी असते. असे व्यायाम म्हणजे ज्यांमध्ये ओणवे व्हावे लागते अशा प्रकारचे होत. म्हणून श्रमाभावांमुळे ज्यांचे पोटांना स्थूलता आली आहे अशा स्त्रियांकडून केर काढणे, धुणे, पाणी ओढणे, वगैरे कामे अवश्य करवावीं, व त्यांना रोज नाही तरी आठवड्यांतून एकदा तरी १।२ मैलांवर असलेल्या टेकडीवरील देवस्थान पाहण्यास न्यावे.

लहान मुलांना व्यायाम त्यांच्या स्नायूंच्या वाढीच्या क्रमानें असावा.— शरिरातील स्नायूंच्या वाढीचा सामान्य-क्रम असा आहे की, मोठे स्नायूंची वाढ आधी होते, व लहान स्नायूंची वाढ उशिरा होते. धडाचे मोठे स्नायु प्रथम, त्यानंतर खांदा व कमर यांचे स्नायु ( म्हणजे ज्या ठिकाणी अवयव धडास जोडले आहेत त्या ठिकाणचे स्नायु ), त्यानंतर मनगट व घोटा यांचे स्नायु व त्यानंतर बोटाचे स्नायु परिपूर्ण दशेस येतात, असा सामान्य नियम आहे. बोटांच्या स्नायूंची वाढ १३।१४ वर्षांच्या सुमारास होते, म्हणून या वर्षांपर्यंत मुलांकडून जे व्यायाम करावयाचे ते वर सांगितलेल्या क्रमास धरून असावे. म्हणजे अगदी लहानपणी धांवण्याचा व्यायाम विशेष असावा, हातानें श्रम करण्याचा त्यापेक्षा कमी असावा, व बोटांनी श्रम करण्याचा त्याहून फार कमी असावा. सिंगलवारचे व्यायामांत बोटे, मनगट व खांदी यांचे स्नायूंस विशेष श्रम पडतात, म्हणून १३।१४ वर्षांपूर्वी हे व्यायाम मुलांकडून करवूं नयेत.

ठेक्याबरोबर किंवा वाद्याबरोबर तालांत व्यायाम करणें हें बरेच मानसिक श्रम करणाऱ्या मुलांस विशेष उपयोगी आहे.— मानसिक श्रम केल्यानें मेंदूस थकवा येतो; म्हणून जे व्यायाम करतांना त्यांकडे लक्ष पुरवावें लागतें, ते व्यायाम, मानसिक श्रमानंतर लागलीच केल्यानें, त्यांचे योगानें मेंदूचा थकवा अधिक वाढून प्रकृतीस अपाय होतो. परंतु जे व्यायाम बँड अथवा पडघम यांच्या तालाबरोबर करावयाचे असतात ते ठेक्याच्या नादानें आपोआप आपल्याकडून होतात; म्हणून ते करतांना त्यांमध्ये विशेष लक्ष घालवें लागत नाही; ह्यास्तव ज्या मुलांना विशेष मानसिक श्रम पडतात, अशा मुलांना बँडबरोबर होणाऱ्या कवायतीचा व्यायाम विशेष उपयोगी आहे. जो व्यायाम ठेक्याबरोबर केला जातो, त्यापासून फक्त स्नायूंनाच श्रम होत असल्यामुळे, अशा प्रकारचा व्यायाम केवळ स्नायुविषयक होय. जे व्यायाम करतांना व्यायामांकडे लक्ष द्यावें लागतें त्या व्यायामांपासून केवळ स्नायूस नव्हे तर मेंदूसही श्रम होतात. म्हणून अभ्यास करून थकलेल्या मुलांना अशा प्रकारचे व्यायाम करावयास सांगणें म्हणजे त्यांच्या मेंदूचा थकवा वाढविणें आहे. याकरितां अशा मुलांस फक्त वाद्यांच्या ठेक्याबरोबर करतां येणारे सोपे ( कवायतीसारखे ) व्यायाम सांगावे.

व्यायाम करतांना गुडघे वांकवावे—तालमीपैकीं जे व्यायाम उभे राहून करावयाचे असतात, ते करतांना गुडघे किंचित वांकवून मांडीचे स्नायु ताठ करावे. असें केल्यानें पायांच्या स्नायूस ताण बसून त्यांस फायदा होईल.

## भाग ८ वा.

### व्यायामपद्धतीच्या भिन्न प्रकारांचें मूळ स्वरूप.

शरिरांतील सर्व स्नायु बळकट करणें हा व्यायामाचा मुख्य हेतु आहे. स्नायूंचें काम शरिरांतील निरनिराळ्या हालचाली घडवून आणणें हें आहे. तेव्हां जेवढ्या म्हणून निरनिराळ्या हालचाली आहेत, तेवढ्या केल्या म्हणजे सर्व स्नायूंना व्यायाम मिळाल्यासारखेंच झालें. म्हणून शरिराच्या सर्व भागांस बळकटी आणण्यास, शरिरांत जेवढ्या निरनिराळ्या हालचाली होणें शक्य आहे तेवढ्या करणें हा एक मार्ग आहे. अशा भिन्न हालचाली पुढें दिल्याप्रमाणें आहेत. ह्या सर्व हालचाली रोज केल्या म्हणजे सर्व शरिरास मजबुती आल्यावांचून राहणार नाही. ज्यांस कसरतीची किंवा तालमीची नवीन पद्धति बसवावयाची असेल त्यांनीं पुढें दिलेल्या हालचालींचे भिन्न संयोग आपापल्या सोईप्रमाणें करावे.

निरनिराळ्या युरोपियन मंडांनीं ज्या व्यायामपद्धति काढल्या आहेत, त्या, पुढें सांगितलेल्या भिन्न हालचालींचे विशेष प्रकारचे संयोगच आहेत. ह्यास्तव या पद्धतीचें तत्त्व लक्षांत येण्यास पुढील माहितीचा उपयोग होईल अशी आशा आहे.

शरिराच्या एका टोंकापासून दुसऱ्या टोंकापर्यंत शरिराचे सांधे पाहात गेले, म्हणजे शरिरांतील यावच्छक्य हालचाली समजून येतील. म्हणून हातापासून आरंभ करून पायाकडे जातांना क्रमानें लागणाऱ्या सर्व अवयवांच्या हालचाली पुढें दिल्या आहेत.

बोटें—१ मूठ मिटणें व उघडणें, म्हणजे बोटें वळविणें व ताठ करणें.

२ बेचका फांकतील अशा रीतीनें बोटें हालविणें अथवा फांकणें.

३ बोटानीं पदार्थ दावणें व उचलणें.

मनगट—मागें, पुढें, डाव्या व उजव्या बाजूस, व तसेंच वाटोळें फिरविणें.

अग्रहस्त—खालीं, वर करणें; व उजवीकडे किंवा डावीकडे कोपराचे सांध्यावर जागच्या जागीं वाटोळा फिरविणें.

दंड अथवा संबंध हात—पुढील बाजूनें व तसेंच पार्श्वभागानें उचलून ताठ आडवा पसरून धरणें; अगदी वर उचलून ताठ उभा धरणें; अनेक स्थितींत वाटोळा फिरविणें; पुढें ताठ पसरून तो आडव्या पातळींत ( पोहतांना हात मारतात त्याप्रमाणें ) फिरविणें.

करवतानें कापतांना किंवा गाडी ढकलतांना हात पुढें ढकलतो त्याप्रमाणें हात पुढें रेटणें. असेंच खालच्या, वरच्या व पार्श्वभागाकडे हात रेटणें.

चेंडू किंवा धोंडा फेकतांना हातास हिसका देतो तसा हिसका देणें.

मान—मागें, पुढें, आणि दोन्ही बाजूला वांकविणें व वाटोळी फिरविणें.

छाती—श्वास घेऊन छाती फुगविणें व श्वास सोडून ती खाली—पूर्व स्थितीप्रत—नेणें. (२) कमरेंत वांकून छाती मार्गें, पुढें, डाव्या अंगास व उजव्या अंगास वांकविणें व अनेक तऱ्हेनें वाटोळी फिरविणें.

धड—पुढें वांकविणें (ओणवे होतांना वाकवावें लागतें तसें), मार्गें वांकविणें, ताठ करणें, दोन्ही बाजूंस कमरेंत वांकविणें, व वाटोळें फिरविणें.

पाय—एक पाय टेकून दुसरा पाय पुढें, मार्गें, व दोन्ही अंगांनीं वर करणें व वाटोळा फिरविणें. मांड्या एकमेकींस चिकटून धरणें.

गुडघा—वांकविणें व ताठ करणें.

पाऊल—मार्गें, पुढें, व बाजूंना वांकविणें. पायाचीं बोटे वर व खालीं वांकविणें.

## भाग ९ वा.

### विकृतिनाशक (चिकित्सक) व्यायाम.

शरिरांतील विकार मोडण्यास औषध हा 'एकमेवाद्वितीय' उपाय आहे, अशी पूर्वी बहुतेक लोकांची समजूत होती. परंतु औषध हा किमान पक्षाचा व एकंदरीत फार खर्चाचा (द्रव्यहानि व शक्तिहानि या दोन्ही दृष्टींनी) उपाय आहे, असें आतां वैद्यशास्त्रज्ञांचें मत होत चाललें आहे. रोगाचा प्रतिकार करण्याचें सामर्थ्य आपल्या प्रकृतीमध्ये ईश्वरानें ठेवलें आहे व त्या सामर्थ्याचा योग्य उपयोग करून घेणें हाच आरोग्यप्राप्तीचा मुख्य मार्ग आहे असें आतां ठरलें आहे. औषधापेक्षां पथ्यपाणी व स्वेदन, बस्ती इत्यादि बाह्योपचारांस होमिओपॅथीत व इतर नवीन चिकित्सापद्धतींत आणि बऱ्याच अंशीं अलोपॅथीत जें महत्त्व आलें आहे तें याच गोष्टीचें दर्शक आहे. तथापि हेंही तत्त्व अद्याप संशयित आहे असें मानलें, तरी निदानो ही गोष्ट सर्वमान्य आहे कीं, औषधांनीं रोगचिकित्सा केली असतां, औषधांचे, कडकीच्या रूपानें, जे दुष्परिणाम राहण्याचा संभव असतो तो, औषधांवांचून इतर उपायांनीं रोगचिकित्सा केली असतां, राहत नाहींत. या कारणास्तव रोगचिकित्सेसाठीं औषधाहून अन्य बाह्योपाय विशेष महत्त्वाचे मानले पाहिजेत. मला-वष्टंभ, क्षुधामांघ,.....यकृताची क्रिया बरोबर न चालणें

वगैरे विकार फार चेंगट व त्रासदायक आहेत व त्यांकरितां औषधें घेतां घेतां मनुष्य कंटाळून जातो. शिवाय पुष्कळ दिवस औषधें घेतल्यानें औषधांचा परिणाम होईनासा होतो व प्रकृति अशक्त होऊन जाते. अशा विकारांस व्यायामाचे कांहीं प्रकारांपासून फायदा होतो; म्हणून त्यांविषयीं पुढें माहिती दिली आहे. तरी आरोग्येच्छू लोकांनीं या माहितीचा उपयोग करून घ्यावा. पुढील उपायांपासून हजारों लोकांस फायदा झाला आहे. मुंबईचे प्रसिद्ध लक्षाधीश बोमनजी पेटिट यांचे क्षुधामांद्यादि विकार सॅडोनें व्यायामाच्या पद्धतीनें बरे करून १॥ लाख रुपये मिळविले ही गोष्ट प्रसिद्ध आहे. या उपायांसंबंधानें ही विशेष गोष्ट आहे कीं, त्यांच्याकरितां खर्च मुळींच करावा लागत नाही व त्यांचेपासून प्राप्त होणारा गुण चिरस्थायी असतो. म्हणून आमची अशी विनंति आहे कीं, पुढें सांगितलेल्या विकारांपैकीं एखादा विकार ज्यांना झाला असेल त्यांनीं पुढील उपायांचा उपयोग अवश्य करून घ्यावा.

अन्नांतील पोषक भाग शोषून घेणें, शरिरास आवश्यक असा रस उत्पन्न करणें, अथवा शरिरांतील अपायकारक द्रव्यास बाहेर घालवून देणें अशा स्वरूपाचीं निरनिराळ्या इंद्रियांचीं कामें आहेत. शरिरांतील सर्व इंद्रियें स्नायुरूपी तंतूंचीं बनलेलीं आहेत, व या तंतूंचा संकोच-विकास त्या त्या इंद्रियांचे कामास आवश्यक आहे. म्हणून शरिरांतील एखादें इंद्रिय विकृत होणें म्हणजे संकोच-विकासाची क्रिया करण्यास

तें असमर्थ होणें होय. अर्थात् शरिराचे ज्या भागांत विकार झाला आहे अथवा होण्याचा संभव आहे त्या भागास योग्य प्रकारच्या व्यायामानें सशक्त केलें म्हणजे तो विकार टळतो. म्हणून विकृत भागास सौम्य व्यायामानें सशक्त करणें हें पुढील उपायांतील मूळ तत्त्व आहे. हें तत्त्व लक्षांत ठेवून पुढील उपायांचा योग्य उपयोग करावा.

फाजील व्यायाम उपकाराएवजी अपकार करतो व सर्व तीव्र रोगांत व कित्येक जीर्ण रोगांतही व्यायाम निषिद्ध आहे, म्हणून पुढील व्यायामरूपी उपायांचा उपयोग विचारानें करावा. व्यायाम वाजवीपेक्षां जास्त करण्यापेक्षां थोडा कमी करणें बरें, हें नेहमीं ध्यानांत ठेवावें.

## क्षुधामांघ्रासाठीं व्यायाम.

सामान्य तत्त्व—ज्या व्यायामांपासून पोटाचे स्नायूंस श्रम घडतात ते सर्व व्यायाम क्षुधामांघ्र व पचनेंद्रियासंबंधी इतर विकार घालविण्यास उपयोगी आहेत. ओणवें होणें, धड बाजूला वांकविणें, छाती डावीकडे व उजवीकडे फिरविणें, एकंदरीत धड वांकवेल तितक्या प्रकारांनीं वांकविणें—हे अशा प्रकारचे व्यायाम होत.

अशा व्यायामाचे विशिष्ट प्रकार पुढें दिल्याप्रमाणें आहेत.

१

पूर्व तयारी.—हात वर ताठ पसरून व कमरेस मागील बाजूस वांक देऊन आणि छाती वर काढून उभें रहावें.

हात भुईस टेके तोंपर्यंत कमरेंत पुढील बाजूस वांकावें. व फिरून उभें होऊन कमरेचे मागील बाजूने वांकून पहिल्या स्थितीप्रत यावें.

दुसरी तऱ्हा.—ताठ उभें राहून डावा पाय थोडा पुढें ठेऊन तो गुडघ्यांत वांकवावा; व पूर्वीप्रमाणें हात भुईस टेके तोंपर्यंत पुढील बाजूस कमरेंत वांकावें. उभें झाल्यावर डावा पाय मागें घेऊन उजवा पाय डाव्या पायाप्रमाणें पुढें ठेवावा व वांकावें. याप्रमाणें आळीपाळीनें करावें.

२

पूर्व तयारी.—हात ताठ खालीं पसरून उभें रहावें. तळ हात मांडीकडे करून मूठ मिटावी.

घड कमरेजवळ उजव्या बाजूस वांकवेल तितकें वांकावें, व वांकवितांना डाव्या हातास वांक देऊन मूठ काखेजवळ आणावी. नंतर डाव्या बाजूस वांकावें व डावा हात ताठ करून उजवा हात पूर्वीप्रमाणें डाव्या हाताप्रमाणें वांकवावा.

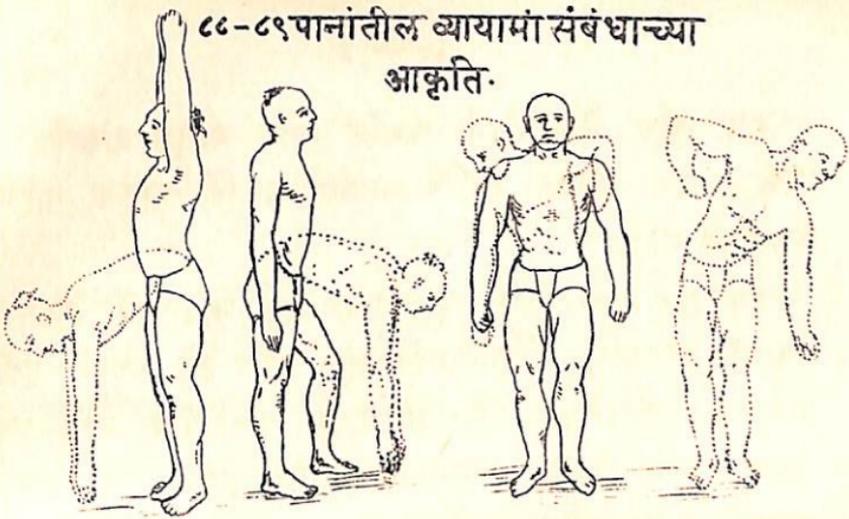
३

पूर्व तयारी.—हात डोक्याचे मागें ताठ पसरून जमिनीवर निजावें.

पाय व हात ताठ ठेवून सावकाश उठावें—घड वर उचलावें,—व हात पायाचे पुढें जाई तोंपर्यंत—निदानीं पायास टेके तोंपर्यंत—पुढें वांकावें. नंतर फिरून सावकाश पहिल्या स्थितीप्रत यावें.

याप्रमाणें दमेतोंपर्यंत करावें.

८८-८९ पानांतील व्यायामां संबंधाच्या  
आकृति.

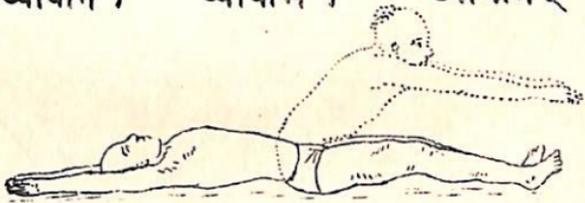


व्यायाम १

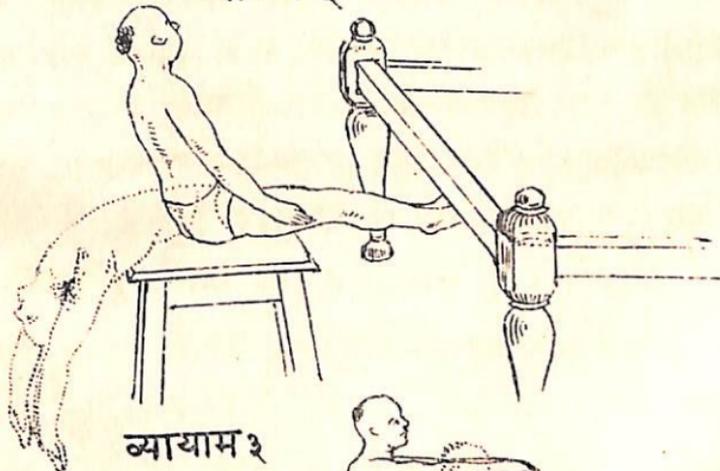
व्यायाम १

व्यायाम २

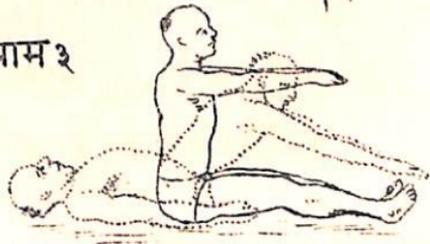
व्यायाम २



व्यायाम ३

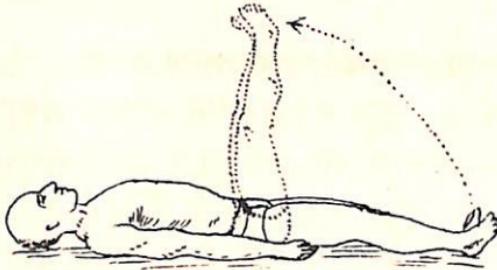


व्यायाम ३

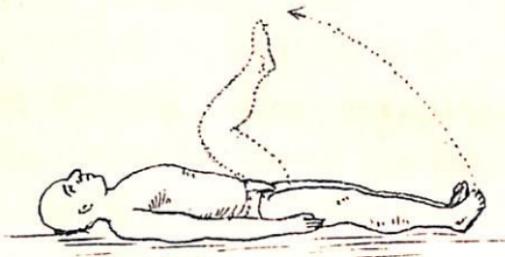


व्यायाम ४

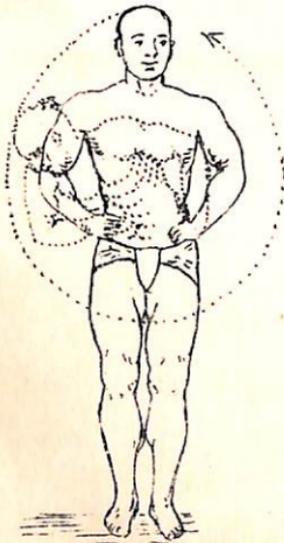
८९-९० पानांतील व्यायामां संबंधानें आकृति.



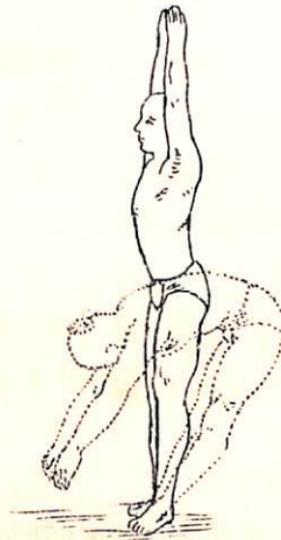
व्यायाम ५



व्यायाम ५ अ.



व्यायाम ६



(पान ९५)-१ व्यायाम.

वरील व्यायामाचा एक अवघड प्रकार.

पलंगाच्या उंचीचे स्टूल पलंगापासून थोड्या अंतरावर ठेऊन व त्यावर बसून पलंगाचेखाली पाय अडकवावे, आणि पावलांने पलंगाचे लांकडास खालून नेट देऊन धड व डोकें हीं मागें वांकवावी. डोकें मागें नेतां येईल तितकें नेल्यावर फिरून डोकें वर उचलून उठावें. याप्रमाणें करवेल तितक्या वेळां करावें. अर्थात् हा व्यायाम अशक्तानीं करूं नये.

४

पूर्व तयारी-पाय पसरून बसावें. हात पुढें ताठ पसरावे. हात पायास टकेतोपर्यंत \* धड पुढें वांकवावें व नंतर मागें सावकाश परत जाऊन जमिनीवर ताठ निजावें.

फिरून उठावें व पूर्वाप्रमाणें चलन करावें.

५

जमिनीवर ताठ निजावें व दोन्ही पाय-अथवा एकेक पाय अनुक्रमानें-सावकाश वर आणावा व फिरून खाली न्यावा.

अ. वरील व्यायामांत, पाय वर करतांना, गुडघ्यांत वांकवावा व मांड्या पोटाचे जवळ जितक्या आणतां. येतील तितक्या आणाव्या. असें आळीपाळीनें करावें.

६

पूर्व तयारी-कमरेवर हात ठेऊन उभे रहावें.

बेंबी हा मध्य कल्पून सर्व धड, मुली पिंगा घालतात त्या रीतीनें, डाव्या बाजूनें वाटोळें फिरवावें. नंतर तसेंच उजव्या बाजूनें फिरवावें.

\* अशा प्रकारच्या सर्व व्यायामांत हात पायाचे पुढें जातील तर अधिक वांगळें.

मलावष्टंभ, यकृद्विकार वगैरे विकारांसाठीं व्यायाम.

ज्या व्यायामांचे योगानें पोटाचे स्नायु बळकट होतात त्यांचे योगानें वरील विकारही कमी होतात.

यकृत् व आंतडीं हीं इंद्रियें स्नायुरूपी तंतूंचीं बनलेलीं आहेत. यकृत् या इंद्रियाचें मुख्य काम पित्त तयार करण्याचें आहे व आंतड्यांचें काम अन्न कुसकरून त्यांत एक प्रकारचा रस सोडण्याचें व पचन झालेल्या अन्नास व मलास ( स्वतां संकोच पावून ) पुढें ढकलण्याचें आहे. हीं कामें योग्य प्रकारें होणें हें यकृताचा व आंतड्यांचा जोरदार संकोच-विकास होण्यावर अवलंबून आहे. यांचा जोरदार संकोच-विकास होण्यास यांचे व पोटांचे इतर स्नायु मजबूत झाले पाहिजेत. म्हणून पोटाचे स्नायु मजबूत करणारे सर्व व्यायाम या विकारांतही उपयोगी आहेत.

या व्यायामांचे विशेष प्रकार पुढीलप्रमाणें आहेत.

१

पूर्व तयारी-हात वर ताठ पसरून ताठ उभें राहावें

कमरेजवळ वांकून-ओणवे होऊन-व हात खाली आणून पायाचे पुढें पाऊण हात अंतरावरील जमिनीस हातानें स्पर्श करण्याचा प्रयत्न करावा. असें करतांना पाय जमिनीवर साफ टेकवून नितंबभाग मागें ढकलावा व सर्व अंगाचा भार टांचावर पडूं द्यावा.

२

पूर्व तयारी-डोक्याचे मागें हात ताठ पसरून जमिनीवर ताठ निजावें.

The first part of the document  
 discusses the importance of  
 maintaining accurate records  
 and the role of the  
 various departments in  
 ensuring the smooth  
 operation of the  
 organization. It also  
 outlines the procedures  
 for handling  
 correspondence and  
 reports, and the  
 responsibilities of  
 the staff in  
 this regard. The  
 second part of the  
 document deals with  
 the financial aspects  
 of the organization,  
 including the budget  
 and the methods of  
 accounting. It also  
 discusses the  
 importance of  
 maintaining accurate  
 financial records  
 and the role of the  
 various departments  
 in this regard. The  
 third part of the  
 document deals with  
 the personnel  
 aspects of the  
 organization, including  
 the recruitment  
 and training of  
 staff, and the  
 methods of  
 evaluating their  
 performance. It  
 also discusses the  
 importance of  
 maintaining a  
 high standard of  
 conduct among  
 the staff, and the  
 role of the  
 various departments  
 in this regard.

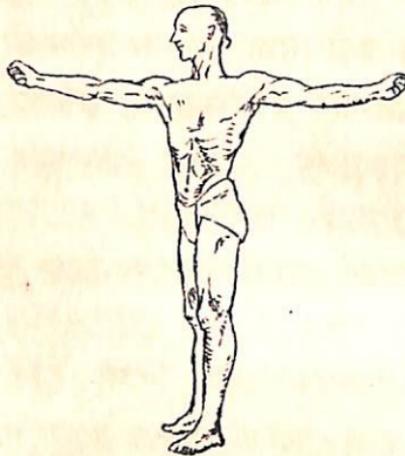
९१ पानांतील  
व्यायामां संबंधाने आकृति.



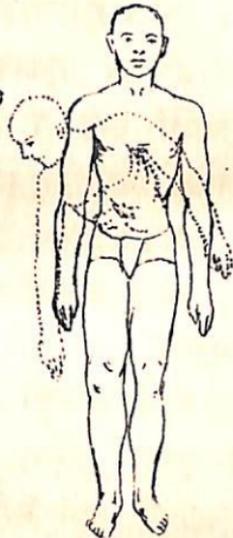
व्यायाम २



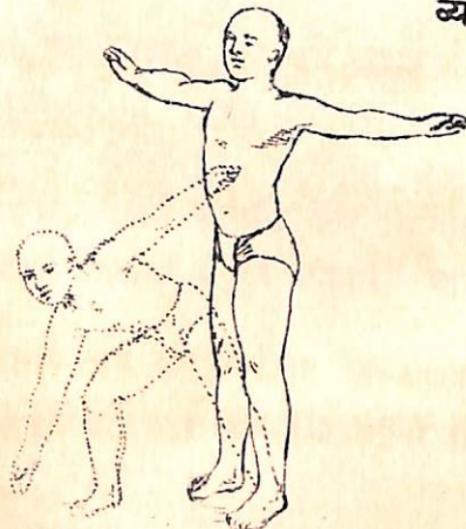
व्यायाम २.



व्यायाम ३



व्यायाम ४



व्यायाम ५

दोन्ही पाय उचलावे व त्याच वेळीं गुडघे वांकवावे व मांड्या जेवढ्या वर वांकवतील (उचलवतील) तितक्या वांकवाव्या नंतर मांड्या मार्गे नेऊन दोन्ही पाय पूर्वाप्रमाणें ताठ करावे. याप्रमाणें करित असतां टांचा जमिनीस टेकूं देऊं नयेत.

उभें राहून वरील प्रमाणेंच परंतु एकेक पाय आळीपाळीनें वर उचलून गुडघ्याजवळ वांकवावा व गुडघ्याचे खालीं पायास हातांनीं मिठी मारून पाय वर ओढवेल तितका ओढावा. असें अनेक वेळां करावें.

३

पूर्व तयारी-पायांमध्ये फूटभर अंतर ठेवून हात दोन्ही बाजूस ताठ पसरवे.

छाती बाजूस फिरवून एकदा डावा हात पुढील बाजूस व एकदा उजवा हात पुढील बाजूस येईल अशा रीतीनें धड घुसळावें, असें करतांना तोंड व पाय फिरवूं नये.

४

पूर्व तयारी-हात खालीं करून ताठ उभें रहावें.

कमरेजवळ शरीर उजव्या बाजूस वांकवेल तितकें वांकवावें. नंतर ताठ करून डाव्या बाजूस वांकवेल तितकें वांकवावें. असें आळीपाळीनें करावें.

५

पूर्व तयारी-दोन्ही पायांमध्ये एक हात अंतर ठेऊन उभें रहावें. हात दोन्ही बाजूस ताठ पसरवे.

उजवा पाय पुढें आणावा व डावा पाय मागें न्यावा. नंतर उजवा हात जमिनीस लागे तोंपर्यंत शरीर पुढील बाजूस वांकवावें. असें करीत असतां उजवा गुडघा वांकवावा व डावा पाय ताठ करावा.

असेंच डावा पाय पुढें ठेऊन करावें.

६

४६ पानांतील ५ व व्यायाम.

कणा व पाठींतील मज्जामंडलें यांचें बल वाढविणारा व्यायाम—पूर्व तयारी—पावलांमध्ये सुमारे दीड हात अंतर ठेवून उभें रहावें. हात ताठ पसरावे व हाताच्या मुठी मिठाव्या. धड पुढील बाजूस थोडें वांकवावें.

धड हळूच डावीकडे फिरवीत फिरवीत पूर्वीं जिकडे तोंड होतें तिकडे पाठ होईपर्यंत धड वाटोळें फिरवावें. उजव्या बाजूकडे पाठ होतांना पाठीस आणवेल तितका बांक आणवावा. अशा स्थितीत क्षणभर राहिल्यावर धड पुढील बाजूस वांकवावें व फिरून तें उजवीकडे फिरवून पाठीला मागील बाजूनें बांक आणावा; फिरून पुढील बाजूस ओणवे होऊन डावीकडे वळावें.

याप्रमाणें प्रत्येक बाजूकडे पांच पांच वेळां वळावें.

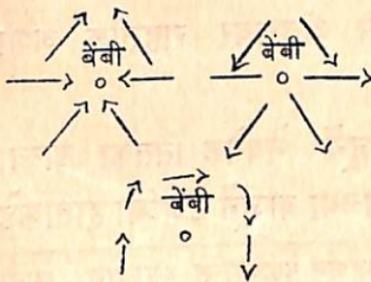
मलावष्टंभ मोडण्याविषयीं अन्य उपाय.—आंतड्याचा शेवटचा भाग, म्हणजे ज्यास मोठें आंतडें म्हणतात, तें पोटाचे पुढील भागीं उजव्या बाजूनें खालून वर जाऊन बेंबीच्या वरच्या अंगास डावीकडे वळलें आहे व तेथें डावीकडे वळून सुमारे ८।१० बोटें गेल्यावर

खाली वळून बेंबीच्या अंगानें खालपर्यंत गेलें आहे. बेंबीच्या दोन्ही आंगांस या आंतड्याचे जे भाग आहेत त्यासच सामान्य लोक नळ असें म्हणतात. या नळांमध्ये मळ सांचून किंवा वायु सांचून त्यास फुगवटीं आली म्हणजे नळ फुगले आहेत असें म्हणतात. हे नळ चोळल्यानें त्यांत हालचाल सुरू होऊन त्यांत आडून राहिलेला मळ पुढें ढकलिला जातो. म्हणून नळ फुगले म्हणजे ते चोळून घेण्याची वहिवाट आहे. ही वहिवाट तत्त्वास धरूनच आहे; पण या चोळण्याची योग्य पद्धति पुष्कळ लोकांस माहीत नसते म्हणून ती पुढें दिली आहे.

मुईवर साफ निजावें व उजवा नळ खालून वरच्या बाजूस, आडवा नळ उजवीकडून डावीकडे व डावा नळ वरून खाली चोळीत जावें. याप्रमाणें कांहीं वेळां केलें म्हणजे शौचास होईल.

चोळण्याची ही पद्धति मलाचे स्वाभाविक गतीस धरून आहे, असें दिसून येईल. याचे उलट चोळल्यानें मल मार्गें ढकलिला जाईल हें लक्षांत ठेवावें.

अजीर्ण व अपचन याकरितां उपाय.—सकाळीं अंथरुणांत



जागे झाल्यावर शेजारच्या आकृतींत दाखविलेल्या दिशांनीं वेबीभोंवतालच्या प्रदेशांत चोळावें व बेंबीभोंवतालचा पोट्याचा भाग दाबावा. चोळण्याकरितां बोटांचा अथवा तळहाताचा उपयोग करावा.

## भाग. १०.

विशिष्ट अवयव बळकट करण्याकरितां व्यायाम.

शरिराच्या विशिष्ट अवयवांचा विकास करण्यास कोणत्या व्यायामाचा उपयोग करावा हें समजावें म्हणून पुढें अशा प्रकारचे कर्णही व्यायाम दिले आहेत.

छाती ( फुफ्फुसें ) मोठी करणारे व्यायाम.—फुफ्फुसें ज्या उरः पंजरांत आहेत, त्याचे बाह्य भागीं पुढील बाजूस उरोज स्नायु व मागील बाजूस वज्री स्नायु आहेत. हे स्नायु जर लहान असतील तर फुफ्फुसांचा विकास होण्यास फारशी सवड राहणार नाही; म्हणून हे स्नायु मोठे असणें अवश्य आहे.

दंड मार्गे व पुढें नेणें हें छातीच्या स्नायूंचें मुख्य काम आहे. म्हणून ज्या व्यायामांमध्ये दंड छातीचे पुढें व पाठीमार्गे ओढले जातात ते सर्व व्यायाम छातीचा विकास करणारे आहेत. †

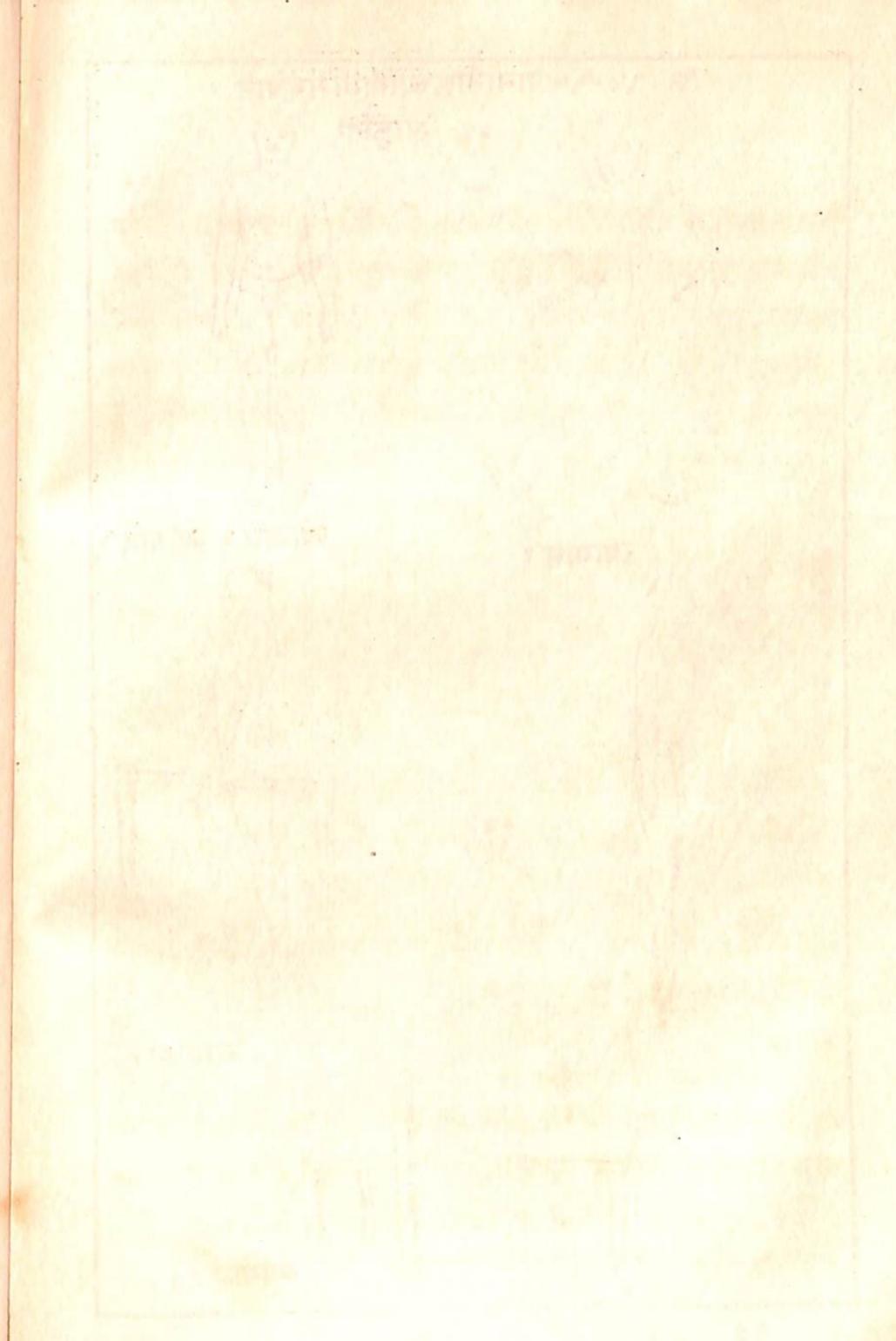
अशा व्यायामांपैकी कांहीं व्यायाम पुढें दिले आहेत.

१

पूर्व तयारी—हात अंगापासून थोडेसे अंतरावर राहतील अशा रीतीने खाली पसरावे.

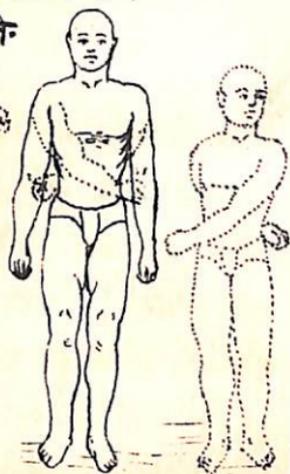
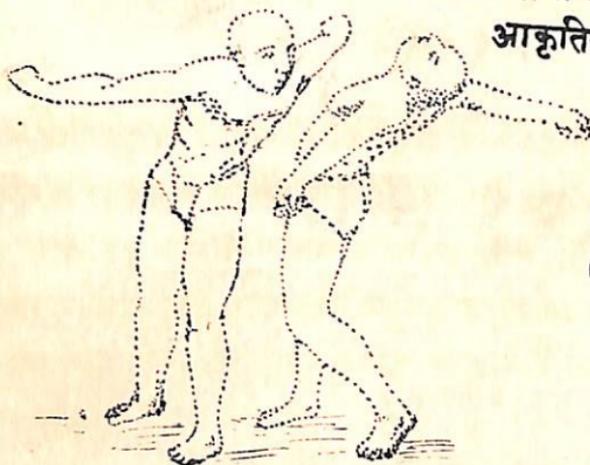
उजवा हात शरिराच्या पुढील बाजूने नेववेल तितका डाव्या बाजूकडे न्यावा व डावा हात पाठीमागच्या बाजूने उजव्या हाताकडे

† पळण्यापासूनही छाती मोठी होते. म्हणून पळण्याचा व्यायाम छाती मोठी करण्यास उपयोगी आहेत.



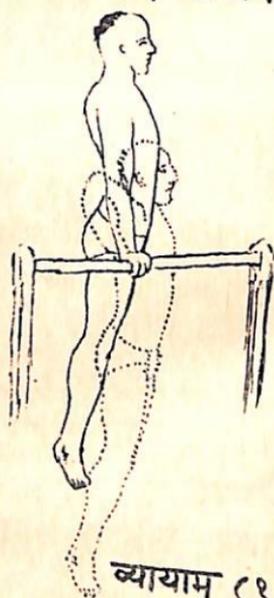
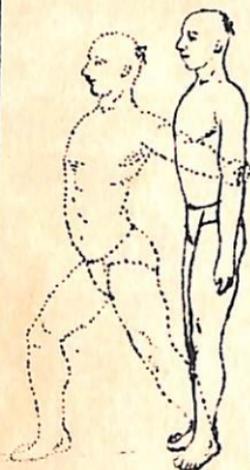
१२-१४-१५ पानांतील व्यायामां संबंधाने

आकृति.



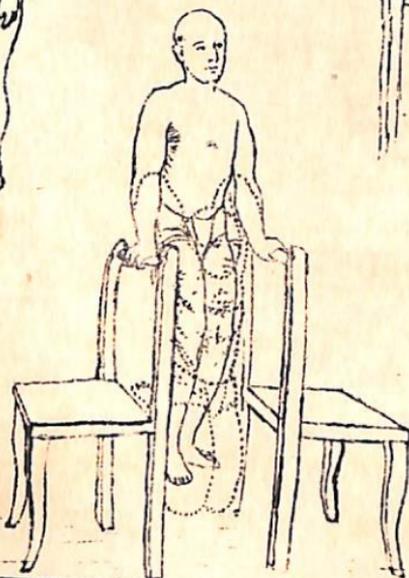
व्यायाम १

व्यायाम १ व्यायाम १



व्यायाम २

व्यायाम (१)



व्यायाम (२)

नेववेल तितका न्यावा. नंतर थोडे थांबून डावा हात पुढे आणून उजव्या बाजूकडे न्यावा व उजवा हात पुढून मागे ओढून मागल्या बाजूने डाव्या हाताकडे न्यावा. याप्रमाणे आळीपाळीने करावे. हा व्यायाम करित असतां हाताचे स्नायु ताणून धरावे, खांदे हालू देऊं नयेत, दंड छातीस दाबून धरावे व हात कोपराजवळ किंचित् वांकवावे.

२

पूर्व तयारी—हात बाजूस सोडून ताठ उभे राहावे.

डावा पाय ताठ ठेवून उजवा पाय उचलावा व गुडघ्यांत थोडा वांकवून दोन हात पुढे तिरक्या बाजूने टाकावा. असे करित असतां हात बाजूने वर उचलून थोडेसे मागल्या बाजूस न्यावे व पाठीस मागील बाजूने वांक देऊन छाती पुढे आणावी, आणि हात ताठ करावे.

नंतर पहिल्या स्थितीप्रत येऊन डावा पाय पुढे टाकावा व इतर सर्व कृति वर सांगितल्याप्रमाणे करावी.

छाती मोठी करण्या करितां अवघड व्यायाम.—(१) पॅरल-लवारवर हात टेकून उभे राहावे. नंतर कोपरे वांकवीत वांकवीत छाती शक्य तितकी खाली न्यावी व फिरून वर आणावी.

(२) दोन खुर्च्या पाठीकडे पाठ करून ठेवाव्या. पाठीवर हात टेकून व सर्व भार हातावर टाकून पाय उचलावे. नंतर हनुवटी तळहाताचे पातळीत येईपर्यंत आंग खाली न्यावे व फिरून वर न्यावे.

पोटाचे स्नायु मजबूत करणारे व्यायाम—छाती कमरेकडे ओढणे व पोट आंत ओढणे ही पोटाच्या स्नायूंची मुख्य

कामें आहेत. म्हणून हीं कामें ज्या व्यायामानें होतात ते सर्व व्यायाम पोटाचे स्नायु मजबूत करण्यास उपयोगी आहेत.

खणणें, झाडावर चढणें, दोरीस किंवा दुसऱ्या एकाद्या पदार्थास लोंबकळणें, मलखांब करणें, कमान टाकणें हीं कामें करतांना पोटाच्या स्नायूंना काम पडतें म्हणून त्यांपासून पोटाचे स्नायूस मजबुती येते.

वांकून वाढणें, किंवा केर काढणें, छतास रंग देणें वगैरे कामें पोटाचे स्नायूस बळकटी आणणारीं आहेत.

ट्रॅपिझ, सिंगलबार यास लोंबकळून जे व्यायाम करावयाचे असतात, त्यांनीं पोटाच्या स्नायूस चांगला व्यायाम होतो, म्हणून ते स्थूल उदर नाहीसें करण्यास उत्तम उपाय होत.

क्षुधामांघ व मलावष्टंभ ह्या विकारांसाठीं जे व्यायाम पूर्वींच्या भागांत सांगितले आहेत, तेही पोटांचे स्नायूस बळकटी आणणारे आहेत.

**रक्ताशय मजबूत करणारे व्यायाम.**—ज्या ज्या व्यायामांना विशेष शक्ति खर्च करावी लागते ते सर्व व्यायाम रक्ताशयास बळकट करतात. शक्तीचें काम करतांना जोराच्या रक्तप्रवाहाची जरूरी असते, म्हणून अशीं कामें करतांना रक्ताशयाची क्रिया जोरानें चालू असते.

धांवणें, पोहणें, मोठीं वजनें उचलणें वगैरे व्यायामांनीं रक्ताशयाची शक्ति वाढते.

खांद्यास बळकटी आणण्याकरितां व्यायाम.—हातानें दोरीस धरून लेंबकाळणें, झाडावर चढणें, सिंगल बार व मलखांब करणें इ०.

मनगट बळकट करण्याकरितां व्यायाम.—जोडी घंटेप्रमाणें हातांत धरून ती घंटेप्रमाणें हालविणें. ( मूळच्या स्थितीशीं काटकोन होईपर्यंत जोडी दोन्ही अंगांस वळवावी. )

नेहमींप्रमाणें जोडी धरून ती समोर आडवी ( हाताच्या सरल-रेषेंत ) येईल अशी वांकवावी.

बोटांकरितां.—बोटांचीं शेवटें पेटीच्या झांकणाखालीं किंवा मोठ्या पुस्तकाखालीं घालून तें उचलावें.

फुफ्फुसांचा विकास करण्यास प्राणायाम हा सर्वोत्कृष्ट व्यायाम होय.—मोठ्या स्नायूंना श्रम झाले म्हणजे फुफ्फुसांचा संकोच-विकास जोरानें होतो; म्हणून मोठ्या स्नायूंचा व्यायाम फुफ्फुसांच्या विकासाचें एक साधन आहे. पण हें साधन अप्रत्यक्ष होय. याहीपेक्षां एक नजीकचें व प्रत्यक्ष साधन आहे. तें साधन प्राणायाम हें होय. फुफ्फुसांचा संकोच-विकास जोरानें झाल्यानें जर त्यांचा विकास होतो, तर तो ( संकोच-विकास ) इतर स्नायूंना श्रम देऊन करविण्यापेक्षां, प्रत्यक्ष फुफ्फुसांकडून करविला तर तें कार्य अधिक सोपें होईल हें उघड आहे. म्हणून फुफ्फुसांचे विकासासाठीं प्राणायामाचा उपयोग करावा. जोरानें श्वासोच्छ्वास केल्यानें फुफ्फुसांचा संकोच-विकास जोरानें होतो; व संकोच-विकास जोरानें झाल्यानें स्नायु मोठे होऊन बळकट होतात; म्हणून प्राणायामानें—जोराच्या श्वासोच्छ्वासानें—फुफ्फुसांचा विकास करणें ही गोष्ट साध्य होण्यासारखा आहे. प्राणा-

याम करणें ही गोष्ट अतिशय सुलभ आहे. कांहीं अडचणीमुळे इतर व्यायाम घेतां आला नाही तरी प्राणायाम करण्यास कोण-तीही अडचण पडत नाही. म्हणून त्याची माहिती व त्याचा अभ्यास सर्वांस आवश्यक आहे.

तथापि व्यायाम करण्यास वेळ झाला नाही, तरच प्राणायाम करावा असें नाही. नेहमींचा व्यायाम करूनही प्राणायाम केल्यानें प्रकृतीस फार फायदा होतो. प्राणायामानें क्षय गेल्याची उदाहरणें युरोपियन वैद्यांनीं दिली आहेत. प्राणायामाचें महत्त्व युरोपियन लोकही जाणूं लागले आहेत, व डंबेल्सच्या व्यायामाप्रमाणें प्राणायामाचा व्यायामही कांहीं युरोपियन राष्ट्रांनीं आपल्या सैन्यांमध्ये सुरू केला आहे.

प्राणायाम करण्याचे अनेक प्रकार आहेत. पैकीं अगदीं साधा प्रकार पुढील होय. फुफ्फुसें पूर्णपणें हवेनें भरेपर्यंत नाकानें सावकाश श्वास घ्यावा. नंतर थोडा वेळ श्वास दाबून धरावा आणि नंतर श्वास सावकाश सोडावा. मधून मधून श्वास जोरानेही सोडावा. याप्रमाणें ५।६ वेळां करावे. पुढें हीच क्रिया वाढवीत वाढवीत १०।२० वेळां श्वासोच्छ्वास करावा. हा प्राणायाम अगदीं स्वच्छ व मोकळ्या हवेत करणें जरूर आहे, हें ध्यानांत ठेवावें.

प्राणायामाचे अन्य प्रकारांपैकीं पुढील प्रकार महत्त्वाचे आहेत.

( १ ) पोटावर दोन्ही हात ठेवावे व श्वास घेण्यास आरंभ करावा. पोट पूर्णपणें फुगेपर्यंत श्वास आंत घ्यावा. श्वासानें फुफ्फुसें पूर्णपणें फुगलीं म्हणजे थोडा वेळ श्वास दाबून धरावा व नंतर सोडावा.

( २ ) पोट न फुगावितां उलट तें आंतील बाजूस ओढून छातीचा वरचा भाग फुगेल अशा रीतीनें श्वास आंत ओढावा. श्वास ओढणें झाल्यावर थोडा वेळ थांबून श्वास बाहेर सोडावा.

( ३ ) मध्यपडदा खालीं ढकलीत श्वास घ्यावा. मध्यपडदा खालीं गेल्यावर श्वास थोडा वेळ दाबून धरून मध्यपडदा वर उचलावा आणि छातीचा वरचा भाग फुगेल अशा रीतीनें श्वास आंत ओढावा व नंतर तो थोडा वेळ दाबून धरून सोडावा.

प्राणायामापासून पूर्ण फायदा होण्यास वरील तिन्ही प्रकारचे प्राणायाम आवश्यक आहेत; म्हणून त्या सर्वांचा उपयोग करावा. फुफ्फुसांच्या वरच्या भागांस शुद्ध हवा मिळण्यास तिसऱ्या प्रकारचा प्राणायाम विशेष उपयोगी आहे. याकरितां कफक्षय होण्याची भीति ज्यांना असेल त्यांनीं ह्या प्राणायामाचा उपयोग विशेष करावा.

नेहमींच्या श्वासोच्छ्वासानें फुफ्फुसांचा संकोच-विकास जोरानें होत नाही. यामुळे, फुफ्फुसांचे वरचे शेवटांत जी हवा असते ती प्रत्येक उच्छ्वासाबरोबर बाहेर ढकलली जात नाही, व प्रत्येक श्वासाबरोबर येणारी ताजी हवा फुफ्फुसांचे वरचे भागांत पूर्णपणें जात नाही. म्हणून फुफ्फुसांचे या भागास स्वच्छ हवेचा पुरवठा पुरेसा होत नाही. या कारणानें हे भाग अशक्त राहतात व त्यांस विकार होण्याची भीति असते. असें होऊं नये व या भागास हवेचा पुरवठा होऊन ते मजबूत व्हावे, याकरितां वर सांगितलेल्या प्राणायामपद्धतीचा उपयोग अवश्य करावा.

# भाग ११ वा.

## ब्रह्मचर्य.

शारीरिक संपत्ति संपादण्यास मुख्य उपाय व्यायाम आहे; म्हणून त्यासंबंधाने पूर्वी माहिती दिली आहे; परंतु या उपायास ब्रह्मचर्य व योग्य आहार यांचीही मंदत जरूर आहे. म्हणून त्यासंबंधाने संक्षिप्त माहिती या व पुढच्या भागांत देण्याचा प्रयत्न केला आहे.

द्रव्यरूपी संपत्ति वाढविणाऱ्या मनुष्याने निष्कारण फाजील खर्च किंवा उधळेपणा टाळणे जसे आवश्यक आहे, तसे शारीरिक संपत्ति संपादू इच्छिणाऱ्याने ब्रह्मचर्य पाळणे अत्यावश्यक आहे. खर्चामध्ये नियमितपणा नसेल तर वाटेल तेवढ्या संपत्तीची राखरांगोळी होण्यास ज्याप्रमाणे उशीर लागणार नाही, त्याप्रमाणे ब्रह्मचर्याचे उल्लंघन मनुष्याच्या हातून होईल तर त्याची मूळची शारीरिक संपत्ति केवढीही असली तरी, तिचा क्षय होण्यास विलंब लागणार नाही. रक्त हे अन्नाचे सार आहे आणि वीर्य हे रक्ताचे सार आहे. अर्थात् वीर्याचा व्यय झाल्याने शरिरांतील अत्यंत महत्त्वाचे द्रव्याचा व्यय होतो. वीर्योत्पत्तीचा व वीर्यबाहुल्याचा जो तारुण्यकाल, त्या कालीच मनुष्याच्या सर्व शक्ति अतिशय जोमांत असतात. जग नंदनवनमय

भासविणारी दिव्य काव्यमय दृष्टि तारुण्यावस्थेतच प्रकट होते. तसेंच वंशविस्तार करवून स्वतःस लौकिकदृष्ट्या अमर करण्याचें साधन वीर्यच आहे. यावरून व वीर्याच्या न्हासाबरोबर मनुष्याच्या इतर शक्तींचाही न्हास होतो, या अनुभवावरून वीर्य ही वस्तु किती महत्त्वाची आहे हें समजून येण्यासारखें आहे. ज्यांच्यामध्ये वीर्योत्पत्ति होत नाही, अशा (पुंस्त्वहीन) लोकांमध्ये सर्व प्रकारच्या मर्दानी व उच्च गुणांचा किती अभाव असतो, ही गोष्टही वीर्याचें महत्त्व दर्शविणारी आहे. अशा प्रकारें वीर्य हा शरिरांतील अत्यंत मौल्यवान् पदार्थ असल्यामुळे त्याचा अयोग्य वेळीं व्यय करणें ही गोष्ट आरोग्यास अत्यंत घातक आहे. कांहीं प्राण्यांमध्ये स्त्रीपुरुषसंबंध जन्मांतून फक्त एकदाच घडतो व तो संबंध पूर्ण झाल्याबरोबर नर गतप्राण होतो, यावरून वीर्यपतन व शरिरांतील प्राणरूपी चैतन्याचा नाश यांमध्ये किती निकट संबंध आहे व वीर्याचा फाजील व्यय करणें, ही गोष्ट आयुष्यहानि करण्यास किती कारणीभूत होत असली पाहिजे हें दिसून येणार आहे. म्हणून शारीरिक संपत्ति राखू इच्छिणाऱ्यांनीं ब्रह्मचर्य पाळण्याविषयी अत्यंत दक्ष असलें पाहिजे. मानसिक संपत्ति व बुद्धितेज राखण्यास ब्रह्मचर्याची किती आवश्यकता आहे, याविषयी आपले धर्मग्रंथ व इतर धर्मग्रंथ पूर्ण साक्ष देत आहेत.

आतां ब्रह्मचर्य पाळणें अवश्य आहे, म्हणून पुरुषांनीं आजन्म स्त्रीपराङ्मुख रहावें, असें सांगण्याचा आमचा हेतु नाही. व्यवहाराच्या व भौतिक शास्त्राच्या दृष्टीनें पाहतां परस्परांनीं परस्परांचें दर्शन टाळावें, याकरितां परमेश्वरानें स्त्रीपुरुषजाति निर्माण केल्या,

असें मुळींच दिसत नाहीं. तेव्हां वीर्यनिरोध करून जन्मभर संन्याशी रहा, असें सांगण्याचा आमचा उद्देश नाही. गृहस्थाश्रम मनुष्यास आवश्यक आहे व तो सुखावह आहे, असेंच आमचें मत आहे. पण आम्हांस सांगावयाचें तें एवढेंच कीं, गृहस्थाश्रम जरी सुखावह आहे तरी त्यामध्येही स्त्रिसंबंधाचें सुख मनुष्यानें किती ध्यावें यास सृष्टिनियमांनीं मर्यादा घातली आहे व त्या मर्यादेचे आंत आपण राहिलें पाहिजे. ब्रह्मचर्याच्या मर्यादेचें अतिक्रमण करणाऱ्यांना अशक्तता, उत्साहहीनता, कडकी, क्षुधामाद्य, ( व अतिक्रमण फार झाल्यास प्रमेहादि भयंकर विकार ) इत्यादि जे दोष जडतात, त्यांचा विचार केला असतां ब्रह्मचर्याची आवश्यकता गृहस्थाश्रमामध्येही किती आहे, हें सर्वास दिसून येईल.

गृहस्थांची गोष्ट सोडून दिली तरी, 'ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम् ॥ यः पुमान् गर्भमाधत्ते कुक्षिस्थः स निपद्यते' या वचनांत चरक ऋषींनी, पंचवीस वर्षांपर्यंत पुरुषांना व १६ वर्षांपर्यंत स्त्रियांना, ब्रह्मचर्याची जी मर्यादा सांगितली आहे, ती पाळण्याचा तरुण जनांनीं प्रयत्न केला पाहिजे. आतां अलीकडे आयुर्मर्यादा कमी झाल्यानें हल्लीं ही मर्यादा कांहीं पुरुषांना राखतां येणार नाहीं हें खरें आहे; तथापि ती २०--२२ वर्षांपर्यंत तरी सर्वांनीं राखली पाहिजे.

विद्यार्थ्यांनीं ब्रह्मचर्य राखणें म्हणजे लग्न न करणें एवढेंच नव्हे, तर स्त्रीपुरुषसंबंधी विषयास मनांत थाराच न देणें हें होय; हें विसरतां कामा नये. कामेच्छेस मनांत संचार करूं दिल्यानें वीर्यपिडापासून वीर्यस्खलन होतें. म्हणून या विषयासंबंधानें कसलाही विचार मनांत येऊं देऊं नये.

लग्न होऊन सहधर्मचारिणीची गांठ पडे तोंपर्यंत मूत्रोत्सर्गाचाचून कोणत्याही अन्य हेतूनें जननेंद्रियास हात लावणें, अत्यंत निंद्य व अपायकारक आहे ही गोष्ट, योग्य कालीं, मुलांचे मनांत त्यांचे पालकांनीं विववावी.

**ब्रह्मचर्य राखण्यास पुढील गोष्टी आवश्यक आहेत:—**

**उत्तेजक आहाराचें सेवन करूं नये.**—उत्तेजक आहारानें कामेच्छा वाढते व भलतेसलते विचार मनांत येतात, म्हणून अशा आहाराचें सेवन करूं नये. तिखट, मसाले, कांदा, लसूण, चहा, काफी, तंबाकू वगैरे पदार्थ, सर्व प्रकारचीं मद्यें व मांसें उत्तेजक आहेत. म्हणून हे पदार्थ विद्यार्थ्यांना वर्ज्य होत. तसेंच खोबरे, दूध व डाळी यांचें मर्यादेबाहेर सेवन झालें, तर ते पदार्थही ब्रह्मचर्यभंगास कारण होतात. म्हणून त्यांचेंही परिमित सेवन करावें.

**शृंगारविषयक कोणत्याही गोष्टीचें चिंतन किंवा चर्चा करूं नये.**—या गोष्टीचे चर्चेनें किंवा ध्यानानें वासना जागृत होऊन वीर्य स्थानभ्रष्ट होतें, म्हणून त्या टाळाव्या. अर्थात् नाटकें, तमाशे वगैरेही वर्ज्य समजावे.

**निजण्यापूर्वीं परमेश्वराचें किंवा एकाद्या पूज्य विभूतीचें चिंतन करावें.**—निजण्यापूर्वीं जे विचार मनांत घोळत असतात, त्यांचा झोपेमध्येही आपल्या मनावर परिणाम होतो. म्हणून झोपेंत भलते विचार मनामध्ये येऊं नयेत याकरितां, निजण्याचे पूर्वीं ईश्वराचें किंवा दुसऱ्या एकाद्या पूज्य विभूतीचें चिंतन करावें.

**पुरेसा थकवा येईल इतका मोकळ्या हवेंत सायंकाळीं व्यायाम घ्यावा**—व्यायामानें मनुष्य थकला म्हणजे त्याचे मनांत

दुसरे कोणतेही जोराचे विचार येत नाहीत व त्यास गाढ झोंप लागते. शिवाय शरिरांतील शक्तीचा व्यय व्यायामानें होणारी झजि भरून काढण्यांत रात्रौ झाला, म्हणजे दुसऱ्या कोणत्याही प्रवृत्तीस विशेष सवड राहतच नाही. म्हणून व्यायामानें ब्रह्मचर्याचें रक्षण होतें. व्यायामानें तारुण्य उशीरां येतें, ही गोष्ट अनुभवासिद्ध व वैद्यशास्त्र-संमत आहे. यावरून ब्रह्मचर्य राखण्यास व्यायामाचा उपयोग किती होतो हें दिसून येईल. तारुण्य उशीरां आल्यानें आयुष्याच्या इतर अवस्थाही उशीरां येतात व अर्थात् त्यायोगें आयुर्मर्यादा वाढते. हा त्यापासून विशेष फायदा आहे.

**स्वप्नांत वाईट विचार येऊन ज्यांच्या ब्रह्मचर्याचा भंग होतो त्यांचेकरितां नियमः—**

१ कामोत्तेजक विचार टाळण्याचा प्रयत्न केल्यानें कधीं कधीं ते विचार जोरानें मनांत शिरूं लागतात. यास्तव असे विचार टाळण्यास हा उपाय आहे कीं, ते विचार ज्या वस्तूच्या दर्शनानें किंवा ज्या प्रसंगानें उत्पन्न होतात त्या वस्तु व ते प्रसंग टाळावे, व ज्यामध्ये आपलें मन रमेल अशा दुसऱ्या एकाद्या विषयाचा ध्यास घ्यावा. खेळ, तालीम, गायन, एखादी हस्तकौशल्याची कला किंवा एकादा शास्त्रीय विषय यांपैकी ज्यामध्ये आपणांस विशेष गोडी वाटत असेल त्याचा अभ्यास करावा; म्हणजे या विषयाचे विचारानें मन भरून गेलें म्हणजे इतर विचार मनांतून निघून जातात.

२. कोठा साफ ठेवावा. मलावष्टंभ झाल्यानें मलानें भरलेल्या

आंतड्याचा भार वीर्याशयावर पडून रेतस्खलन होतें. म्हणून मलशुद्धि करणारें औषध जरूरीप्रमाणें आठवड्यांतून २।४ वेळां घेऊन कोठा साफ ठेवावा. रात्री निजण्याचे पूर्वी शौचास जाऊन यावें. त्यायोगानें आंतडीं हलकीं राहतात. कोठा साफ ठेवण्यास त्रिफळाचूर्ण फार उपयोगी आहे.

३. सर्व जड, उष्ण, उत्तेजक व वातुल पदार्थ खाण्याचें टाळावें. उसळी, डाळी, थालिपिटें, कडबोळीं, भजीं, कांद्याचे व लसणाचे पदार्थ यांनीं बद्धकोष्ठता उत्पन्न होते; म्हणून असे पदार्थ—विशेषतः रातीं—खाऊं नयेत.

४. रात्री लवकर जेवावें. जेवणानंतर दोन तास जागे राहून नंतर निजतां येईल इतकें आधीं जेवावें. झोंप लागल्यावर शरिरांतील सर्व व्यापार मंद होतात; अर्थात् पचनक्रियाही मंद होते. म्हणून भोजन झाल्यावर लवकर निजल्यानें पचनक्रिया चांगली होत नाही! भोजनोत्तर दोन तास जागल्यानें, तेवढ्या वेळांत, पचनक्रियेचा बराच भाग होऊन गेलेला असतो. म्हणून त्यानंतर निजल्यानें पचनक्रियेचे कामास विशेष प्रतिबंध होत नाही. जेवणानंतर लवकर निजल्यानें अन्नपचन बरोबर होत नाही. त्यामुळें झोपेंत स्वप्नें पडतात व बद्धकोष्ठता उत्पन्न होते. स्वप्नांतील उच्छृंखल विचार, व अपचनामुळें होणारी बद्धकोष्ठता या गोष्टी ब्रह्मचर्यभंगास अनुकूल आहेत; म्हणून त्या योगानें स्वप्नावस्था होते.

५. रात्री निजण्यापूर्वीं २ तासपर्यंत पाणी किंवा दुसरा कोणताही पातळ पदार्थ पिऊं नये. पाणी अथवा दुसरा कोणताही

पातळ पदार्थ यांतील पाण्याचा बहुतेक भाग मूत्राच्या द्वारेच जावयाचा असतो. म्हणून निजतांना अशा पदार्थांचे सेवन केल्याने रात्री मूत्राशय मूत्राने भरून जातो; व तो भरून गेला म्हणजे त्याचा भार शेजारच्या वीर्याशयावर पडून त्या इंद्रियांत चेतना उत्पन्न होऊन वीर्य स्थानभ्रष्ट होते. या कारणाने कधी कधी वीर्य-स्खलन होते. निजण्याचे पूर्वी दोन तास पाणी प्याले म्हणजे या पाण्याचा बराच अंश निजण्याचे पूर्वी केलेल्या मूत्रोत्सर्गा-बरोबर निघून जातो, व त्यायोगे वरील प्रकारची भीति राहत नाही.

६. कृमि अथवा जंत होऊं देऊं नयेत. कृमींनीं बद्धकोष्ठता उत्पन्न होते. शिवाय कृमीच्या चळवळीमुळे पोटाचे खालचे भागांत क्षोभ होतो. या क्षोभामुळेही वीर्यस्खलन होते. म्हणून पोटांत कृमि झाले असल्यास कृमिहारक औषधे घेऊन त्यांचा नाश करावा.

७. पाठीवर उताणें निजूं नये. या स्थितीमध्ये वीर्याशयावर मूत्राशयाचा भार पडतो; म्हणून ही शरीरस्थिति स्वभावस्था होण्यास अनुकूल आहे. याकरितां पाठीमागे गांठ येईल अशा रीतीने एखादा रुमाल किंवा फडके कमरेस बांधावे; म्हणजे झोपेंतही उताणें निजतां येणारच नाही.

८. मोकळ्या हवेंत निजावे व अंगाखालीं अथवा अंगावर फार ऊबदार कपडे घेऊं नयेत. कोंदट हवेंत निजल्यानें झोप गाढ न येतां स्वप्नयुक्त येते. तसेंच अंगावर फार पांघरुणें घेतल्यानें वाजवीपेक्षां जास्त ऊब उत्पन्न होते व कधी कधी झोप पुरेशी झाल्यावरही केवळ कपड्यांचे उबेमुळे सकाळीं जास्त झोप लागते. ही झोप स्वप्न-

युक्त असते व त्यावेळीं आंतड्यांत मलाची हालचाल होत असते. म्हणून अशा वेळीं स्वप्नावस्था होण्याचा संभव विशेष असतो. करितां हा संभव टाळण्यास उघड्या हवेंत वेताचे कपडे घेऊन निजणें व सकाळीं लवकर उठणें हा एक उपाय आहे.

वरील नियमांशिवाय, ब्रम्हचर्य राखण्यास आवश्यक म्हणून जे नियम मार्गें सांगितले आहेत, तेही पाळण्यांत यावे.



# भाग १२ वा.

—S\*S—

## अन्न.

अन्नाचे प्रकार.—शरिरांत जी नित्य झीज होते व जी घाम, मूत्र, उच्छ्वास इत्यादि, मलरूपानें निघून जाते, तिजमधील बराच भाग कार्बनमय असतो, थोडा भाग नायट्रोजनमय असतो व फार थोडा भाग क्षारमय असतो. म्हणून हीं द्रव्यें शरिरास पुरवण्याकरितां आपल्या आहारांत पुष्कळसें कार्बनमय द्रव्य, थोडे नायट्रोजनमय द्रव्य व थोडे क्षार असले पाहिजेत.

आपल्या शरिरांतील मांसांत मुख्य विशिष्ट द्रव्य नायट्रोजन होय. हा नायट्रोजन पुरविणारा अन्नाचा जो नायट्रोजनविशिष्ट भाग असतो, त्यांस मांसोत्पादक द्रव्य म्हणतात, व ज्या अन्नांत हा भाग विशेष असतो, त्या अन्नांना मांसोत्पादक अन्न म्हणतात.

आपल्या शरिरास अवश्य लागणारी उष्णता उत्पन्न होतांना व निरनिराळ्या भागांचें चलन होत असतांना शरिरांतील जे घटक द्रव्य जळत असतें, ते मुख्यतः कार्बनमय असतें. म्हणून हें कार्बनमय द्रव्य शरिरास पुरविणाऱ्या अन्नास कार्बनमय अन्न अथवा उष्णतोत्पादक अन्न म्हणतात.

ज्या अन्नांत मांसोत्पादक भाग विशेष असतो, त्यांस मांसोत्पादक अन्न व ज्यांत उष्णतोत्पादक भाग विशेष असतो त्यास उष्णतोत्पादक अन्न म्हणण्याचा प्रचार आहे. परंतु बहुतेक

अन्नांमध्ये हे दोन्ही भाग कमीजास्त प्रमाणानें असतात हें लक्षांत ठेवलें पाहिजे.

**मांसोत्पादक** ( अथवा नायट्रोजनविशिष्ट ) अन्नाचे मुख्य प्रकार पुढील होत.—मांस, अंडी, दूध, सर्व द्विदल धान्ये.

**उष्णतोत्पादक** ( अथवा कार्बनमय ) अन्नाचे मुख्य प्रकार—

- ( १ ) सर्व पिष्टमय धान्ये—तांदूळ, गहू, ज्वारी, वाजरी, नाचणी  
 ....इ० ( २ ) सर्व पिष्टमय कंद आणि मुळें व त्यांपासून तयार  
 केलेलीं पिष्टे—बटाटे, रताळीं, तवकील, साबूदाणा....इ०  
 ( साबूदाणा ज्या पिठाचा केलेला असतो तें पीठ 'सागो' नांवाच्या  
 झाडाचे खोडांत सांपडतें. ) ( ३ ) शर्करामय पदार्थ—साखर  
 व ज्यांत साखर आहे असे सर्व पदार्थ. ( ४ ) सर्व प्रकारचे डिक.  
 ( ५ ) स्निग्ध पदार्थ—तूप, चरबी, व सर्व प्रकारचीं तेलें.

**क्षारमय अन्न.**—मीठ केवळ क्षारमय आहे. खाण्याच्या पदार्थांमध्ये केवळ क्षारमय असा दुसरा पदार्थ नाही. क्षारथोड्या प्रमाणानें फळें, भाजीपाला, मांस, अंडी व धान्ये यांतही सांपडतो.

उष्णतोत्पादक अन्नांपैकी स्निग्ध पदार्थांपासून शरिरास उष्णतेचा पुरवठा फार लवकर होतो व त्यांचे खालोखाल शर्करामय पदार्थांपासून होतो. म्हणून उष्णतोत्पादक अन्नांत हे प्रकार विशेष महत्त्वाचे होत. या कारणास्तव ह्या भागांचा निर्देश पृथक्पणें केला जातो.

निरनिराळ्या अन्नांतील मांसोत्पादक भागास इंग्रजीत जीं निरनिराळीं नांवे दिलीं आहेत, तीं पुढें सांगितलीं आहेत.

|            |             |       |            |          |
|------------|-------------|-------|------------|----------|
| गन्हांतील  | मांसोत्पादक | भागास | ग्ल्यूटेन  | म्हणतात. |
| दुधांतील   | "           | "     | केसीन      | "        |
| डाळींतील   | "           | "     | लेग्युमेन  | "        |
| मांसांतील  | "           | "     | प्रोटीड    | "        |
| अंड्यांतील | "           | "     | अल्ब्यूमेन | "        |

निरनिराळ्या अन्नांचे घटक भाग.—नेहमी खाण्यांत येणाऱ्या पदार्थांत मांसोत्पादक भाग, पिष्टमय भाग, स्निग्ध भाग व क्षार यांचें शेंकडा प्रमाण पुढें दिल्याप्रमाणें आहे.

|             | पाणी. मांसोत्पादक |      | पिष्टमय |      | स्निग्ध क्षार. |      |
|-------------|-------------------|------|---------|------|----------------|------|
|             | भाग.              | भाग. | भाग.    | भाग. | भाग.           | भाग. |
| दूध         | ८६                | ५    | ४       | ४    | १              |      |
| गन्हाचा पाव | ४०                | ८    | ४९.२    | १.५  | १.३            |      |
| कणिक        | १५                | ११   | ७०.३    | .२   | १.७            |      |
| तांदूळ      | १०                | ५    | ८३.२    | .८   | .५             |      |
| मका         | १३.५              | १०   | ६४.५    | ६.७  | १.४            |      |
| वाटाणे      | १५                | २२   | ५३      | २    | २.४            |      |
| हरबरा       | ११                | २०   | ५४      | ४    | "              |      |
| तूर         | १३                | १७   | ५५      | २    | "              |      |
| मूग         | ११                | २३   | ५४      | २    | "              |      |
| उडीद        | ११                | २३   | ५४      | २    | "              |      |
| कोबी        | ९१                | .२   | ५.८     | .५   | .७             |      |
| बटाटे       | ७४                | १.५  | २३.४    | .१   | १              |      |
| गाजरें      | ८५                | .६   | ८.४     | .२५  | .७             |      |

मनुष्याच्या आहारांत निरनिराळ्या अन्नांचें काय प्रमाण असावें ?—मनुष्याच्या अंगांतून जे पदार्थ मलरूपानें बाहेर पडतात, त्यांचें रसायनरीत्या परीक्षण केलें असतां, त्यांत स्थूल-मानानें पुढील भाग दिसून येतातः—४॥ हजार ग्रेन कार्बन व ३०० शें ग्रेन नायट्रोजन.

भिन्न अन्नांमध्ये कार्बन व नायट्रोजन यांचें प्रमाण काय असतें यासंबंधानें वर जी माहिती दिली आहे, तिजवरून असें दिसून येईल कीं, बराबर ४॥ हजार ग्रेन कार्बन व ३०० शें ग्रेन नायट्रोजन ज्यापासून मनुष्यास मिळेल असें एकही अन्न नाही. बहुतेक अन्न अशी आहेत कीं, त्यांतून कार्बन किंवा नायट्रोजन यांपैकीं एक पदार्थ आपणांस हवा तेवढाच मिळावा अशा प्रमाणानें ते घेतले, तर दुसरा पदार्थ आपणांस पाहिजे त्यापेक्षां कमी मिळेल किंवा ज्यास्त मिळेल. उदाहरणार्थ, गव्हाचे चपातींत कार्बन व नायट्रोजन यांचें प्रमाण ३०: १ असल्यामुळें, ३ शें ग्रेन नायट्रोजन मिळेल इतकी चपाती खाल्ल्यास, ९००० ग्रेन कार्बन—म्हणजे पाहिजे त्यापेक्षां ४॥ हजार ग्रेन कार्बन जास्त—पोटांत जाईल. तेंच, मांसांत कार्बन व नायट्रोजन यांचें प्रमाण ७: २ असल्यामुळें, ३ शें ग्रेन नायट्रोजन मिळेल इतकें मांस खाल्लें, तर १०५० ग्रेन कार्बन—म्हणजे पाहिजे त्यापेक्षां सुमारे ३॥ हजार ग्रेन कमी (कार्बन)—पोटास मिळेल. हाच आक्षेप अन्नाच्या इतर प्रकारांसही लागू आहे. आतां पूर्वी सांगितलेंच आहे कीं, अन्नांतील केवढ्या द्रव्याचें रक्त-मांस बनावयाचें यासंबंधानें मर्यादा ठरलेली आहे; यामुळें या मर्यादेबाहेर एखादें द्रव्य शरिरांत गेलें तर तें बाहेर टाकून देण्यास

शरिरास विनाकारण श्रम पडून अपाय होतो. याकरित शरिरास पाहिजे तेवढीं भिन्न द्रव्ये अन्नापासून मिळविण्यास त्यांचे योग्य रीतीनें मिश्रण केले पाहिजे. ह्यासाठीच प्रत्येक दिवशीच्या आहारांत, भात व भाकरी मिळून ५०-६० तोळे, डाळ १० तोळे, तूप किंवा तेल २-५ तोळे व दूध अच्छेर ह्या प्रमाणांत निरनिराळे पदार्थ असणें जरूर आहे.

**निरनिराळ्या अन्नांची पचनीयता.**—अन्नाच्या भिन्न घटक भागांसंबंधानें ही गोष्ट लक्षांत ठेविली पाहिजे कीं, त्या सर्वांची पचनीयता सारखी नसते. म्हणजे कांहीं अन्नांतील कांहीं भाग पचनास हलके असतात, तर कांहींतील जड असतात. उदाहरणार्थ, दुधांतील मांसोत्पादक भाग पचनास फार हलका आहे, परंतु डाळींतील मांसोत्पादक भाग पचनास फार जड आहे. तसेंच तूप पचण्यास हलकें आहे; परंतु त्यां मानानें तेल जड आहे. शरिरास एखाद्या अन्नापासून फायदा होणें, हें त्या अन्नाचे योग्य पचन होण्यावर आहे. म्हणून एखाद्या अन्नापासून शरिरास किती फायदा होईल हें ठरविण्यास त्यांतील पोषक द्रव्यांच्या पचनीयतेचा विचार केला पाहिजे.

मांसोत्पादक भागाच्या पचनीयतेसंबंधानें निरनिराळ्या पदार्थांचे नंबर पुढें लिहिल्याप्रमाणें आहेत. दूध, गहू, मूग, वाटाणा, मसूर, उडीद, वाल, हरवरा, तूर.

पचनीयतेसंबंधानें खिग्ध अन्नांचे नंबर पुढील प्रमाणें आहेत—  
तूप, तिळाचें तेल, करडईचें तेल, इतर तेलें.

पचनास हलके असे पदार्थ पुढील होतः—दूध, तांदूळ, साबु-  
दाणा, बदाम, बेदाणा, मनुका.

सुपचनीय फळे—सफरचंद, द्राक्षें, डाळिंबें.

इतर नायट्रोजनविशिष्ट पदार्थ पुष्कळ असतांना पौष्टिकतेसाठीं  
वरील पदार्थांचाच उपयोग मनुष्यें विशेष कां कारितात, याचें कारण  
वरील माहितीवरून समजून येण्यासारखें आहे.

स्वस्त व पौष्टिक अशा पदार्थांत भुईमुगाचा नंबर पहिला  
आहे. त्याचे खालोखाल मूग, हरबरा, हीं द्विदल धान्यें पौष्टिक आहेत.  
परंतु हे पदार्थ पचनास जड आहेत. तथापि ज्यांचीं पचनेंद्रियें  
चांगलीं आहेत, अशा गरीब मुलांनीं यांचा उपयोग करण्यास  
हरकत नाही. ज्यांना गरिबीमुळे दूध घेण्याचें सामर्थ्य नसेल  
त्यांनीं या पदार्थांचा उपयोग जरूर करावा. तालीम करून भिज-  
लेली हरबऱ्याची डाळ खाण्याचा प्रघात आपल्याकडे कांहीं लोकांत  
आहेच.

पचनास हलकें असून स्वस्त असें खिगधान्न तीळ होय; म्हणून  
ज्या गरीब लोकांना तूप मिळत नाही, त्यांनीं या पदार्थांचा उप-  
योग करावा.

खोबरें हा स्वस्त व पौष्टिक पदार्थ आहे. परंतु तो थोडा जड व  
कामोत्तेजक आहे; म्हणून तो चांगल्या पचनशक्तीच्या विवाहित  
मनुष्यांनीं शक्तीकरितां खावा.

अन्नासंबंधानें किरकोळ माहिती.—वाजवीपेक्षां जास्त शिज-  
विलेले अन्न, तसेंच तुपांत किंवा तेलांत तळलेले पदार्थ पचनास  
जड होतात. म्हणून असे पदार्थ खाण्यामध्ये फारसे येऊं नयेत.

शरीरास लागणारे महत्त्वाचे क्षार भाजीपाल्यापासून मिळतात. हे पदार्थ खाल्ले नाहीत तर रक्त शुद्ध रहात नाही व स्कर्व्ही रोग होतो. ) हिरड्यांतून रक्त वाहणें, हें स्कर्व्ही रोगाचें लक्षण आहे. ) म्हणून ताजा भाजीपाला अवश्य खात जावा. भाजीपाला न मिळेल तर निदानी कागदी लिंबाचा उपयोग जेवण्यांत करावा.

कांदे, बटाटे, टोमेटो यांच्या भाज्या रक्तशुद्धिकारक आहेत. टोमेटोची भाजी पाचकही आहे. म्हणून या भाज्यांचा उपयोग जेवणांत करावा. मात्र कांदा कामोत्तेजक असल्यामुळे विद्यार्थी व ब्रह्मचारी यांनी त्याचा उपयोग करूं नये.

फळे—बहुतेक फळे पचण्यास हलकी असतात व त्यांपासून महत्त्वाचे क्षार व आसिडे (आम्ले) शरीरास मिळतात; म्हणून आहारामध्ये फळे अवश्य असावी. जेवणानंतर फळे खाणें हितकारक आहे. कारण, फळांतील कांहीं पाचक रस अन्नास मिळून अन्नाचें पचन चांगलें होतें. बहुतेक फळांमध्ये मलशुद्धि करण्याचा धर्म आहे. ज्यांची ज्यांची म्हणून पचनशक्ति मंद आहे, त्या सर्व लोकांनी आहारामध्ये फळांचा विशेष उपयोग करावा. कांहीं फळांचे विशेष गुणधर्म पुढें दिल्याप्रमाणें आहेत.

आंबा—फार पौष्टिक पण कांहींसा जड. ज्यांना अजीर्णाची व्यथा नाही, त्यांनी जरूर खावा. आंबा खाल्ल्याने एकाचा † क्षयरोग गेल्याची हकीकत ऐकण्यांत आहे.

† क्षीण करणाऱ्या अनेक जाणें रोगांस 'क्षयरोग' हें नांव सामान्य लोकांकडून देण्यांत येतें. अशांपैकी वरील क्षयरोग असावा असे वाटतें. खरा क्षयरोग अशा रीतीने बरा होणें अशक्य आहे, हें ध्यानांत ठेविलें पाहिजे.

अंजीर—फार पौष्टिक पण जड. यामध्ये बद्धकोष्टता मोडण्याचा धर्म आहे. उन्हाळ्यांत उष्णताशामक इतर औषधे घेण्यापेक्षा सकाळीं अंजीर खाणे फार उत्तम. वाळलेल्या अंजिरांचा काढा किंवा मुरंबाही कोठा साफ ठेवण्यास उपयोगी पडतो.

द्राक्षे—पाचक व रक्तशुद्धिकारक.

रामफळ—सारक.

सफरचंद—पचनास फार हलके. आजारी मनुष्य व अशक्त मुले यांस देण्यास अत्युत्तम होय.

केळीं—पौष्टिक व मलशुद्धिकारक. त्यांच्यांत थोडासा गंधक असल्यामुळे तीं मलशुद्धिकारक आहेत.

संत्रां, मोसंबीं, नारिंगे—पाचक व रक्तशुद्धिकारक.

अननस—पाचक व रक्तशुद्धिकारक.

डालिंब—(गुण प्रसिद्ध आहेत.)

काकडी—सारक\* व उष्णतानाशक.

बदाम—पौष्टिक व मेंदूस थंडता आणणारे आहेत.

बेदाणा, व सर्वप्रकारच्या मनुका—सारक, व पौष्टिक आणि कडकी मोडणाऱ्या.

आहारासंबंधाने लक्षांत ठेवावयाचे नियम.

१. अन्न जितकें अधिक खावें तितकें अधिक चांगलें, ही कल्पना अतिशय चुकीची आहे.—अन्नाने शरिराचे पोषण होतें हें खरें आहे. पण यावरून असें होत नाही कीं, जितकें अधिक

\* सर्व सारक फळे उष्णतानाशक असतात, असा साधारण नियम आहे.

अन्न शरिरांत जाईल तितकें शरीर पुष्ट होईल. शरिरास अन्नाचा उपयोग होण्यास अन्नाचें योग्य पचन झालें पाहिजे. अन्नाचें पचन झालें नाहीं तर अन्नापासून शरिरास फायदा होणार नाहीं; एवढेंच नव्हे, तर अपायही होईल. म्हणून आपणांस जेवढें अन्न पचवितां येईल, तेवढेंच आपण खाल्लें पाहिजे. अन्नाच्या ज्या भागाचा शरिरास उपयोग नाहीं, तें शरिरांतील भिन्न मल-द्वारांनीं बाहेर टाकून द्यावें लागतें; व हें काम करण्यामध्ये शरिराच्या शक्तीचा विनाकारण व्यय होत असल्याकारणानें, पाहिजे त्यापेक्षां जास्त अन्न शरिरांत गेल्यानें शरिराची शक्ति न वाढतां उलट शरिरास अशक्तपणा येतो. वाजवीपेक्षां जास्त खाल्ल्यानें जेवणानंतर सुस्ती येते, एवढेंच नव्हे, तर दुसऱ्या दिवशीं नेहमीं पेक्षां हुषारी कमी वाटते, असा आपणांस जो अनुभव येतो, त्याचें कारण हेंच आहे. म्हणून अन्नासंबंधानें हें लक्षांत ठेविलें पाहिजे कीं, अन्न पुष्टिकारक आहे ही गोष्ट जरी खरी आहे, तरी आपणांस जेवढें अन्न पचवितां येतें, तेवढ्यापासूनच शरिरास फायदा होतो, व त्यापेक्षां जास्त अन्न खाल्ल्यापासून उलट अपाय होतो.

शरिराच्या रोजच्या जरूरीपेक्षां जास्त व आपल्या पचन-शक्तीच्या बाहेर खाल्लें अन्न विषवत् होय; म्हणून मर्यादेबाहेर अन्न कधींही खाल्लें नये.

अन्न तेवढें चांगलेंच, म्हणून जेवढें अन्न पोटांत जाईल तितकें शरीर अधिक पुष्ट होईल, अशा समजुतीनें, शिळें व नासलेलें अन्न खाण्याचा किंवा मर्यादेबाहेर अन्न खाण्याचा जो काहीं लोकांचा प्रघात आहे, तो अत्यंत अपायकारक व त्याज्य आहे.

२. अन्नाचें पचन झाल्यावांचून त्याचा कांहीं उपयोग नाही. अन्नाचें योग्य पचन होण्यास तें नियमित असावें लागतें; एवढेंच नव्हे, तर त्यास मोकळ्या हवेंतील व्यायामाची आवश्यकता आहे. म्हणून शरीरपुष्टीची इच्छा करणारांनीं केवळ चांगलें अन्न खाऊन स्वस्थ राहतां व्यायाम करणें आवश्यक आहे.

३ अन्न उत्तम रीतीनें चावावें. ज्या अन्नाचें चांगलें चर्वण होत नाही, त्याचें पचन होत नाही. म्हणून असें अन्न खाऊन न खाल्ल्यासारखेंच आहे. प्रत्येक घांस चाळीस वेळां चघळावा, असा एका डाक्टरानें नियम सांगितला आहे. भराभरा खाल्लेल्या अन्नापेक्षा नीट चघळून खाल्लें अन्न थोडें पुरतें व त्यापासून अंगांत ताकद जास्त राहते, असें अमेरिकेंत केलेल्या अनेक प्रयोगांवरून सिद्ध झालें आहे.

४ आहार दिवसांतून तीनदां किंवा फार झालें तर चारदां करावा. ज्यांना बरचेवर काम करावें लागतें व ज्यांचे नित्य व्यवसायांत शारीरिक श्रम बऱ्याच मानानें असतात अशांनीं, व लहान मुलें व तरुण लोक यांनीं, चारदां आहार करावा. परंतु जे लोक विशेष शारीरिक श्रम करत नाहीत, त्यांनीं दोन किंवा तीन वेळांपेक्षां जास्त वेळीं आहार करूं नये. (युरोपियन लोक अनेकदां खातात असें पाहून त्यांचें, फक्त खाण्याच्या बाबतींत अनुकरण करणारांस अनुलक्षून वरील म्हणणें आहे. इतर लोकांस हें म्हणणें लागूं नाहींच; कारण, त्यांच्यामध्ये वाजवीपेक्षां जास्त वेळ खाण्याचे दोषापेक्षां वाजवीपेक्षां कमी वेळ खाण्याचा दोषच विशेष

आढळून येतो. ) खाल्ले नाही तर थकवा वाटतो, अशी ज्यांची स्थिति असेल त्यांनीच खाण्याच्या वेळा वाढविणे इष्ट आहे. परंतु तशी स्थिती नसेल तर खाण्याच्या वेळा कमी ठेवणेच फायद्याचे आहे. दिवसांतून ३।४ वेळा खाणाऱ्या लोकांपैकी ज्यांना क्षुधा-मांघ असेल अशांनी आपली खाण्याची एकादी वेळ कमी करून काय अनुभव येतो हे पहावे; म्हणजे वेळ कमी करण्याने आपली भूक वाढली आहे, असेच त्यांना आढळून येईल.

५ जेवतांना मन आनंदांत ठेवावे व त्यावेळी इतर विषयांचा विचार करू नये. तसेच जेवतांना किंवा जेवणानंतर रागावण्याचे प्रसंग टाळावे. जेवणानंतर निदान अर्धा तासपर्यंत कसलेही श्रम करू नयेत. जेवतांना रागावण्याने किंवा विचार करण्याने, तसेच भोजनानंतर कोणतेही श्रम करण्याने, रक्ताचा प्रवाह शरिराच्या इतर भागांत जास्त गेल्यामुळे पोटांतील रक्ताचा प्रवाह कमी होतो, व या योगाने पचनक्रिया चांगली होत नाही.

६ जेवतांना पाणी होतां होईल तितके थोडे प्यावे. जेवतांना फार पाणी प्याल्याने पोटांतील जाठर रस पातळ व निर्बल होतो. त्यामुळे त्याचे कार्य अन्नावर चांगले होत नाही, व अर्थात् अपचनही चांगले होत नाही. जेवणानंतर सुमारे दीड दोन तासाने पाणी पिणे चांगले. अपचनामुळे पोटदुखी झालेल्या एका गृहस्थाची पोटदुखी, जेवतांना पाणी पिण्याचे सोडून दिल्यामुळे, गेल्याचे उदाहरण पाहण्यांत आहे. तथापि यासंबंधाने एकदम बदल करण्यापासून त्रास होईल तर तो क्रमाक्रमाने करावा.

## परिशिष्ट अ.

--:~:--

व्यायामशास्त्र या पुस्तकांतील कांहीं गोष्टींचे स्पष्टीकरणार्थ टीपा.

पान ७, ओळ १२.

‘एक जाड फांटा’—या फांट्यास मेंदूचें शेपूट म्हणणें जास्त योग्य होईल.

पान ९, ओळ ६.

‘६-१२ तास’—हा कर्मांत कमी काल आहे. अन्नाचा निकाल होण्यास २०-४० तासही कधीं कधीं लागतात.

पान १०, ओळ ५.

‘फुफ्फुसें’—रक्ताभिसरणाच्या इंद्रियांमध्ये फुफ्फुसांचा समावेश केला आहे, तो शास्त्रीय दृष्ट्या बरोबर नाही. कारण, फुफ्फुसे वास्तविकपणें श्वासोच्छ्वासाच्या इंद्रियांमध्ये येतात. तथापि ह्या इंद्रियांचा रक्तशुद्धि व रक्ताभिसरण यांशीं निकट संबंध असल्यामुळे व प्रस्तुत पुस्तकांतील इंद्रियविज्ञानशास्त्रविषयक माहिती संक्षिप्त असल्यामुळे, त्यांचा समावेश रक्ताभिसरणाच्या इंद्रियांत केला आहे.

पान १०, ओळ २०.

‘शीर’ हा शब्द रक्तवाहिनी या सामान्य अर्थानें योजला आहे. त्याचा प्रस्तुत स्थलीं संदर्भावरून शुद्धरक्तवाहिनी अथवा धमनी असा अर्थ होतो. व्यवहारांत शीर या शब्दाचा उपयोग artery शुद्धरक्तवाहिनी, vein अशुद्धरक्तवाहिनी, tendon स्नायूचें शेवट, अशा निरनिराळ्या अर्थीं होतो.

पान ११, ओळ १०.

‘शरिरांतील प्रत्येक हाडचाल’—ह्या शब्दांवरून बाह्य हालचाली व आंतील हालचाली [ म्हणजे निरनिराळ्या इंद्रियांच्या क्रिया ] हा अर्थ समजावयाचा.

पान ११, ओळ १०.

‘शरिराचे कांहीं भाग’—म्हणजे शरीर ज्या पेशींचे ( cells ) बनलेले आहे, त्यांचे परमाणु.

पान २२, ओळ १०.

उरोज स्नायु या ऐवजीं उरःस्थ स्नायु हें नांव जास्त योग्य होईल.

पान २४, ओळ १३.

सक्थिस्थ या ऐवजीं उरुस्थ हा शब्द जास्त योग्य होईल.

पान २५, ओळ १.

‘अंतर्जघ’—या ऐवजीं अधिजंघ शब्द जास्त योग्य होईल.

पान ३१.

मनुष्य स्वस्थ पडून राहिला असतां, जी हवा श्वासावरोवर फुफ्फुसांत घेतो, तिचे प्रमाण एक मानले असतां, श्रमाच्या निरनिराळ्या प्रकारांत हवा किती जास्त प्रमाणानें फुफ्फुसांत जाते, हें पुढें दिलें आहे. यावरून व्यायामापासून फुफ्फुसांस व एकंदरीत शरिरास फायदा कसा होतो, हें दिसून येईल.

वसून

१.१८

उभें असतां

१.३३

गात असतां

१.९६

ताशीं एक मैल या वेगानें चालत असतां

१.९

” २ ” ” ” ” ” ”

२.७६

” ३ ” ” ” ” ” ”

३.२२

” ४ ” ” ” ” ” ”

५

” ६ ” ” ” ” ” ”

७

घोड्यावर वसून ट्रेट

४.०५

पोहतांना

४.३३

पान ३२.

विश्रांतीचे वेळीं व श्रम करतांना होणारें आक्सिजनचें ग्रहण आणि कार्बानिक  
आसिड, वायु, पाणी, युरीया या मलांचें उत्सर्जन, यांत फरक काय पडतो, हें  
पुढील कोष्टकावरून दिसून येईल:—

|                    | ग्रहण   | उत्सर्जन |        |        |
|--------------------|---------|----------|--------|--------|
|                    | ऑक्सिजन | का. आसिड | पाणा   | युरीया |
| विश्रांतीचें वेळीं | ७०८.९   | ९११.५    | ८२८    | ३७.२   |
| श्रम करीत असतां    | ९५४.५   | १२८४.२   | २०४२.१ | ३७     |

पान ४१ ओळ १९.

‘ शिकार ’—शारीरिक संपत्तीच्या दृष्टीनें शिकारीचा व्यायाम आवश्यक  
असला, तरी तो नीतिदृष्ट्या अगदीं अयोग्य आहे हें ध्यानांत ठेविलें पाहिजे.

पान ६१, ओळ १७.

‘ शक्तीच्या निमे ’ [ अर्धशक्त्या ]—अर्धशक्तीचें लक्षण पुढील प्रमाणें सुश्रुतांत  
दिलें आहे.

हृदि स्थानस्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते ।

व्यायामं कुर्वतो जंतोस्तद्दलार्धस्य लक्षणम् ॥

पान ९०.

दुसऱ्या पन्थांत ‘ यकृत स्नायुरूपी तंतूंचें वनलेलें आहे, ’ वगैरे जें विधान केले  
आहे, तें बरोबर नाही.

पान ९६, ओळ ३.

‘ खणणें ’—खणण्याच्या व्यायामानें जो फायदा होतो, तोच लांकडें फोड-  
ण्याच्या श्रमानेंही होणारा आहे.

पान ९६, ओळ २०.

‘ पोहणें ’—पोहण्याचा व्यायाम हा उत्तम प्रकारच्या व्यायामांपैकी एक  
आहे. त्यानें छातीस व फुफ्फुसांसही बळकटी येते. मात्र हा व्यायाम सशक्तांच्याच  
उपयोगी आहे.

पान ९६, शेवटची ओळ.

रक्ताशय मजबूत करणारे जे व्यायाम दिले आहेत, ते, ज्यांना रक्ताशया. संबंधी रोग [ Heart disease ] झाला असेल, त्यांनी मुळीच करू नये. त्या व्यायामांनी त्यांचा विकार जास्त होईल एवढेच नव्हे, तर वेळेनुसार प्राणनाशही होईल.

पान ९७.

‘फुफ्फुसांचा विकास करण्यास’ प्राणायाम हा उपाय सांगितला आहे, त्याप्रमाणे गायन हा उपायही सांगितला पाहिजे. गायनाचा अभ्यास अनेक दृष्टींनी उपयुक्त आहे. त्यापासून चित्त उल्लसित राहतें व मनोवृत्ति सुसंस्कृत होतात, हा फायदा आहेच; पण त्या योगानें फुफ्फुसांस बळकटां येते, हा आरोग्यदृष्ट्या विशेष महत्त्वाचा फायदा आहे. फुफ्फुसें विकृत होऊन पुढें क्षय होईल, असे वाटल्यावरून एका रोग्यास गाण्याचा अभ्यास करण्याविषयीं वैद्यानें सांगितल्याचें व या उपायापासून त्या रोग्यास फायदा झाल्याचें उदाहरण आमचे पाहण्यांत आहे. ह्या दृष्टीनें पाहतां सकाळीं भूपाळ्या व धर्मविषयक गीतें म्हणण्याची आपल्यामध्ये जी चाल आहे ती फार चांगली आहे, असें दिसून येईल. ह्यास्तव ह्या चालीचा योग्य उपयोग लोकांनीं करून घ्यावा.

पान १०५, ओळ ८.

बद्धकोष्ठता उत्पन्न करणाऱ्या पदार्थांमध्ये पुढील पदार्थांचाही समावेश होतो—  
लाडू, पिठले, शिरा, शेंवग्याच्या शेंगा व मेथी, भोपळा, वगैरे भाज्या.

पान ११०.

बाजरी व ज्वारी यांचे घटकांश पुढें दिल्याप्रमाणें आहेत:—

|        | मांसोत्पादक भाग. | पिष्टमय भाग. | स्निग्ध भाग. | क्षार. |
|--------|------------------|--------------|--------------|--------|
| बाजरी  | १०               | ७२           | ३६           | २      |
| ज्वारी | ११               | ६३           | ५३           | २      |

## परिशिष्ट व.

—:~:—

अलीकडील युरोपियन तालमीचे स्वरूप कसे असते, हें समजावें व ह्या पुस्तकांत ४५-४७ पानांत व्यायामपद्धतीचा जो एक नमुना दिला आहे, त्यांची तुलना युरोपियन व्यायामपद्धतीशी करतां यावी, ह्यास्तव ह्या व पुढील परिशिष्टांत युरोपियन व्यायामपद्धतीचे दोन नमुने दिले आहेत.

### सँडोची व्यायामपद्धति.

व्यायाम करतांना त्या त्या अवयवावर मन एकाग्र करणें, हें सँडोच्या पद्धतीचें मुख्य तत्त्व आहे.

सँडोचे व्यायाम योग्य रीतीनें व्हावे, याकरितां त्यानें तीन व्यायामोपकरणें तयार केलीं आहेत. यांपैकी पहिलें उपकरण स्प्रिंगयुक्त डंबेल होय. दुसऱ्या दोन उपकरणांचें वर्णन देण्याची विशेष आवश्यकता नाहीं.

**स्प्रिंगयुक्त डंबेलस**—एका डंबेलचीं दोन उभीं छकलें करून त्यांमध्ये (तारेची गुंडाळी करून केलेल्या) स्प्रिंगज वसविलेल्या असतात. ह्या डंबेलला 'स्प्रिंग ग्रिप डंबेल' हें नांव दिलें आहे. ही डंबेल हातामध्ये धरली म्हणजे तिचीं दोन छकलें एकमेकांस चिकटण्याकरितां मूठ जोरानें दाबावी लागते. ही क्रिया करतांना मुठीवर मनाची एकाग्रता करावी लागते. या योगानें एकाग्रतेचें तत्त्व अंशतः साधतें, असें सँडोचें म्हणणें आहे.

ही एकाग्रता कृत्रिम आहे व तिचा उपयोग फक्त हातांसंबंधानेंच होतो; म्हणून या एकाग्रतेचें महत्त्व फारसें नाहीं असें दिसून येईल. तथापि ज्यांना अवयवावर मनाची एकाग्रता मुळींच करतां येत नाहीं, त्यांना ह्या साधनापासून थोडा उपयोग होईल.

### सँडोच्या व्यायामपद्धतीतील निरनिराळे व्यायाम

(पुढील व्यायामांपैकी १३ व्या व्यायामाखेरीज इतर सर्व व्यायाम हातांत डंबेलस घेऊन करावयाचे असतात.)

#### व्यायाम १ ला.

पूर्व तयारी—उभें रहावें. हात बाजूला सोडावे. दंड कुशीबरोबर घट्ट दाबून धरावे—म्हणजे पार्श्वभागास दाबून राहतील असे ठेवावे. तळहात मागील बाजूस येईल अशा रीतीनें मूठ धरावी.

उजवा हात कोंपराजवळ वांकवून मूठ दंडाजवळ येई तोंपर्यंत अग्र-हस्त वर न्यावा; नंतर अग्रहस्त खाली आणून हात ताठ करावा, व हें करीत असतां डावा हात उजव्या हाताप्रमाणें वांकवावा. असें आळीपाळीनें करावें. हात वांकवितांना स्नायूस रग लागेपर्यंत स्नायु ताणून धरावे.

**स्नायू**—(या व्यायामांत ज्या स्नायूंना व्यायम घडतो, त्यांची नांवे.) द्विपद व त्रिपद.

**व्यायाम २ रा.**

हाताची मूठ पुढील बाजूस वळवून व्यायाम १ प्रमाणें कृति करावी.

**व्यायाम ३ रा.**

पूर्व तयारी— हात दोन्ही बाजूस ताठ पसरून धरावे. मान मागे टाकावी. तळहात वरच्या बाजूस येईल अशा रीतीनें मूठ धरावी व मान डाव्या आंगाकडे वळवावी.

उजवा हात कोंपराजवळ वांकवून मूठ खांद्याजवळ येईपर्यंत अग्रहस्त वांकवावा व हें करीत असतां मान उजवीकडे वळवावी. नंतर डावा हात वांकवून उजवा हात, हातास रग लागेपर्यंत, ताठ करावा. याप्रमाणें आळी-पाळीनें दोन्ही हातांनीं करावें. जो हात वांकवेल, त्या हाताकडे मान येईल अशा रीतीनें या व्यायामांत मान फिरवावी लागते.

**स्नायु**—द्विपद, त्रिपद, अधिस्कंध व मानेचे स्नायु.

**व्यायाम ४ था.**

पूर्व तयारी— ( वरील प्रमाणें )

हात आळीपाळीनें न वांकवितां दोन्ही हात एकदम वांकवावे व एकदम ताठ करावे. हात वांकवितांना डोकें पुढें न्यावें व ताठ करतांना मागे न्यावें. दोन्ही हात ताठ पसरतांना खांदे वर उचलावे.

**स्नायु**—( ३ ) प्रमाणेंच.

**व्यायाम ५ वा.**

पूर्व तयारी—उभे राहून हात पुढील बाजूस ताठ पसरावे. मुठी उभ्या धराव्या.

हात त्याच आडव्या पातळीत, सावकाश नेववतील तितके मागे न्यावें व सावकाश पुढें आणावे. हात मागे नेतांना श्वास सावकाश पण जोरानें घ्यावा. हात मागे गेल्यावर श्वास थोडा वेळ दाबून धरावा व पुढें आणतांना तो हळू हळू पण फुफ्फुसें पूर्णपणें रिकामी होईपर्यंत सोडावा.

**स्नायु**—अधिस्कंध, उरोज, चतुरंग, आणि वज्री.

**व्यायाम ६ वा.**

पूर्व तयारी—उभे राहून हात कोपराजवळ वांकवून मुठी खांद्याजवळ आणाव्या. कोपरापार्श्वभागाचे जरा पुढें व अग्रहस्त ताठ उभे राहतील अशा रीतीने हात धरावे व मान मागे टाकावी.

उजव्या हाताची मूठ नेववेल तितकी जोरानें वर नेऊन हात वर ताठ करावा व हें करित असतां मान उजव्या हाताकडे वळवावी. असेंच डाव्या हातानें करावें, व डावा हात वर नेत असतां उजवा हात खाली आणावा. याप्रमाणें आळीपाळीनें करावें.

**स्नायु**—अधिस्कंध, वज्री, त्रिपद, विशाल व मानेचे स्नायु.

**व्यायाम ७ वा.**

पूर्व तयारी—( २ ) प्रमाणें उभें रहावें.

उजवा हात पुढील बाजूस ताठ होईपर्यंत, तो पुढील बाजूनें वर्तुलाकार फिरवावा. तो खाली आणीत असतां उजवा हात वर न्यावा. हें करित असतां डंबेल्स मांडीला लागू नयेत. याप्रमाणें आळीपाळीनें करावें. ही क्रिया करित असतां शरीर ताठ ठेवावें, व हाताच्या हालचाली-बरोबर शरिरास झोके खाऊं देऊं नये.

( खांद्याइतक्या उंच पण हाताचे टप्याचे पलीकडे असलेल्या फळीवर आपणांस मुठीतील पदार्थ, हात न वांकवितां, ठेवावयाचा आहे असें समजून नशी क्रिया आपण करूं, तशी क्रिया या कसरतीमध्ये करावयाची असते. )

**स्नायु**—अधिस्कंध, करपत्र, व उरोजाचा वरचा भाग.

**व्यायाम ८ वा.**

पूर्व तयारी—हात दोन्ही बाजूस ताठ पसरावे व मुठी उभ्या धराव्या.

मनगटांतील स्नायु चांगले कुसकरले जाताील अशा रीतीनें मनगट मागें पुढें वांकवावें. त्याचप्रमाणें मनगटाजवळ मूठ वाटोळी भराभर फिरवावी.

**स्नायु**—मनगट वांकविणारे व ताठ करणारे स्नायु; तसेंच अपतानक व उत्तानक.

**व्यायाम ९ वा.**

पूर्व तयारी—( ८ ) प्रमाणें उभें राहून डंबेल्सचे दांड्यावर तर्जनी पसरून सुठीमध्ये डंबेल्सचे एक शेवट धरावें.

मूठ मनगटाचे सांध्यावर कोणत्या तरी एका दिशेनें चक्राकार फिरवून डंबेल्स फिरवाव्या.

**स्नायु**—( ८ ) मधील सर्व.

**व्यायाम १० वा.**

सर्व क्रिया ( ९ ) प्रमाणेंच; फक्त डंबेल्स पूर्वीच्या उलट दिशेनें फिरवाव्या.

**व्यायाम ११ वा.**

पूर्व तयारी— उजवा आंगठा उजवीकडे व डावा आंगठा पुढें राहिल ( म्हणजे डावा पाय सरळ व उजवा पाय डाव्या पायाशीं काटकोन करून राहिल ) असें उभें राहावें. अग्रहस्त आडवे होतील अशा रीतीनें हात कोपराजवळ वांकवावा. कोपरें पार्श्वभागास लागून धरावीं.

उजवें पाऊल उचलून व उजवा पाय गुडघ्यांत वांकवून समोरचे बाजूस दोन हात अंतरावर पाऊल ठेवावें. त्याचवेळीं छाती पुढें फेंकांवी व डावा हात पुढें सरसावून तो ताठ पसरावा. हें करतांना डावा पाय ताठ ठेवावा. हात ताठ पसरण्याची क्रिया पाऊल भुईवर पडण्याचे थोडी अगोदर व्हावी. नंतर उजवा पाय चटदिशीं मागें आणून पूर्व स्थितीप्रत यावें.

**स्नायु**—करपत्र, उरोज, पुढील अधिस्कंध, विशाल व चतुष्पद.

**व्यायाम १२ वा.**

( पूर्वीप्रमाणेंच पण बाजू बदलून डावा पाय व उजवा हात यानें वरील क्रिया करावी. )

**व्यायाम १३ वा.**

पूर्व तयारी—तळहात खांद्याजवळ भुईवर टेकून व कोंपरें वर करून भुईवर पालथें निजावें.

पाठ आंतील बाजूस वांकवून तळहातावर जोर देऊन छाती व सर्व अंग सावकाश वर उचलावें. हात ताठ होईपर्यंत अंग उचलल्यावर फिरून सावकाश अंग खाली नेत नेत पूर्व स्थितीप्रत यावें. हें करीत असतां पाय, गुडघे व एकंदर शरीर ताठ ठेवावें, व पायाचे आंगठे व तळहात यांशिवाय शरिराच्या कोणत्याही भागाचा जमिनीस स्पर्श होऊं देऊं नये.

**व्यायाम १४ वा.**

पूर्व तयारी—तळहात डोक्याखाली ठेऊन अथवा सर्व हात ताठ मार्गे पसरून पाठीवर उताणें निजावें.

भाळीपाळीनें डावा व उजवा पाय सावकाश वर उचलावा. हें करीत असतां गुडघे ताठ ठेवावे व व्यायाम संपेपर्यंत टांचा भुईस टेकवूं नयेत.

**स्नायु**—पोटाच्या खालच्या भागांतील व कमरेंतील.

**व्यायाम १५ वा.**

पूर्व तयारी—हात ताठ पसरून पाठीवर निजावें.

धड सावकाश उचलावें व हातांतील डंबेल्स पायाचे बोटांचे पुढें जाईतोंपर्यंत, कमरेंत शरीर वांकवावें फिरून धड मार्गे नेऊन पूर्वाप्रमाणें सावकाश निजावें. हें करीत असतां शरिरास झटका देऊं नये.

**स्नायु**—पोटाच्या वरच्या भागांतील.

**व्यायाम १६ वा.**

( १४ प्रमाणेंच, परंतु दोन्ही पाय एकदम वर करावे. )

**व्यायाम १७ वा.**

पूर्व तयारी—टांचा एकीस एक लावून परंतु आंगठे तिरके बाहेरचे बाजूस वळलेले ठेवून उभें रहावें. हात खाली सोडावे. नंतर टांचा वर उचलून चव-ज्यावर उभें राहावें.

धड ताठ व गुडघे दूर ठेवून सावकाश खाली बसावें—नितंबभाग खाली न्यावा. टांचा भुईस लागू देऊं नयेत. खाली जावेल तेथपर्यंत गेल्यावर फिरून सावकाश वर उठावें. ही सर्व क्रिया करतांना टांचा भुईस लागतां उपयोगी नाही.

**स्नायु**—चतुष्पद, पिंडक, व सुतल.

**व्यायाम १८ वा.**

पूर्व तयारी—दोन पायांमध्ये एक फूट अंतर ठेऊन हात खाली सोडून उभे रहावे.

कमर व गुडघे वांकवून सावकाश खाली बसावें. नंतर जणू काय खाली बसावयाचें आहे, असें समजून हळूच कमर खाली आणावी. नितंबभाग पायास टेकल्यावर थांबून सावकाश उठावें. हें करीत असतां केव्हांही टांचा जमिनीवरून उचलूं नयेत

**स्नायु**—चतुष्पद, द्विपद, व पाऊल ताठ करणारे स्नायु.

**व्यायामाचें प्रमाण व तें वाढविण्याची इयत्ता.**

**पंधरा ते सतरा वर्षांच्या मुलांकरितां व्यायामाचें प्रमाण.**

( डंबेल्स ३ पाउंडांच्या असाव्या. )

| व्यायामाचा नंबर. | हातांची संख्या. | वाढविण्याचें प्रमाण. |
|------------------|-----------------|----------------------|
| १                | ३०              | दोन दिवसांनीं एक.    |
| २                | १५              | तीन दिवसांनीं एक.    |
| ३                | १०              | ” ” ”                |
| ४                | ८               | ” ” ”                |
| ५                | ५               | ” ” ”                |
| ६                | १२              | ” ” ”                |
| ७                | ८               | ” ” ”                |
| ८, ९, १० नकोत.   |                 |                      |
| ११               | ५               | दोन दिवसांनीं एक.    |

| व्यायामाचा नंबर. | हातांची संख्या. | वाढविण्याचें प्रमाण. |
|------------------|-----------------|----------------------|
| १२               | ५               | ” ” ”                |
| १३               | २               | आठवड्यांतून एक.      |
| १४               | १५              | दोन दिवसांनीं एक.    |
| १५               | ३               | तीन दिवसांनीं एक.    |
| १६               | ३               | दोन आठवड्यांनीं एक.  |
| १७               | २५              | तीन दिवसांनीं एक.    |
| १८               | २५              | ” ” ”                |

पहिल्या कसरतीचे हात ६० पर्यंत वाढवावे व इतर हात त्या प्रमाणांत वाढवावे. नंतर ५ पाउंडांच्या डंबेल्स घेऊन या कोष्टकांत सांगितल्याप्रमाणें फिरून पहिल्यापासून आरंभ करावा.

### १७ वर्षांचे वरील लोकांकरितां व्यायामाचें प्रमाण.

( ४ पाउंडाच्या डंबेल्स घ्याव्या. )

[ पहिल्या कसरतीचे हात ८० पर्यंत वाढविल्यानंतर सहा महिनेपर्यंत कांहीं फेरफार करूं नये. नंतर ५ पाउंडांची डंबेल घेऊन फिरून पहिल्या कसरतीस आरंभ करावा व पूर्वीप्रमाणें हात वाढवावे. याप्रमाणें सहा महिने व्यायाम केल्यानंतर डंबेलचें वजन एका पाउंडानें वाढवावें. क्रमाक्रमानें १० पाउंडांपर्यंत डंबेल्सचें वजन वाढविल्यावर पुढें वजन वाढवूं नये. ]

| व्यायामाचा नंबर. | हातांची संख्या. | वाढविण्याचें प्रमाण. |
|------------------|-----------------|----------------------|
| १                | ५०              | रोज ५                |
| २                | २५              | ” २                  |
| ३                | १०              | ” १                  |
| ४                | १०              | ” ३                  |
| ५                | ५               | दोन दिवसांनीं एक     |
| ६                | १५              | ” ” ”                |
| ७                | १०              | ” ” ”                |

८, ९, १० थकवा येईतोपर्यंत.

| व्यायामाचा नंबर. | हातांची संख्या. | वाढविण्याचें प्रमाण. |
|------------------|-----------------|----------------------|
| ११               | १०              | दोन दिवसांनीं एक     |
| १२               | १०              | ” ” ”                |
| १३               | ३               | तीन दिवसांनीं ”      |
| १४               | २५              | रोज १                |
| १५               | ३               | दोन दिवसांनीं १      |

## सँडोच्या व्यायामपद्धतीतील गुणदोष.

**गुण**---( १ ) बहुतेक सर्व स्नायूंना व्यायाम मिळतो. ( २ ) व्यायाम क्रमानें वाढवितां येतो. ( ३ ) निरनिराळ्या स्नायूंकरितां निरनिराळे व्यायाम असल्यामुळें आपल्या शरिराच्या जरूरीप्रमाणें व्यायामांत फरक करितां येतो.

**दोष**---तालमीतील इतर व्यायामांत जे दोष सामान्यतः आढळून येतात, ते ह्या पद्धतीतही आहेत; ते येणेंप्रमाणें:—

( १ ) ती कंटाळवाणी वाटते.

( २ ) तिजमधील श्रम व्यवहारांतील श्रमास सोडून असल्यामुळें खरी शक्ति वाढविण्यास त्यांचा व्हावा तितका उपयोग होत नाही.

( ३ ) व्यायाम सावकाश करावयाचे असल्यामुळें त्यांपासून चपळाई किंवा तडफ येत नाही.

( ४ ) शरिराच्या वरच्या भागाच्या मानानें खालच्या भागास ( पायांस, मुख्यतः तंगड्यांस ) व्यायाम होत नाही.

ह्यांशिवाय पुढील दोषही तिजमध्ये आढळून येतो.

( ५ ) तिला जीं उपकरणें ( ग्रिप डंबेल वगैरे ) लागतात, त्यांना किंमत बरीच पडत असल्यामुळें तिचा गरीब विद्यार्थ्यांस व्हावा, तितका उपयोग होत नाही.

## परिशिष्ट क.

—:—

### मूलरची व्यायामपद्धति.

जे. पी. मूलर म्हणून एक डॅनिश गृहस्थ आहे, त्याने जी व्यायामपद्धति मुरू केली आहे, तीतील व्यायाम पुढे दिल्याप्रमाणे आहेत:—

प्रारंभी चांगला आळस घावा; म्हणजे दोन्ही हात वर करून व बोटांत बोटें उलटीं अडकवून सर्व अंग चांगलें ताणावें. या ऐवजीं पुढील कृति केली तरी चालण्यासारखें आहे. ( १ ) भिंतीकडे पाठ करून भिंतीपासून एक हातावर उभें रहावें. हात दोन्ही बाजूस ताठ पसरावे. नंतर शरीर पाठींत वांकवून डोकें व हात भिंतीस टेकेंतोपर्यंत शरिराची कमान करावी. अथवा ( २ ) अंथरुणावर उताणें निजून डोक्यावर भार देऊन शरिराची कमान करावी. ( आळस देण्याच्या या दुसऱ्या प्रकाराचा उपयोग विशेष सशक्त लोकांनाच करावा. )

### व्यायाम १ ला.

पावलांमध्ये एक हात अंतर ठेऊन हात वर पसरावे व तळहात वरच्या बाजूस होईल, अशा रीतीने हाताचीं बोटें एकांत एक अडकवावीं. वाहु कानांस चिकटून असावे.

घाण्याच्या लाटेप्रमाणे धड कमरेभोंवतीं ५ फेऱ्या होईतोपर्यंत फिरवावें. पुढील बाजूने फिरतांना कणा ताठ ठेवावा. असेंच उलट दिशेने ५ वेळां फिरावें. धड पुढील बाजूने फिरतांना श्वास सोडावा व मागील बाजूने फिरत असतां श्वास घ्यावा.

या व्यायामाने घेरी येईल तर तो प्रथम करूं नये. कमरेवर हात ठेऊन वरील व्यायाम केल्याने तो सोपा जाईल.

### व्यायाम २ रा.

पूर्व तयारी—लहानशा स्टुलावर किंवा कोणत्याही उंच पदार्थावर एक पाय ठेऊन उभें रहावें व दुसरा पाय अधांतरीं लोंबत धरावा.

अधांतरीं असलेला पाय मागें व पुढें नेववेल तितका जोरानें व झटक्याने न्यावा. हें करीत असतां, पाऊल वांकवून, तें पायाच्या सरळ रेषेत येईल असे धरावें. असेंच दुसऱ्या पायानें करावें. हा व्यायाम प्रत्येक पायानें १६ वेळां करावा.

### व्यायाम ३ रा.

( सँडोच्या १५ व्या व्यायामाप्रमाणेंच, परंतु विशेष सशक्त लोकांनीं जमिनीस पाठ टेकून देतां हा व्यायाम करावा. वर उठतांना हात डोक्याचे पुढें घेऊं देऊं नयेत. पडतांना श्वास घ्यावा व उठतांना श्वास सोडावा. हा व्यायाम १२ वेळां करावा. )

### व्यायाम ४ था.

पूर्व तयारी—पावलांमध्ये दीड हात अंतर ठेऊन उभें रहावें. नंतर तोंड व धड उजवीकडे वळवावें; हात ताठ पसरून धरावे व हाताच्या मुठी मिटाव्या.

डाव्या हाताची मूठ भुईस लागे तोंपर्यंत डाव्या बाजूकडे कमरेंत वांकावें. नंतर ताठ उभें होऊन डाव्या बाजूकडे धड वळवून पूर्वीप्रमाणें उजव्या हाताची मूठ भुईस टेके तोंपर्यंत उजव्या बाजूकडे कमरेंत वांकावें. याप्रमाणें प्रत्येक बाजूस पांच पांच वेळां वांकावें.

या व्यायामानें पोटाच्या बाजूचे स्नायु व यकृत यांस वळकटी येते. विशेष अशक्त लोकांनीं हा व्यायाम करूं नये.

### व्यायाम ५ वा.

पूर्व तयारी—एक पाय दुसऱ्या पायाच्या पुढें १॥-२ हात अंतरावर ठेवावा. दोन्ही हात बाजूस ताठ पसरून धरावे.

संपूर्ण हात चक्राकार फिरवून, हातानें १६ वर्तुलें काढावीं. पैकीं शेवटचीं तीन वर्तुलें शक्य तेवढीं मोठीं घ्यावीं. हा व्यायाम करतांना शरीर

थोडेंसें पुढें वांकविल्यानें श्रम जास्त होतात. नंतर पुढला पाय मागें व मागला पाय पुढें ठेऊन व तळहाताची दिशा बदलून पूर्वीच्या उलट दिशेनें हात फिरवावे.

### व्यायाम ६ वा.

पूर्व तयारी—जमिनीवर उताणें निजावें व पाय ताठ करून ते जमिनी-पासून थोडे वर उचलावे.

५ व्या व्यायामांतील हाताप्रमाणें पाय ८ वेळां वाटोळे फिरवावे. प्रत्येक वर्तुलाचा व्यास सुमारे १॥ हाताचा असावा. शेवटर्चा दोन वर्तुलें शक्य तेवढीं मोठीं घ्यावीं. असेच उलट दिशेनें पाय ८ वेळां फिरवावे. पाय जवळ जवळ आले म्हणजे श्वास घ्यावा व दूर जातांना श्वास सोडावा. अशक्त लोकांनीं दोन्ही पाय एकदम न फिरवितां एक एक आळीपाळीनें फिरवावा.

### व्यायाम ७ वा.

पूर्व तयारी—पावलांमध्ये सुमारे दीड हात अंतर ठेवून उभें रहावें. हात ताठ पसरवे व हाताच्या मुठी मिटाव्या. धड पुढील बाजूस थोडे वांकवावें.

धड हळूच डावीकडे फिरवीत फिरवीत पूर्वी जिकडे तोंड होतें, तिकडे पाठ होईपर्यंत धड वाटोळें फिरवावें. उजव्या बाजूकडे पाठ होतांना पाठीस आणवेल तितका वांक आणावा. अशा स्थितींत क्षणभर राहिल्यावर धड पुढील बाजूस वांकवावें, व फिरून तें उजवीकडे फिरवून पाठीला मागील बाजूनें वांक आणावा. नंतर फिरून पुढील बाजूस ओणवें होऊन डावीकडे वळावें.

### व्यायाम ८ वा.

( सॅडोच्या १२ व्या व्यायामाप्रमाणेंच. ) हा व्यायाम १२ वेळां करावा. अशक्त लोकांनीं जमिनीस गुडघे टेकूं द्यावें व सहज उठतां येईल इतकीच छाती खाली आणावी. खाली येतांना श्वास घ्यावा व वर जातांना श्वास सोडावा.

व्यायाम झाल्यावर, आरंभीं सांगितलेल्या प्रकारानें आळस देऊन व्यायाम पुरा करावा.

**या पद्धतीचे गुणदोषः—गुण—**( १ ) ( २ ) ( ३ ) सँडोच्या पद्धतीप्रमाणेंच. ( ४ ) स्नानानंतर आंग जोरानें पुसणें व व्यायाम करतांना योग्य प्रकारें श्वासोच्छ्वास घेणें यास महत्त्व दिलें आहे. **दोष—**( १ ) ( २ ) सँडोप्रमाणेंच. ( ३ ) ही व्यायामपद्धति सम जण्यास जास्त अवघड आहे.

**प्राणायामाविषयीं मूलरचें मत—**व्यायामावांचून केवळ प्राणायाम निरुपयोगी आहे. प्राणायाम फाजील केल्यानें अपाय होण्याचाही संभव आहे. सशक्तींनीं व्यायाम करीत असतां श्वास घेतांना, टांचा उचलाव्या, डोकें मागें न्यावें, कोंपरें मागें न्यावीं व खांदेही उचलावे.

**स्नान—**मूलरच्या मताप्रमाणें व्यायामानंतर सशक्तींनीं शीतस्नान व इतरांनीं सोसेल त्या प्रकारचें स्नान करणें अवश्य आहे. स्नानानंतर खरखरीत रुमालानें आंग चांगलें पुसावें. आंग पुसतांनाही शरिराचे निरनिराळे भाग वांकवून त्यांना व्यायाम कसा देतां येईल, हें मूलरनें दाखविलें आहे.

समाप्त.

|   |        |
|---|--------|
| सचित्र वेणीसंहार ( बर्बेकृत. )  | ०-१२-० |
| दुर्गाताईची ओवाळणी ( एक लहानशी गोष्ट )  | ०-१-०  |
| हामीरमहाकाव्य ( संस्कृत कविता न्यायचंद्रसूरिकृत )   | १-८-०  |
| आरेबियन नाइट्स् ( कै. चिपळूणकर व रा० दामलेकृत )   |        |
| आरबी भाषेतील सुरस व चमत्कारिक गोष्टीचे ९ भाग<br>एकत्र करून जाड टाईपांत छापिलेला मूळचा सचित्र समग्र<br>ग्रंथ ( टपाल खर्च १२ आणे. ) | ६-०-०  |
| सचित्र आरेबियन नाइट्स् ( नवीन आवृत्ति )   | ३-०-०  |
| परशरामकवीच्या लावण्या ( शं. तु. शालिग्रामकृत )  | १-०-०  |
| रामजोशीकृत लावण्या  | ०-८-०  |
| अनंत फंदीकृत  | ०-६-०  |
| होनाजी बाळकृत   | ०-८-०  |
| नारायणराव आणि गोदावरी ( सचित्र अत्युत्तम कादंबरी )  | १-०-०  |
| चित्रमय जपान ( सचित्र पुस्तक )  | १-०-०  |
| चित्रमय बर्मा   | ०-८-०  |
| राजा रविवर्मा यांची चित्रे वर्णनयुक्त पुस्तक.   | १-०-०  |

चरित्रे.

|  |       |
|--|-------|
| उत्तररामचरित्र ( मराठीत )  | ०-८-० |
| जॉन ब्राइट चरित्र  | ०-१-० |
| कै. विष्णुशास्त्री चिपळूणकर यांचे चरित्र.<br>( सद्वर्तनप्रवर्तकमंडळीने बक्षीस दिलेले. साधे वाईडिंग ) | १-४-० |
| डा. आनंदीबाई जोशी यांचे चरित्र   | १-८-० |
| गलिंहर याचा वृत्तांत   | ०-९-० |

९.

चित्रशाळा स्टीम प्रेस, पुणे.

|  |       |
|--|-------|
| माणिकप्रभूचरित्र ( हुमणावादकर )                              | १—०—० |
| <b>धार्मिक पुस्तकें.</b>                                     |       |
| धर्मपर व नीतिपर व्याख्यानें ( वा. आ. मोडककृत )               | १—८—० |
| मानवधर्मसार ( संक्षिप्त मनुस्मृति, रा. व. चि. वि. वैद्यकृत ) | ०—२—० |
| निळोवाचा गाथा ( विष्णुवुवा जोगकृत )                          | १—०—० |
| दाशरथीरामचरित्र  | ०—४—० |
| गीतगोविंद ट. ख. १ आणा  | ०—७—० |
| गोविंद तारकगीत ट. ख. १ आणा                                   | ०—६—० |
| शिवलीलामृत रेशमी बाइंडिंग                                    | ०—७—० |
| ” ( साधे ) ट. ख. २ आणे                                       | ०—४—० |
| गणेशपुराण ट. ख. २ आणे  | १—०—० |
| मदालसाचंपु ( त्रिविक्रमकविकृत )                              | १—०—० |

## १०० प्रतीस एक रुपया.

प्रतीस पाव आणा ! प्रतीस पाव आणा !!

## देशभक्तांचे फोटो.

१ दादाभाई नवरोजी. २ सर फेरोजशा मेथा. ३ डी. ई. वाच्छा.  
४ लो. वा. गं. टिळक. ५ ना. गो. कृ. गोखले. ६ दे. लाला  
लजपतराय. ७ बाबू सुरेंद्रनाथ वानर्जी. ८ दे. गणेश श्रीकृष्ण  
स्वापडे. ९ बाबू विपिनचंद्र पाल. १० कै. ज. म. गो. रानडे.

११ पंडित मदनमोहन मालवीय. १२ सर रोमेशचंद्र दत्त.  
 १३ दे. जी. सुब्रह्मण्यम् आयर. १४ दे. शिवराम महादेव परांजपे.  
 १५ कै. विष्णु कृष्ण चिपळूणकर. १६ ना. आनंदा चार्ल्स. १७ रँगलर  
 परांजपे. १८ डा. मो. गो. देशमुख. १९ राजा सर टी. माधवराव.  
 २० सर डा. भालचंद्र. २१ दि. आर. रघुनाथराव. २२ दे. जस-  
 वंतराव व आठवले. २३ कै. रणछोडलाल छोटालाल. २४ कै. प्रेमचंद्र  
 रायचंद्र, मुंबई. २५ कै. गणेश वामुदेव जोशी. २६ कै. गोपाळ  
 गणेश आगरकर. २७ कै. वामन शिवराम आपटे. २८ दे. नरसिंह  
 चिंतामण केळकर. २९ दे. बाबासाहेब खरे, नासिक. ३० ना.  
 सय्यद हुसेन विलीग्रामी. ३१ लाला दिनानाथ, एडिटर हिंदुस्थान.  
 ३२ कै. वासुदेव बाळकृष्ण केळकर. ३३ कै. प्रो. जिनसीवाले.  
 ३४ श्रीस्वामी रामतीर्थ. ३५ ना. विठ्ठलदास ठाकरसी. ३६ शेट  
 मनमोहनदास रामजी. ३७ दे. विष्णूबोवा जोग. ३८ कै. विश्व-  
 नाथ नारायण मंडलिक. ३९ कालीमाताजी, कलकत्ता.  
 ४० श्रीस्वामी विवेकानंद. ४१ श्रीहंसस्वरूप योगीराज महात्मा.  
 ४२ श्रीगुरु माणिकप्रभु. ४३ श्रीगुरुमार्तंड माणिकप्रभु. ४४ अश्विनी  
 कुमार दत्त, वारिसाल. ४५ जे. चौधरी, कलकत्ता. ४६ रामभुज  
 दत्त, लाहोर. ४७ प्रफुल्लचंद्र चकी. ४८ दे. चिदंबरम् पिले.  
 ४९ डॉ. भांडारकर, पुणे. ५० मि. हैदर रेझा, दिल्ली. ५१ दे. लाला  
 मुरलीधर, अंबाला. ५२ लियाकतहुसेन, कलकत्ता. ५३ ना. एन्.  
 सुवराव, मद्रास. ५४ दे. फडके, एडिटर विहारी. ५५ कै. जव्हेरी-  
 लाल उमियाशंकर याज्ञीक. ५६ कै. म. ब. नामजोशी. ५७ कै.  
 ईश्वरचंद्र विद्यासागर. ५८ ना. पी. माधवराव, म्हैसूरचे दिवाण.  
 ५९ दे. अजितसिंह, लाहोर. ६० दे. किसनसिंह, लाहोर. ६१ दे.  
 अरविंद घोस. ६२ विरेंद्रकुमार घोस. ६३ डॉ. राशबिहारी घोस.

६४ दे. पी. कीरय्या फ़ीडर, बेझवाडा. ६५ कै. ब्रम्हवांधव उपा-  
ध्याय. ६६ कै. पंडित अयोध्यानाथ. ६७ कै. ज. का. त्रि.  
तेलंग. ६८ दे. टी. पी. पित्रे. धारवाड. ६९ दे. नारायणराव  
बर्वे, धारवाड. ७० खुदीराम बोस. ७१ बाबू मनमोहन घोस.  
७२ कै. वासुदेव बळवंत फडके. ७३ कै. शंकर मोरो रानडे.  
७४ प्रो. विजापूरकर. ७५ दे. कृ. प्र. खाडिलकर. ७६ दे. वक्षी  
जैसीराम. ७७ काटकरबोवा, पंढरपुर. ७८ दे. लिमये व सायन्ना  
नरसू. स्वराज्यपत्राचे कर्ते, सोलापूर. ७९ वं. गांधी, ट्रान्सवाल.  
८० कै. प्रतापचंद्र मुजुमदार. ८१ नरेंद्र गोस्वामी. ८२ सत्येंद्रनाथ  
बोस. ८३ कै. आनंदमोहन बोस. ८४ कै. कालीचरण ब्रानर्जी.  
८५ डॉ जे. बोस, कलकत्ता. ८६ श्रीशेषाचल महाराज, अगडी.  
८७ श्रीरामकृष्ण परमहंस, कलकत्ता. ८८ श्रीब्रह्मानंदस्वामी  
गंगनाथ, बडोदें. ८९ शेट लक्ष्मणदासजी मथुरावाले. ९० श्रीस्वामी  
देवकीनंदन. ९१ श्रीस्वामी दयानंद सरस्वती. ९२ महासाधु  
तुकाराम. ९३ श्रीरामदासस्वामी. ९४ श्रीमच्छंकराचार्य.  
९५ श्रीस्वामी अभेदानंद. ९६ रणछोडलालजी महाराज, पोरबंदर.

## राजेरजवाडे व इतर सरदार.

१ बादशहा सातवे एडवर्ड. २ राणी अलेक्झांड्रा. ३ अफगाणि-  
स्थानचे अमीर. ४ जपानचे राजा व राणी. ५ श्रीछत्रपती शिवाजी.  
६ सयाजीराव गायकवाड, बडोदें. ७ महाराणी, बडोदें. ८ नेपा-  
ळचे महाराज. ९ मिरजचे अधिपति. १० शिंदेसरकार,  
ग्वालोर. ११ म्हैसूरचे महाराज. १२ राजा रविवर्मा. १३ होळकर

सरकार, इंदोर. १४ प्रिन्स रणजितसिंहजी. १५ रामदास  
आणि शिवाजी. १६ नानासाहेब पेशवे. १८५७. १७ हैदराबादचे  
निजाम १८ तात्या टोपी. १९ दुर्भंगाचे महाराज. २० सवाई  
माधवराव पेशवे. २१ अहिल्याबाई होळकर २२ झांशीची राणी,  
लक्ष्मीबाई. २३ मैमनसिंगचे महाराज, २४ म्हैसूरचे माजी  
महाराज. २५ कै. श्री. अप्पासाहेब जमखिंडीकर. २६ त्रावण-  
कोरचे महाराज.

## देवादिकांचीं चित्रें.

१ श्री विठ्ठल, पंढरपूर. २ रखुमाबाई, पंढरपूर. ३ श्री शिव-  
पंचायतन. ४ श्री गणपति. ५ रामवनवास. ६ उषास्वप्न. ७ श्री  
दत्तात्रय. ८ श्री दत्तात्रय. (निराळा) ९ श्री दत्तात्रय. (निराळा)  
१० श्री तुकाराम. ११ श्री रामपंचायतन. १२ श्री हनुमान.

## राजा रविवर्मा यांचीं चित्रें.

### भाग १.

१ श्री विष्णु गरुडवाहन. २ श्रीलक्ष्मी. ३ मोहिनी. ४ गंगा-  
वतरण. ५ सरस्वती. ६ अहिल्या. ७ हरिश्चंद्र-तारामती.  
८ अजविलाप. ९ दमयंती. ( १ ) १० दमयंती ( २ ) ११ नल-  
दमयंती. १२ दमयंती. ( ३ ) १२ ( अ ) शिवधनुर्भंग.  
१३ सीतास्वयंस्वर. १३ ( अ ) जटायूपक्षच्छेद. १४ सीता.  
(अशोकवनांत बसलेली) १४ ( अ ) राजा रुक्मांगद आपल्या पुत्राचा  
शिरच्छेद करीत आहे. १५ विश्वामित्र-मेनिका. १६ शकुंतला व  
तिच्या सख्या. १७ शकुंतला-पत्रलेखन. १८ भरत. १९ गंगा.  
२० शंतनुमत्स्यगंधा. २१ कंसमाया. २२ कृष्णदृष्ट. २३ गोदो-

INDIAN CLUBS  
OF  
VARIOUS SIZES  
WEIGHTS MADE  
TO ORDER



लाकडी जोड्या



CHITRA SHALA STEAM PRESS PUNJ.

निरनिराळ्या आकारा-  
च्या वजनाच्या जोड्या  
आम्ही तयार करवून देऊ.

पुढील प्रमाणें लाकडी  
जोड्या विक्रीस तयार  
आहेत.

कि. रु. आ. पै.

२ फूट — १-८-०

११११ फूट — १-४-०

१११ फूट — १-०-०

१ फूट — ०-१२-०

पुढील वजनाच डंबेल्स-  
जोड विक्रीस तयार  
आहेत.

कि. रु. आ. पै.

२११ पौंड जोड ०--६-३

३ पौंड ,, ०--७-६

४ पौंड ,, ०-१०-०

५ पौंड ,, ०-१२-६

६ पौंड ,, ०-१५-०

८ पौंड ,, १-४-०

१० पौंड ,, १-९-०

१२ पौंड ,, १-१४-०

IRON DUMBELLS

दर पाँडस

४२११ आणे.



लोखंडी डंबेल्स

चित्रशाला स्टीम प्रेस, पुणे सिटी,